श्री विद्या खड्ग माला साधना

तथा
श्रीयन्त्र की सविधि
अर्चना एवं स्तुति

श्री विद्या राज राजेश्वरी ललिताम्बा ट्रस्ट के संस्थापक
कान्यकुब्ज पीठाधीश्वर श्री १००८ पूज्य श्री शीतलानन्द नाथ सरस्वती जी महाराज

पीताम्बरा श्रीमाता बगलामुखी विग्रहम्

श्री माता बगलामुखी यन्त्रम्

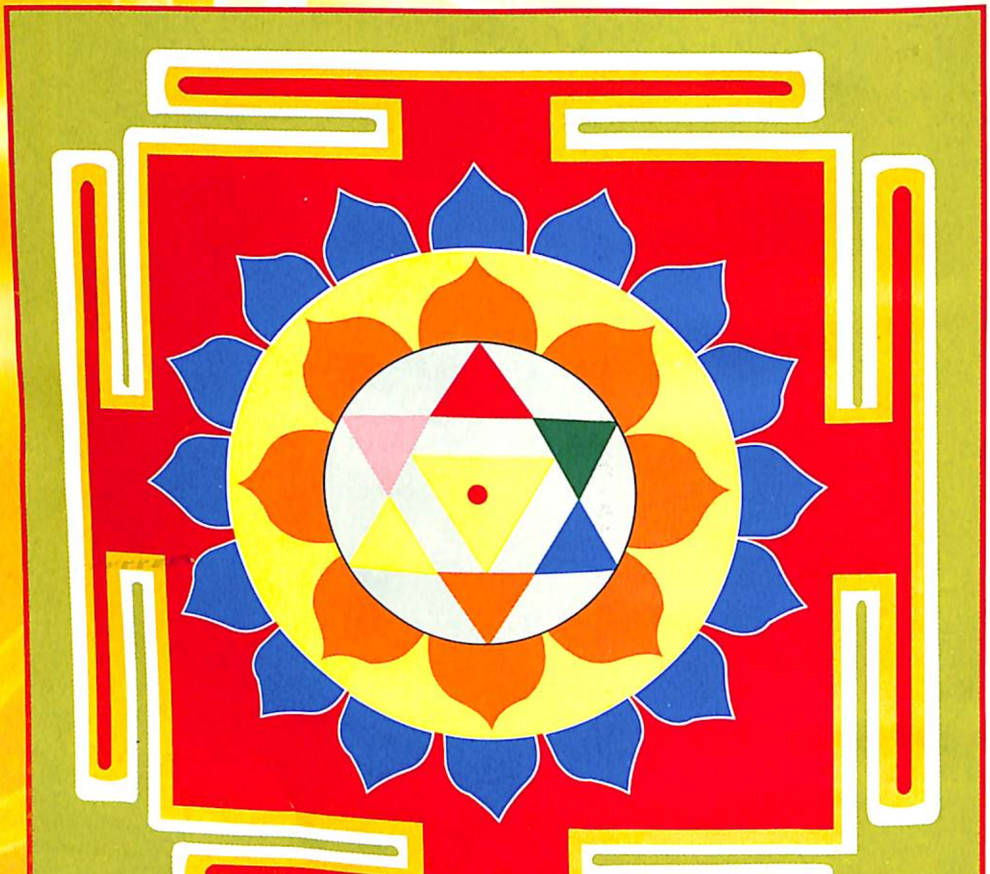

श्री विद्या खड्ग माला
(श्री यंत्र पूजा पद्धति)

SV-38

स्वयंवरा कला पूजन यंत्र

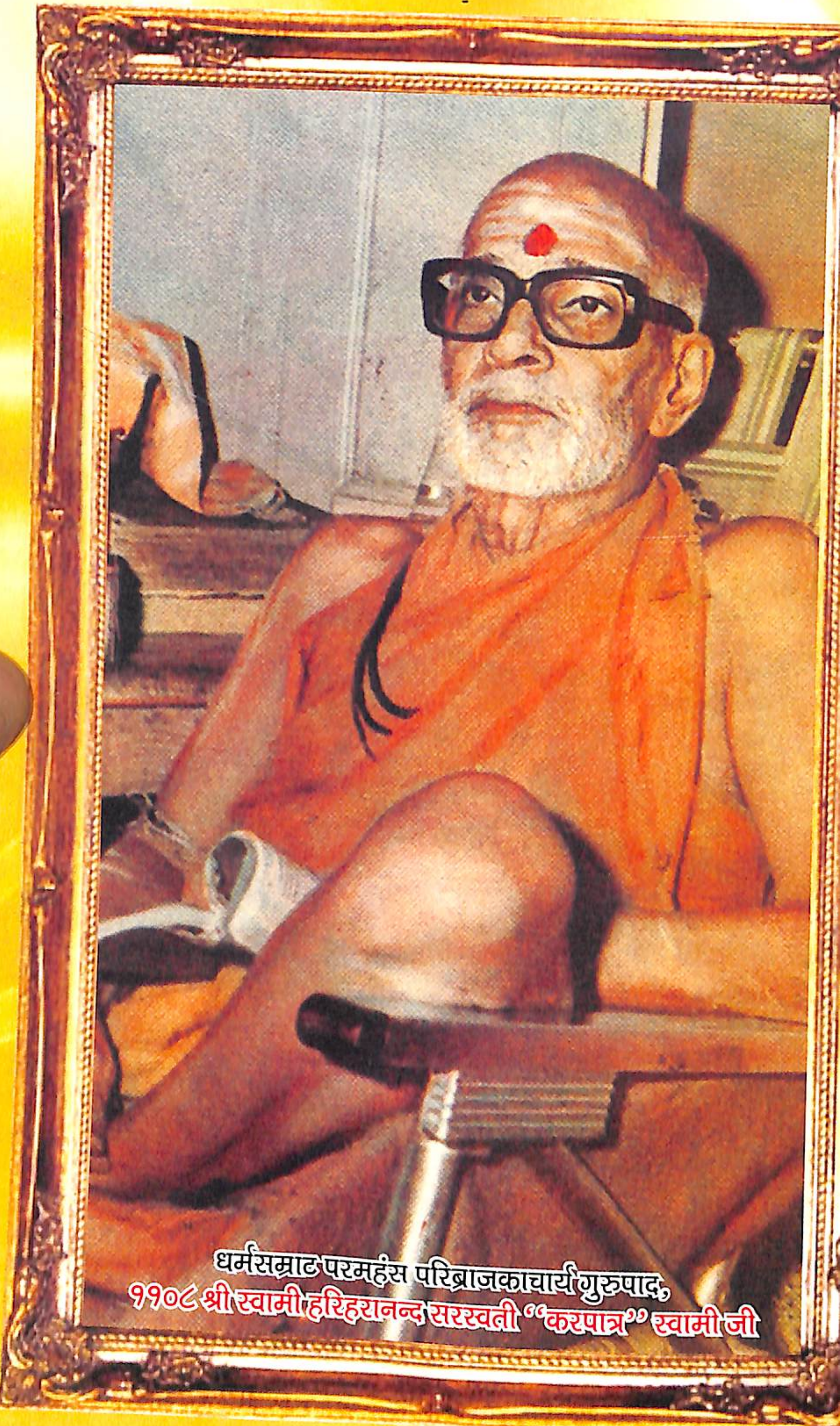

धर्मसम्राट परमहंस परिव्राजकाचार्य गुरुपाद,
११०८ श्री स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती ''करपात्र'' स्वामी जी

SV-38

११।३।२००७

कान्यकुब्जपीठ श्रीविद्या शक्तियोगाश्रम
बासन्ती नवरात्र पुष्पाञ्जलि :
चैत्र शुक्ल सम्वत् 2063
तृतीय पुष्प

श्री विद्या खड्ग माला साधना

तथा

श्री यन्त्र की सविधि अर्चना एवं स्तुति :

सम्पादक

पं. जयदेव शर्मा

सङ्कलन

आचार्य्य हरी ओम शुक्ल शास्त्री

श्री विद्या राजराजेश्वरी ललिताम्बा ट्रस्ट

नानाराव घाट (मैस्कर घाट) छावनी, कानपुर–208 004

द्वारा प्रकाशित

श्री विद्या खड्ग माला साधना
श्री यन्त्र अर्चना एवं स्तुति
अर्चना का तृतीय पुष्प

प्रथम संस्करण
ई. सन् 2006

© स्वत्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रकाशक :-

श्री विद्या राजराजेश्वरी ललिताम्बा ट्रस्ट
नानाराव घाट (मैस्कर घाट), छावनी
कानपुर – 208 004

मुद्रक :-

बाला जी आफसेट प्रिन्टर्स
43/127, राजेन्द्र मोहाल, चौक,
कानपुर – 208 001 (उ.प्र.)।

सौजन्य से :-

मे. श्री लक्ष्मी कॉटसिन लिमिटेड
19 एक्स–1, कृष्णापुरम्
कानपुर – 208 007 (उ.प्र.)

विषयानुक्रम

		पृष्ठ संख्या
1.	प्राक्कथन	5
2.	सुख और दुःख का कारण	10
3.	श्री विद्या खड्ग माला साधना (तृतीय पुष्प) विग्रह एवं श्री चक्र की पूजा विधि	18
4.	श्री विद्या खड्गमाला एवम भू-शुद्धि पात्रासादनम्, फलश्रुति	29
5.	शक्ति सम्बुद्ध्यन्त माला	31
6.	शक्ति नमोऽन्त माला	40
7.	शक्ति स्वाहान्त माला	49
8.	शक्ति तर्पणान्त माला	58
9.	शक्ति जयान्त माला	66
10.	शिव सम्बुद्ध्यन्त माला	74
11.	शिव नमोऽन्त माला	82
12.	शिव स्वाहान्त माला	90
13.	शिव तर्पणान्त माला	98
14.	शिव जयान्त माला	106
15.	मिथुन सम्बुद्ध्यन्त माला	114
16.	मिथुन नमोऽन्त माला	123
17.	मिथुन स्वाहान्त माला	132
18.	मिथुन तर्पणान्त माला	142
19.	मिथुन जयान्त माला	152
20.	देव्यर्थर्वशीर्षम्	163
21.	देव्यपराध क्षमापन स्तोत्रम्	165
22.	आनन्दलहरी	166
23.	त्रिपुर सुन्दरी स्तोत्रम्	168
24.	शीतलाष्टकम्	168
25.	वाराहीनिग्रहाष्टकम्	169
26.	त्रिपुर सुन्दरी षोडशोपचार पूजा स्तोत्रम्	170
27.	श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यपराध क्षमापन स्तवः	171

	पृष्ठ संख्या
28. दुर्गाऽपदुद्धार स्तवराजः	173
29. वाग्वादिनी स्तोत्रम्	174
30. मन्त्रमातृका पुष्पमाला स्तवः	175
31. त्रिपुर सुन्दरी मानसिकोपचार पूजा स्तोत्रम्	176
32. देवी भुजङ्गप्रयात स्तोत्रम्	177
33. ताराष्टकम्	179
34. श्यामला दण्डकम्	180
35. चन्द्रेशेखराष्टक स्तोत्रम्	184
36. कनकधारा स्तोत्रम्	186
37. बन्दीमोचन स्तोत्रम्	188
38. अन्नपूर्णास्तोत्रम्	188
39. अन्नपूर्णा कवचम् (सविधि)	190
40. ज्ञान कलिका स्त्रोतम्	193
41. भवान्यष्टकम्	196
42. नाभि विद्या	198
43. स्वयम्वरा पूजन-जप-विधि	207
44. मन्त्र पुष्पाञ्जलिः	213
45. बगलामुखी पूजा पद्धतिः	215
46. बगला स्तुतिः	223
47. बगलामुखीजप-विधि	226
48. श्री बाला त्रिपुर सुन्दरी मानस पूजा स्तोत्रम्	227
49. श्री बाला त्रिपुर सुन्दरी कवचम्	238
50. श्री त्रिपुर सुन्दरी कवचम्	241
51. श्री बाला स्त्रोतम्	244
52. श्री त्रिपुर सुन्दरी वेदसार स्तवः	246
53. श्री त्रिपुरा मेधा सूक्तम्	249
54. श्री परदेवी सूक्तम्	250
55. श्री सूक्तम्	254

शुद्धिपत्र

पृष्ठ संख्या	क्रम संख्या	गलत शब्द	शुद्ध शब्द
33		शिवदूति	शिवा दूति
35		मेधाकर्षिणि	गन्धा कर्षिणी
37		सर्व मृत्यु प्रशपिनी	सर्व मृत्यु प्रशमिनि
42	14	शिव दूत्यै	शिवा दूत्यै
51		शिव दूत्यै	शिवा दूत्यै
60		शिव दूत्यै	शिवा दूत्यै
61	53	ब्राहमी तर्प	ब्राहर्मी तर्प
68	14	शिव दूति	शिवा दूति
69	59	चामण्डे	चामुण्डे
73	159	स्वमिनि	स्वामिनि
76	25	मित्रीश	मित्रेश
84	25	मित्रीश	मित्रेश
92	25	मित्रीश	मित्रेश
100	25	मित्रीश	मित्रेश
108	25	मित्रीश	मित्रेश
125		शिव दूत्यै	शिवा दूत्यै
4	30	मन्त्र मातृका पुष्पमाला स्तवः	षोडशी स्तोत्र
4	31	त्रिपुरसुन्दरी मानसिकोपचार पूजा स्तोत्रम्	श्री ज्ञान कालीकाष्टक
4.	32ए		भवानी स्तुति

–177

प्राक्कथन

यों तो नवरात्र मे प्रत्येक अवसर पर प्रतिवर्ष मा भगवती दुर्गा के चरित्र और उनकी लीलाओं का वर्णन तथा अतीत में जिन महापुरुषों, सत्पुरुषों और भक्तों ने मा त्रिपुरसुन्दरी का पूजन–अर्चन करके पुण्य–लाभ अथवा कामना सिद्धि की उनके आख्यान भी पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों और प्रवचनों के द्वारा सर्व साधारण को प्राप्त होते रहे हैं और उनके माहात्म्य का ज्ञान किया जाता रहा है, किन्तु नवरात्रि क्या है, उसका स्वरूप क्या है और उसकी सपर्य्या–पद्वति का क्रम क्या है यह संस्कृत के ग्रन्थों में अवश्य उपलब्ध है, लेकिन वह सामान्य उपासकों की समझ से परे है। इसलिए सावधान किया गया है कि जो लोग विधि–विधान से भगवती की पूजा–अर्चना करना चाहते हैं उनके लिए आवश्यक है कि वे किसी योग्य एवं अधिकारी गुरु के मार्ग–दर्शन पर ही करें।

नवरात्रि शक्तितत्व की द्योतक है। 'चिद्धर्म त्वञ्चितोनास्ति चितिञ्चन्नैव भिद्यते' यह बोध ही अत्यन्त अबाध्य होने से परमार्थिक सत्य है और वही सब कुछ है। आत्मा की यह सृष्टि काल–कर्म, संस्कार और अबुद्धिपूर्वक ही होती है। चित चित (चेतना) को भेद नहीं सकता। यह जगत बीजभूत प्रकृति से विशिष्ट शक्ति का स्वरूप अव्याकृत या मायाशबल कहलाता है। वही समस्त कारणों का कारण है और समस्त तत्त्वों का आदिभूत तत्त्व है। वही मायाशक्तियुक्त सच्चिदानन्द कहलाता है और वही तत्त्व ह्रींकार एवं ओंकार का वाच्य तत्त्व है।

सर्वकर्म घनीभूत इच्छा ज्ञान क्रियाश्रयंः।
ह्रींकार मन्त्रवाच्यं तद्यादितत्त्वं तदुच्यते।।

उसी मायाशक्ति विशिष्ट अव्याकृत शब्द तन्मात्र स्वरूप से सूक्ष्म आकाश उत्पन्न होता है, उसी से स्पर्शात्मक वायु और वायु से रूपतन्मात्रा तेज, तेज से जल, जल से गन्धात्मिका पृथ्वी उत्पन्न होती

है। इन्हीं पञ्चभूतों के सात्त्विक अंश से अन्तःकरण और पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ, राजस अंश से प्राण और पञ्च कर्मेन्द्रियाँ उत्पन्न होती है। एवं विधि उत्पन्न यह लिंग शरीर सूक्ष्म शरीर कहलाता है। पञ्चभूतों के तामस अंश से विराट् की उत्पत्ति होती है। पञ्चभूतों के ही सात्विक अंश से अन्तःकरण उत्पन्न होता है। यह चार प्रकार का होता है–– संकल्प–विकल्प के समय मन, निश्चय करते समय बुद्धि, स्मरण करते समय चित तथा अहंकार करते समय अहंकार कहलाता है। सत्त्व प्रधान प्रकृति माया होती है तथा अविद्यारूप में मलिन सत्त्व प्रधान होती है।

अविद्या में प्रतिबिम्बित अधिष्ठान जीव है तथा विद्या में प्रतिबिम्बित अधिष्ठान ईश्वर कहलाता है। समष्टि देहों के अभिमानी अव्याकृत विराट् हैं। यही विराट् विश्व का निर्माता होता है। पराशक्ति महामाया भगवती ने कहा है– "मेरी माया शक्ति से ही चराचर विश्व बनता है।............"

व्यवहार दशायेयं विद्यामायेतिविश्रुता।
तत्त्व दृष्ट्यातुनास्त्येव तत्त्वमेवास्तिकेवलम्।।

स्वप्रकाशरूपा पराशक्ति त्रिपुराम्बा ही निखिल प्रपञ्च का निर्माण करके उसमें वह स्वयं प्रवेश करतीं हैं। यही विद्याशक्ति विशिष्ट ईश्वरी शक्ति अन्तःकरणमय होकर जीवरूप में प्रकट होती है। सभी को सत्तास्फूर्ति प्रदान करने वाली चिति से रहित एकमात्र शून्य रहता है। यह महाशक्ति महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती तीनों रूपों में व्यक्त होकर संसार का सृजन, पालन तथा संहार करती है। सृष्टि के आदि काल से ही उनकी आराधना इच्छा, ज्ञान, क्रिया के रूप में शास्त्रों में निर्दिष्ट की गयी है। नव दुर्गा की नवरात्रमयी उपासना अनन्तकाल से लोक विश्रुत एवं व्यवस्थित है।

देश के विभिन्न भागों में भगवती के 51 पीठों में कानपुर के छावनी क्षेत्रान्तर्गत नानाराव घाट (मैस्करघाट) स्थित कान्य कुब्ज पीठ इन

पीठों में से एक है, शास्त्रसम्मत साधनाओं की विशिष्ट पीठ को ब्रह्मलीन श्री 1108 स्वामी हरिहरानन्द जी सरस्वती (करपात्री जी महाराज) ने एक सिद्ध पीठ की संज्ञा दी और तत्कालीन चारों जगद्गुरु शंकराचार्यों ने यहाँ उपासना–अर्चना की है। पीठाचार्य श्री 1108 स्वामी शीतलानन्द नाथ जी ने इस स्थान पर 60 वर्ष पूर्व श्री विद्यापीठ शक्तियोगाश्रम की स्थापना की तथा श्री विद्या राजराजेश्वरी ललिताम्बा ट्रस्ट बनाया। तभी से यहाँ वर्ष की उभय नवरात्रियों में लक्षार्चन एवं कोट्यर्चन और श्री विद्या सम्बन्धी अनुष्ठान होते आ रहे हैं, जिनमें देश के ख्यातिलब्ध आचार्य, सन्त, मनीषी एवं साधकगण यहाँ आकर भगवती ललिताम्बा के श्री चरणों में अपने श्रद्धा–सुमन अर्पित करते रहे हैं।

श्री विद्या राजराजेश्वरी ललिताम्बा ट्रस्ट ने पूर्व में श्री चक्र एवं श्री विद्या की उपासना सम्बन्धी प्रकाशन भी किये हैं, इनमें 'श्री विद्या सपर्य्या पद्धति' प्रमुख है। श्री कुल की उपासना पद्धति अनेक प्रकाशकों द्वारा मुद्रित उपलब्ध है, किन्तु जिज्ञासु साधकों के लिये वेदादि शास्त्रसम्मत् एक सूक्ष्म पद्धति की आवश्यकता का अनुभव करते हुए प्रकाशित पद्धतियों, तन्त्रराज श्री विद्यार्णव, वामकेश्वर कुलार्णव, श्री विद्या आह्निक आदि ग्रन्थों का मनन करने तथा परशुराम कल्पसूत्रानुसार चेन्नई मैलापुर की श्री विद्या–विमर्शिनी, गुहानन्द मण्डली द्वारा प्रकाशित पद्धति एवं चंडी कार्यालय प्रयाग द्वारा प्रकाशित पद्धति की विशेष सहायता लेने के उपरान्त यह 'श्री विद्या श्री खड्गमाला सपर्य्या पद्धति प्रणीत की गयी है, ताकि श्री विद्या के उपासक एवं जिज्ञासु उपासना के इस सूक्ष्म–क्रम से लाभान्वित हो सकें।

श्री विद्या राजराजेश्वरी ललिताम्बा ट्रस्ट की प्रकाशन माला में श्री विद्यापीठ के 60 वें वर्ष के 120वें नवरात्र उपासना सत्र के अवसर पर यह खड्गमाला पुष्पाञ्जलि एक विशेष उद्देश्य से प्रकाशित की जा रही

है। इसमें श्री विद्या खड्गमाला मन्त्रों से श्री चक्र की सम्यक् अर्चना की विधि हिन्दी भाषा में निर्देशित की गयी है, फिर भी नये उपासकों को इसके अनुसार अर्चना के लिये किसी योग्य एवं अधिकारी गुरु से दिशा–निर्देश प्राप्त करना श्रेयस्कर है। मन्त्रों एवं श्लोकों का उच्चारण भी शुद्ध एवं सही होना चाहिए, जो कुछ दिनों के अभ्यास से सुकर है।

पुष्पाञ्जलि में प्रकाशित खड्गमाला पन्द्रह तिथियों के अनुसार–प्रतिपदा से पञ्चमी तक शक्तिमाला, षष्ठी से दशमी तक शिवमाला, तथा एकादशी से पूर्णिमा तक मिथुन माला उपास्य है। सभी साधकों के लिये खड्गमाला पारायण मात्र से श्रीचक्र की अर्चना सम्पन्न हो जाती है। अस्तु यहाँ उसका सांकेतिक विशेष क्रम दिया गया है। श्री विद्या राजराजेश्वरी ललिताम्बा ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित 'श्री विद्या सपर्य्या पद्धति' पुस्तक से सहायता ली जा सकती है। प्रतिदिन इस सूक्ष्म पद्धति से अभ्यास करते हुए श्री माता की कृपा के लिये प्रयत्न करना चाहिए।

एक महत्वपूर्ण बात और ध्यान देने योग्य है। श्रीविद्या की सम्यक् अर्चना में स्तोत्र पाठों का अधिक महत्व है।

देवी अथर्वशीर्ष

यह स्तवन अध्यात्म ज्ञान का प्रकाशक है। अर्द्धरात्रि में इसका पाठ करने से वाणी की सिद्धि प्राप्त होती है। मां की मूर्ति के पास जप करने से इष्ट देवता का सान्निध्य प्राप्त होता है। इसी प्रकार मङ्गलवार अश्विनी नक्षत्र में पाठ करने से अपमृत्यु नहीं होती।

देव्यापराध क्षमापन

पूजन के अन्त में इसका पाठ अवश्य करना चाहिए। वैसे यह स्तोत्र भी अपने आपमें स्वतन्त्र सिद्ध प्रयोग है।

आनन्द लहरी

इस स्तोत्र का पाठ पूजन के मध्य में धूप, दीप, नैवेद्य एवं पुष्पाञ्जलि देने के बाद करना चाहिए।

श्री त्रिपुर सुन्दरी चक्रराज स्तोत्र तथा त्रिपुर सुन्दरी अपराध क्षमापन इन दोनों स्तोत्रों का पाठ अधिक महत्व का है। इनके अतिरिक्त त्रिपुर सुन्दरी वेदसार स्तोत्र का पाठ भी पूजन के मध्य में करना श्रेयस्कर है।

पूजावसान के पश्चात् यदि साधक भक्ति भाव से भरपूर अपनी कामनानुसार महाशक्ति के अन्य सिद्धिदाता स्तोत्रों का पाठ करना चाहें तो उनकी सुविधा के लिये इस पुस्तक में अनेक साधना स्तोत्र संकलित किये गये हैं।

अन्त में हम आभारी हैं डॉ. एम. पी. अग्रवाल के जिनके सहयोग से इस खड्ग माला का प्रकाशन सम्भव हो सका।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निवोधत

इतिशम्

—पं. जयदेव शर्मा
सम्पादक

<u>ज्ञातव्य</u>

श्री विद्या खड्ग माला स्तवन श्री यन्त्र की पूजा का एक सरल क्रम है। इसमें प्रत्येक नाम के उच्चारण में मात्र चावल, पुष्प आदि से पूजन करने का सूक्ष्म विधान सर्व साधरण उपासकों के लिए उपायेगी होगा।

श्रीशः पातु

सुख और दुःख का कारण

पूज्य पाद गुरूदेव श्री 1108 आचार्य स्वामी शीतलानन्द नाथ (शास्त्री जी) ने एक दिन अपने शिष्यों एवं आश्रम में आगन्तुक धर्मानुरागी जिज्ञासु जनों द्वारा सुख और दुःख के कारणों पर प्रकाश डालने का आग्रह किये जाने पर कहाः-

प्रत्येक प्राणी के जीवन में सुख और दुःख की स्थितियाँ आती रहती हैं। लोग सुख भोग भी करते हैं और दुःखों को भी झेलते हैं। सुख की स्थिति में कोई यह जानने की आवश्यकता नहीं समझता कि इस सुखद स्थिति का कारण क्या है। अधिक से अधिक वह उसे अपने कर्मों या उद्योगों का सुफल मान लेता है, किन्तु जब दुःखों की भयावह स्थिति उत्पन्न हो जाती है, तो कुछ लोग अपने भाग्य को, कुछ ईश्वरेच्छा को कुछ अपने कर्मों को कुछ पूर्व जन्म में किये गये पापों को दोष देने लगते हैं। लेकिन सुख और दुःख के इस चलने वाले चक्र का रहस्य कुछ और ही है।

अब देखिये कि आज के वैज्ञानिक युग में प्रायः लोग मानव जीवन सम्बन्धी मान्यताओं को विज्ञान की कसौटी पर ही परखना चाहते हैं, किन्तु हमारे ऋषियों-मुनियों और आचार्यों ने युग-युग में जीव और जीवन सम्बन्धी जो निष्कर्ष निकाले और जिन शाश्वत स्थितियों को मानव के हितार्थ लोक कल्याणार्थ उजागर किया उन पर उन्हें सहज विश्वास नहीं होता। ब्रह्माण्ड के जिन रहस्यों को भारतीय दार्शनिकों, मनीषियों और विचारकों ने उद्घाटित किया, वहाँ तक अभी विज्ञान पहुँचा ही नहीं। एक समय था जब पाश्चात्य समाज जीव के आवागमन को नहीं मानता था। अनेक वैज्ञानिक अनुसन्धानों और गवेषणाओं के परिणामस्वरूप अब वह भी आवागमन (Transitoriness) के सिद्धान्त को स्वीकारने लगा है। इतना ही नहीं पृथ्वी तत्व के छूट जाने के बाद आकाश तत्व (ईश्वर) तक जीव और जीवन की जो स्थिति भारतीय परा-विज्ञान ने उद्घाटित किया है, उस पर अब आधुनिक

विज्ञानवेत्ता अनुसन्धान करने में लगे हुए हैं। तो जब हम आवागमन के सिद्धान्त को मानते हैं, तब यह भी मानना पड़ेगा कि जन्म-जन्मान्तरों से प्राक्तन (पूर्वजन्म) कर्मवश जीवन अनेकानेक योनियों में भटकता रहता है। यह समस्त संसार कर्म और पूर्व संस्कारों से युक्त रहता है। स्वयं भगवान ही कालरूप से कर्मों के अनुसार उनका विधान करते रहते हैं। इन गुणों के प्रवाह में पड़कर यह जीव प्रकृति एवं नियतिरूपी उभय तटबन्धों के मध्य प्राक्तन कर्मवशात् प्रवाहित रहता है। कभी उसकी अधोगति होती है और कभी पूर्व शुभ-कर्मों के अनुसार उच्चगति को प्राप्त होता है। संसार के सभी मोटे-पतले पदार्थ प्रकृति और पुरुष के संयोग से ही बनते हैं। जो आदि अन्त में हैं, वही मध्य में भी होते है। यही एक मात्र सत्य है।

इसे यूँ समझिये। जैसे सोने और चाँदी के बर्तन विकार मात्र हैं, सत्य केवल स्वर्ण और चाँदी है। मिट्टी के सभी प्रकार के भाण्ड विकार मात्र हैं, सत्य केवल मिट्टी है। यह जो प्रपञ्च दिखायी पड़ता है संसार में उसका कारण एकमात्र प्रकृति है, परमात्मा इसका अधिष्ठान है और सुख-दुःख रूपी फलों को पृथक् करने वाला केवल काल होता है। व्यवहार काल की त्रिविध गति ब्रह्म स्वरूप है।

श्री गुरू जी ने आगे कहाः-

इस सन्दर्भ में एक बात विशेषरूप से समझनी है कि जब तक परमात्मा की ईक्षण-शक्ति अपना काम करती रहती है, तब तक जीवों के कर्म-भोग के लिये कारण कार्यरूप से अथवा पिता-पुत्र रूप से सृष्टि का यह चक्र निरन्तर चलता ही रहता है। यह विराट् ही विविध लोकों की सृष्टि स्थिति और संहार की लीलाभूमि है। जब भगवान काल रूप से इसमें व्याप्त होकर प्रलय का संकल्प करते हैं, तब यह चौदह भुवन विनाश के रूप हो जाते हैं और शनैः शनैः इनमें एकलीन होने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। हमारे शास्त्रों का यह एक स्वयं सिद्ध निष्कर्ष है।

परस्पर लीन होने की यह प्रक्रिया यों है। प्राणियों के शरीर अन्न में, अन्न बीज में, बीज भूमि में और भूमि गन्ध तन्मात्रा

शब्द (रूप, रस, गन्ध, स्पर्श) में लीन हो जाते हैं, पुनः गन्ध जल में, जल अपने गुण रस में, रस तेज में और तेज रूप में लीन हो जाता है। रूप वायु में, वायु स्पर्श में, स्पर्श आकाश में तथा आकाश शब्द तन्मात्रा में लीन हो जाता है। आज के विज्ञान का आधार यही शब्द (Sound) है। इन्द्रियाँ अपने कारण देवताओं में लीन होती हैं। अन्ततोगत्वा यह सभी इन्द्रियाँ राजस अहङ्कार में समा जाती हैं।

यह क्रम यहीं समाप्त नहीं होता। राजस अहङ्कार अपने संचालक सात्विक अहङ्कार रूप मन में तथा तन्मात्रा पञ्चभूतों के कारण शब्द तामस अहङ्कार में और समस्त जगत को मोहित करने में समर्थ त्रिविध अहङ्कार महत्तत्व में लीन होते हैं। ज्ञान शक्ति तथा क्रियाशक्ति प्रधान महत्तत्व अपने कारण गुणों में लीन हो जाता है। पुनः गुण अव्यक्त प्रकृति में और प्रकृति अपने प्रेरक अविनाशी काल में लीन हो जाता है। फिर चक्र चला। काल मायामय जीव में और जीव अजन्मा आत्मा में लीन हो जाता है, जो उपाधि रहित अपने स्वरूप में ही रहता है। वही जगत की सृष्टि और लय का एकमात्र अधिष्ठान है, उसको 'अबोध' भी कहते हैं। जो व्यक्ति इस प्रकार विवेक दृष्टि से देखता है, उसके चित्त में भव का यह प्रपञ्च भ्रम हो ही नहीं सकता और यदि कदाचित् भ्रम की स्फूर्ति हो भी जाय तो वह अधिक काल तक हृदय में उतर नही पाती। परमात्मा कार्य-कारण दोनों का साक्षी है। यही सांख्य शास्त्र है। अब यहाँ पर हम मनुष्य के गुणों और तज्जन्य स्वभाव की थोड़ी चर्चा करके मुख्य प्रश्न पर आयेंगे, इससे बात ठीक प्रकार से समझ में आयेगी।

प्राणियों में अलग-अलग गुणों का प्रकाश होता है, उन्हीं के कारण प्राणियों के स्वभाव भी भिन्न-भिन्न होते हैं। यथा-**सत्त्वगुण वृत्तिः**- शम-दम- तितिक्षा-विवेक-तप-सत्य-दया-स्मृति-संतोष-त्याग, विषयों के प्रति अनिच्छा, अरुचि, श्रद्धा, लज्जा, आत्मरति, दान, विनय और सरलता ये सत्त्व-गुण की वृत्तियाँ हैं।

रजोगुण-वृत्ति :- इच्छा, प्रयत्न, अभिमान, तृष्णा, असंतोष,

अकड़, देवी-देवताओं से धनादि की याचना, भेद-बुद्धि, विषय-भोग, युद्धोन्माद, स्वयश के प्रति अनुराग, हास्य, पराक्रम, हठपूर्वक उद्योग, दुराग्रह आदि ये रजोगुण की वृत्तियाँ हैं।

तमोगुण वृत्तिः- असहिष्णुता, मिथ्या भाषण, क्रोध, लोभ, हिंसा, याचना, पाखण्ड, श्रम, कलह, शोक, मोह, विषाद, दैन्य, निन्दा, आशा, भय और अकर्मण्यता से तमोगुणी वृत्तियाँ हैं।

इस प्रकार क्रमशः सत्त्वगुण, रजोगुण, और तमोगुण की अधिकांश वृत्तियों का विवेचन किया गया है। मैं और मेरा वाली बुद्धि तीनों गुणों का सम्मिश्रण है। इन्द्रियाँ और प्राणों के कारण जिसके मन में शब्दादि विषय वृत्तियों का उदय होता है, वे सभी सात्त्विक, राजस और तामस कहे जाते हैं। जब मनुष्य धर्म-अर्थ और काम में लगा रहता है, तब उसमें सतोगुण से श्रद्धा, रजोगुण से रति और तमोगुण से धन की प्राप्ति होती है।(1) मानसिक शान्ति से सतोगुण, (2) कामना से रजोगुण, और (3) क्रोध-हिंसा से तमोगुण की पहचान होती है।

जन्म-जन्मान्तरों के कृत-कर्मो का प्रभाव इस शरीर को सुख-दुःख देने वाला होता है। दान, धर्म-पालन यम-नियम, सत्कर्म, वेदाध्ययन, ब्रह्मचर्यादि व्रत ये सब अन्ततोगत्वा मन को एकाग्रता प्रदान करते हैं। और इस प्रकार मन का समाहित होना ही परमयोग कहलाता है।

सभी इन्द्रियाँ मन के बश में हैं, मन स्वयं किसी इन्द्रिय के बश में नहीं है। जो व्यक्ति मन को अपने बश में कर लेता है, वही इन्द्रियजित होता है। सामान्यतया मनुष्य अन्ध-बुद्धि का हो गया है। तभी वह इस मनः कल्पित शरीर को ही मैं और मेरा मान बैठा है। परिणामतः वे इस अनन्त अज्ञान के अन्धकार में ही भटकते रहते हैं। यदि मान लें कि मनुष्य ही सुख-दुःख का कारण है, तो उससे आत्मा का क्या सम्बन्ध? क्योंकि सुख-दुःख पहुँचाने वाला मिट्टी का शरीर है और उन्हें भोगने वाला भी वही है। कभी भोजन के समय अपने दाँतों से अपनी जीभ कट जाय और उससे पीड़ा होने लगे, तो मनुष्य किस पर क्रोध करेगा?

यदि यह मान लें कि देवता ही दुःख के कारण हैं, तो भी

उस दु:ख से आत्मा की क्या हानि? क्योंकि यदि दु:ख के कारण देवता हैं, तो इन्द्रियाभिमानी देवताओं के रूप में उसके भोक्ता भी वही हैं। जो देवता सभी शरीरों में एक है और जो देवता एक शरीर में है, वही दूसरे शरीर में भी विराजमान है। ऐसी दशा में जब शरीर के किसी अङ्ग से दूसरे अङ्ग को चोट लग जाय, तो किस पर क्रोध किया जाएगा ?

यदि ऐसा मान लें कि आत्मा ही सुख-दुख का कारण है, तो वह अपना आप ही है, कोई दूसरा नहीं, क्योंकि आत्मा से भिन्न कुछ और है ही नहीं। यदि कुछ दूसरा प्रतीत होता है, तो वह मिथ्या है, भ्रम है। इसलिए न सुख है और न दु:ख, तो फिर क्रोध कैसा? क्रोध का निमित्त ही क्या है?

यदि ग्रहों को सुख-दुख का कारण माने तो उनसे भी अजन्मा आत्मा की क्या हानि? ग्रहों का प्रभाव भी जन्म-मृत्युशील शरीर पर ही होता है। ग्रहों की पीड़ा तो उनका प्रभाव ग्रहण करने वाले शरीर पर ही होती है। आत्मा उन ग्रहों और शरीरों से सर्वथा परे है। तब किस पर क्रोध करें?

यदि कर्मों को ही सुख-दुख का कारण मानें, तो उनसे ही अजन्मा आत्मा का क्या प्रयोजन? क्योंकि वह तो एक पदार्थ के जड़ और चेतन होने पर ही हो सकते हैं। जो वस्तु विकारयुक्त और अपना हित-अनहित जानने वाली होती है, उसीसे कर्म हो सकते हैं। इसलिए वह विकारयुक्त होने के कारण चेतन हैं, किन्तु देह तो अचेतन है और उसमें पक्षी रूप में रहने वाला आत्मा सर्वथा निर्विकार और साक्षीमात्र है। इस प्रकार कर्मों के कारण का कोई आधार ही सिद्ध नहीं होता, फिर क्रोध किस पर करें?

यदि यह मान लें कि काल ही सुख-दुख का कारण है, तो आत्मा पर उसका क्या प्रभाव, क्योंकि काल तो आत्मा-स्वरूपी है। जैसे आग, आग को नहीं जला सकती, बर्फ-बर्फ को नहीं गला सकती वैसे ही आत्म स्वरूप काल अपनी ही आत्मा को सुख-दुख नहीं पहुँचा सकता, फिर किस पर क्रोध किया जाय?

आत्मा शीत-ताप, सुख-दुख आदि द्वन्द्वों से सर्वथा रहित है। आत्मा प्रकृति के स्वरूप धर्म, कार्य लेश-सम्बन्ध और गन्ध से

भी रहित है, उसे कहीं कभी किसी के द्वारा किसी भी प्रकार के द्वन्द्व का स्पर्श ही नहीं होता। वह तो जन्म-मृत्यु के चक्र में भटकने वाले अहङ्कार को ही होता है। इस सत्य को जो जान लेता है, वह फिर किसी भी भय के निमित्त से भयभीत नहीं होता।

श्रुतियाँ और महात्मागण मन को ही सुख-दुख का परमकारण बताते हैं, और यह मन ही है, जो इस समस्त संसार-चक्र को चला रहा है। यह मन बहुत ही बलवान है। इसी ने विषयों को, उनके कारण गुणों को और उनसे रखने वाली वृत्तियों की श्रृष्टि की है। उन वृत्तियों के अनुसार ही सात्त्विक, राजस, और तामस, अनेक प्रकार के कर्म होते हैं और कर्मों के अनुसार ही जीव की विविध गतियाँ होती हैं। मन ही समस्त चेष्टायें करता है। उसके साथ रहने पर भी आत्मा निष्क्रिय है। वह ज्ञान-शक्ति प्रधान है। मन इस जीव का सनातन सखा है। और अपने अलुप्त ज्ञान से सबकुछ देखता रहता है। मन के द्वारा ही उसकी अभिव्यक्ति होती है। जब वह मन को स्वीकार करके उसके द्वारा विषयों का भोक्ता बन बैठता है, तब कर्मों के साथ आसक्ति होने के कारण वह उनसे बँध जाता है। कर्म के द्वारा जीव संसार से बँध जाता है और ज्ञान से उसकी निवृत्ति होती है।

इस संसार में मनुष्य को कोई दूसरा सुख या दुख नहीं देता, यह तो उसका भ्रम मात्र है। यह सारा संसार और इसके भीतर मित्र-शत्रु के भेद अज्ञान-कल्पित हैं। इसलिए मनुष्य को अपनी वृत्तियों को आत्मा में तन्मय करके समस्त शक्ति लगाकर मन को बश में कर लेना चाहिए।

यह सारा जगत कर्म और उनके संस्कार से युक्त है। परमात्मा ही काल रूप से कर्मों के अनुसार उनके फल का विधान करता है। शुद्ध आत्मा का ज्ञान सात्त्विक है और उसको कर्ता-भोक्ता समझना राजस ज्ञान हैं तथा उसे शरीर समझना सर्वथा तामसिक है। इन तीनों से विलक्षण आत्म स्वरूप का वास्तविक ज्ञान निर्गुण ज्ञान है। बन में रहना सात्विक निवास है।गाँव या बस्ती में रहना राजस है तथा संसार रूपी जुआंघर में रहना तामसिक है। इन सबसे बढ़कर भगवान के मन्दिर में, सत्संग

स्थल पर तथा तीर्थ में निवास करना निर्गुण निवास है। अनासक्त भाव से कर्म करने वाला सात्त्विक है। रागान्ध होकर कर्म करने वाला राजसिक है और पूर्वापर विचार से रहित कर्म करने वाला तामसिक है। इनके अतिरिक्त जो पुरुष भगवान की शरण में रहकर बिना अहङ्कार के कर्म करता है वह निर्गुण कर्म है। आत्मज्ञान विषयक श्रद्धा सात्त्विक श्रद्धा है। कर्म विषयक श्रद्धा राजस है। जो श्रद्धा अधर्म से होती है, वह तामस है। भगवान की भक्ति में जो श्रद्धा है, वह निर्गुण श्रद्धा कही जाती है। आरोग्यदायक पवित्र और अनायास प्राप्त होने वाला भोजन सात्त्विक है। स्वाद की दृष्टि से युक्त आहार राजस है। हिंसक और दुखदायी अपवित्र आहार तामस है। अन्तरमुखता से आत्म चिन्तन से प्राप्त होने वाला सुख सात्त्विक है। बर्हिमुखता से और विषयों से प्राप्त होने वाला सुख राजस है। अज्ञान और दीनता से प्राप्त होने वाला सुख तामस है। परमात्मा से भक्ति द्वारा समर्पित सुख गुणातीत और अप्राकृत हैं।

संसार के यह पदार्थ, देशकाल समय, ज्ञान-कर्म, कर्त्ता, श्रद्धा, अवस्था देव-मनुष्य, पशु-पक्षी, शरीर और निष्ठा सभी गुणात्मक हैं। पुरुष और प्रकृति के आश्रित जितने भी भाव हैं सभी गुणमय हैं। वे चाहे नेत्रादि इन्द्रियों से अनुभव किये गये हों अथवा शास्त्रों के द्वारा अथवा लोक-लोकान्तरों के सम्बन्ध में सुने गये हों, या बुद्धि के द्वारा सोचे-विचारे गये हों। जीव की जितनी भी योनियाँ या गतियाँ प्राप्त होती हैं, वे सब उनके गुणों और कर्मों के अनुसार ही होती हैं। सबके सब गुण चित्त से ही सम्बन्ध रखते हैं। जो जीव उनपर विजय प्राप्त कर लेता है, वह भक्ति योग के द्वारा परमात्मा में ही परिनिष्ठत हो जाता है। यह मनुष्य शरीर बहुत ही दुर्लभ है। इसी शरीर से तत्त्व ज्ञान और उसमें निष्ठा रूपी विज्ञान की प्राप्ति सम्भव है। इसलिए इसको पाकर बुद्धिमान पुरुषों की शक्ति से विमुख होकर भगवान का भजन करना चाहिए। इसके बाद बड़ी सावधानी से सत्त्व गुण का सेवन करते हुए रजोगुण व तमोगुण को जीत लेवें। योग युक्ति से चित्तवृत्तियों को शान्त करके निरपेक्षता के द्वारा सत्त्वगुण पर विजय प्राप्त करें। इस प्रकार गुणों

से मुक्त होकर जीव परमात्मा में मिल जाता है। जीव लिङ्ग शरीर रूपी अपनी उपाधि जीवत्व से और अन्तःकरण में उदय होने वाली सत्त्वादि गुणों से वृत्तियों से मुक्त होकर ब्रह्म की अनुभूति से, एकत्व दर्शन से पूर्ण हो जाता है। फिर वह वाह्य या आन्तरिक किसी भी विषय के वशीभूत नहीं रहता।

नायंजनो में सुख-दुःख हेतुः।
न देवतात्मा ग्रह-कर्म-कालाः।।
मनः परम कारणमामनन्ति।
संसार चक्रं परिवर्तयेतत्।।
श्रीमद्भागवत् के एकादश स्कन्ध में वर्णित
भिक्षुगीता के आधार पर किया गया प्रवचन।

प्रस्तोता

हरिओम शुक्ल

श्री मन्महागणाधिपतये नमः

श्री विद्या-खड्ग-माला साधना

तृतीय पुष्पम्

वर्तमान समय में भारतीय-जीवन अप्रत्याशित रूप से दैविक और भौतिक तापों से त्रस्त है। इन कष्टों से मुक्ति हेतु वह देवी-देवताओं की शरण ढूँढ़ता है। अलौकिक शक्तियों के प्रति बढ़ती हुई यह आस्था हिन्दू समाज के उत्थान का शुभ लक्षण है। इस दिशा में अधिकांश लोग श्री शक्ति की उपासना की ओर उन्मुख जान पड़ते हैं। देखा और अनुभव किया जा रहा है कि आजकल श्री विद्या-श्रीचक्र की उपासना-अर्चना बहुप्रचलित हो रही है। इस प्रवृत्ति को देख-समझकर साधकों एवं उपासकों की सुविधा के लिये श्री विद्या एवं श्री चक्र की उपासना की पद्धति पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों द्वारा प्रसारित की जा रही है। स्वाभाविक है कि उपासक गण इस सद्यः और सहज उपलब्ध साहित्य को पढ़कर उपासना अर्चना में प्रवृत्त हो रहे हैं। ऐसे प्रचार से यह लाभ तो है कि अनास्था के इस दौर में आस्था पुनः संचरित हो रही है और लोगों में अपने धर्म-कर्म के प्रति आस्था एवं विश्वास की भावना दृढ़तर हो रही है, किन्तु जिस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये वह प्रचारित पद्धति से उपासना कर रहे हैं, वह अभीष्ट सिद्ध नहीं होता। हाँ, श्रद्धा का फल अवश्य मिलता है।

इस सन्दर्भ में कतिपय उपासकों एवं साधकों की जिज्ञासा शान्त करते हैं, कान्यकुब्ज पीठ श्रीविद्या शक्ति योगाश्रम, श्री विद्याराजराजेश्वरी ललिताम्बा द्रष्ट नानाराव घाट, छावनी, कानपुर के अधिष्ठाता षट्दर्शनाचार्य श्री 1108 स्वामी शीतलानन्द नाथ जी महाराज।

स्वामी जी ने कहा, "यह तो प्रसन्नता की बात है, कि श्री विद्या-श्री चक्र की उपासना-अर्चना की ओर लोगों में रुचि उत्पन्न हो रही है। इसका यथेष्ठ श्रेय उन पत्र-पत्रिकाओं और उन विद्वज्जनों को है, जिनके निबन्ध उनमें प्रकाशित हुए हैं और जिन्होंने अर्चना की विधाओं को पुस्तक का आकार दिया है।

किन्तु साथ ही यह भी कहूँगा कि इन लेखों और पुस्तकों को पढ़कर श्री विद्या अथवा श्री चक्र की उपासना करना एक विडम्बना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।''

स्वामी जी ने कहा कि जैसे हर कार्य के सम्पादन में जो सावधानियाँ आवश्यक होती है, वैसे ही किसी भी इष्ट की उपासना में हरक्षण सावधान रहना अपरिहार्य है। इसमें सन्देह नहीं कि यदि उपासना-अर्चना श्रद्धा एवं विश्वासपूर्वक सम्यक्, तथा सुचारु रूप से की जाय, तो निश्चय ही अभीष्ट की सिद्धि होती है। किन्तु इस क्रम में सर्वप्रथम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रतिबन्ध यह है कि उपासना-अर्चना किसी योग्य एवं अधिकारी गुरु के सान्निध्य और उनके दिशा-निर्देश के अनुसार ही की जानी चाहिए। प्रमाण-स्वरूप उन्होंने शास्त्र-वचन का उद्धरण दिया:-

''गुप्तये परमाविद्या गुरु परम्परया लब्धः''

(परशुराम कल्पतरु)

यह महाविद्या गुरु परम्परा से संस्कारयुक्त होने पर ही प्राप्त होती है।

''ददाति प्रति गृह्णाति नान्यथैषा प्रसिध्यति''

(दुर्गा सप्तशती)

'ददाति अर्थात गुरु के द्वारा यह महाविद्या शाम्भव रूप शक्तिरूप और मन्त्र रूप में बीज रूप से हृदय में दी जाती है। शिष्य द्वारा उसे ग्रहण करने की प्रक्रिया है। वास्तव में यह प्रारम्भिक क्रिया प्राणायाम की ही है। नासिका के बायीं ओर से स्वाँस वायु को धीरे-धीरे मूलाधार के समीप ले जाना होता है, इस भावना के साथ कि इड़ा और पिंगला (नासिका के दोनों रन्ध्र) के बीच से रीढ़ की अस्थियों में भरा हुआ जल सुषुम्ना अर्थात् ब्रह्मरन्ध्र में आ रहा है और फिर वह दाहिनी ओर परमशिव के स्थान तक बढ़ता हुआ बाहर निकल रहा है। इस प्रक्रिया को भूत शुद्धि कहते हैं।

'यं' वायु का एक बीजाक्षर है। इस बीजाक्षर को मन ही मन 16 बार उच्चरित करते हुए इड़ा मार्ग से वायु उर्ध्व की ओर खींचना चाहिए। यह प्राणायाम क्रिया का 'पूरक' है। फिर अग्नि

के बीच मन्त्र 'रं' को 64 बार मनसा उच्चारण करते हुए वायु को रोकते हैं। नासिका के दोनों रन्ध्र बन्द रहें। यह प्राणायाम क्रिया का 'कुम्भक' है। तदनन्तर नासिका के बायें रन्ध्र को मध्यमा एवं अनामिका अंगुलियों से बन्द रखते हुए दायें रन्ध्र से अँगूठा हटाकर 32 बार 'यं' का मनसा उच्चारण करते हुए धीरे-धीरे वायु निकालना चाहिये।

'पूरक' क्रिया करते हुए यह ध्यान करना चाहिए कि हमारी बायीं कुक्षि में अँगूठे भर का पाप पुरुष बैठा हुआ है। यह हत्यारा, सुवर्ण चोर तथा घोर पापी है और यह हमारे ही भीतर छुपा बैठा है। उसके एक हाथ में खड्ग और दूसरे में चर्म है। ऐसा यह पाप-पुरुष हमारे शारीरिक अथवा मानसिक रूप से कोई भी शुभ-कर्म नहीं करने दे रहा है। अतः 'कुम्भक' क्रिया करते हुए 64 बार अग्नि के बीजाक्षर 'रं' का मनसा उच्चारण करते हुए यह भावना होनी चाहिए कि हम उस पाप-पुरुष को इस अग्नि में भस्म कर रहे हैं। इसके अनन्तर वायु बीजाक्षर 'यं' का 32 बार मनसा उच्चारण करते हुए रेचक प्राणायाम में यह भावना करनी चाहिए कि जिस पाप पुरुष को भस्म किया गया है उसको इस रेचक क्रिया द्वारा बाहर कर रहे हैं। पुनः ब्रह्म रन्ध्र में चन्द्र मण्डल के भीतर अमृत-वर्षा करती हुई भवानी कामेश्वरी भगवती का चिन्तन करें उनका ध्यान करें। इस क्रिया को भूत शुद्धि कहते हैं।

सम्पादक

भू-शुद्धि

अपने मानस में भगवान कामेश्वर और भगवती कामेश्वरी का ध्यान करें और यह भावना रखें कि भगवती कामेश्वरी के चरण रक्त वर्ण हैं और भगवान कामेश्वर के चरण श्वेत वर्ण हैं। उनसे अमृत की वर्षा हो रही है और उसका क्षरण सारे शरीर में हो रहा है। अमृत का बीजाक्षर वं है। पूरक, कुम्भक और रेचक, की प्राणायाम प्रक्रिया में वं का मनसा उच्चारण करते हुए भावना करें कि सारे शरीर में अमृत का प्रवाह हो रहा है।

पृथ्वी का बीजाक्षर लं है। प्राणायाम की पूरक, कुम्भक और रेचक तीनों प्रक्रियाओं में यह भावना रखें कि उस पाप पुरुष की भस्म पिण्ड बनकर बाहर निकल रही है।

इन क्रियाओं के पश्चात् आकाश, वायु, जल, अग्नि एवं पृथ्वी नामक पञ्चतत्त्वों की उत्पत्ति की भावना मानस पटल में करते हुए अखण्ड ब्रह्म और उसके प्रेरक पुरुष का चिन्तन करें। पुरुष से आठ प्रकार की प्रकृति (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, मन, बुद्धि और अहङ्कार) का प्रादुर्भाव है। ये प्रकृतियाँ सतो, रजो और तमोगुणमयी हैं। इनका क्रम इस प्रकार है:- सर्वप्रथम महान् से त्रिगुणात्मक अहङ्कार फिर अहङ्कार से आकाश पश्चात् आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी, पृथ्वी से औषधियाँ, औषधियों से अन्न, अन्न से रेत (वीर्य) और वीर्य से पुरुष की उत्पत्ति मानी जाती है। यह अवधारणा विज्ञान-सम्मत है। इस विधि से उत्पन्न पुरुष अन्नमय तथा रसमय है।

प्राणायाम करते समय ही नहीं बल्कि सामान्य अवस्था में भी जब श्वाँस लेते हैं, तो भरते समय या भीतर जाते हुए सो की ध्वनि होती है और जब श्वाँस वायु बाहर निकलती है तो हं की ध्वनि होती है। यही सोहं कुण्डलिनी जीवरूपा परमात्मा के सकाश से अमृतमयी है, जो मूलाधार में स्थित है। मानस में इसका ध्यान करते हुए दिव्य-देह की भावना करनी चाहिए। इस प्रकार लं वं रं यं हं इन पाँच भूतों का हंसः सोहं के साथ स्मरण करते हुए प्रणव में अकार उकार मकार अर्थात् ऊँ में इनका विलय कर दें।

ज्ञातव्य है कि शरीर में पैर से लेकर जानु तक लं बीज पृथ्वी मण्डल, जानु से नाभि तक वं बीज सोम मण्डल, नाभि से हृदय पर्यन्त रं बीजयुक्त अग्नि मण्डल, हृदय से भृकुटि पर्यन्त यं बीजयुक्त वायुमण्डल तथा भृकुटि से ब्रह्म रन्ध्र पर्यन्त हं बीजयुक्त आकाश मण्डल है। इन पाँच भूतों का मनसा-चिन्तन करते हुए पुनः वं बीज से पूरक कुम्भक और रेचक द्वारा अमृतक्षरण करते मानस पटल पर यह ध्यान करना चाहिए कि ब्रह्म से अव्यक्त, अव्यक्त से महान्, महान् से अहंङ्कार, अहंङ्कार से आकाश, आकाश से वायु आदि की उत्पत्ति दिव्य भावना द्वारा दिव्य देह की उत्पत्ति की कल्पना करें। इस दिव्य-देह के प्राप्त होने पर ही उपासना की पात्रता प्राप्त होती है। दिव्य-देह द्वारा ही उपासना की जाती है। उपरोक्त प्रक्रिया का अभ्यास जितना दृढ़ होगा भावना बलवती होगी और साधना प्रारम्भ हो जायेगी।

विग्रह एवं श्री चक्र की पूजा-विधि

साधना में प्रविष्ट होते ही कतिपय नैमित्तिक श्री विग्रह एवं श्री चक्र की पूजन विधि को भी यहाँ संक्षेप में बताना आवश्यक है।

पूजन का क्रम इस प्रकार है :- मन्दिर- प्रवेश, घण्टा पूजा, संकल्प, आसन पूजनम्, देह रक्षा, लघु प्राण-प्रतिष्ठा, मन्दिर-पूजा, दीप पूजा, भूत शुद्धि, आत्म रक्षा न्यास, बालाषडन्न्यास, चतुरानन न्यास, वाग्देवता न्यास, बहिश्चक्र न्यास, अन्तश्चक्र न्यास किया जाता है।

पात्रासादनम्

अनन्तर वर्द्धनी कलश स्थापना, सामान्य अर्घ्यविधि, विशेषार्घ्य विधि, अन्तर्याग, ध्यान, आवाहन, चतुर्षष्ठि, उपचार, चतुरायतन पूजा, लयांङ्ग पूजा, षडङ्गर्चन, नित्यादेवी अर्चनम्, गुरुमण्डलार्चन।

आवरण पूजा:- प्रथमावरण, द्वितीयावरण, तृतीयावरण, तुरीयावरण, पञ्चमावरण, षष्ठ्यावरण, सप्तमावरण, अष्टमावरण, नवमावरण।

तत्पश्चात् पञ्चपचिका पूजन, षट्दर्शनविद्यापूजन, षडाधार पूजन, आम्नाय समष्टि पूजन, दण्डनाथनामानि, मन्त्रिणी नामानि, ललितानामानि, धूप दीप, नैवेद्य, कुलदीप, कर्पूर, नीराजन, पन्त्रपुष्पम, कामकलाध्यान, होम, बलि, स्तोत्रपाठ, सुवासिनी पूजा, तत्वशोधन, पूजा समर्पण, देवता उद्वासन, शान्तिस्तव, विशेषार्घ्यउद्वासन और अन्त में होमः।

दीप-स्थापन एवं पूजन

नैमित्तिक प्राणायाम के पश्चात् अपने आसन के दायें भाग में सामने की ओर चन्दन, चावल एवं फूल रखकर दीपक जलावें। भगवती के विग्रह के दक्षिण-पार्श्व में घी का तथा वाम पार्श्व में तैल का दीपक स्थापित करें और पूजन करें। दीपक से भावना रखनी चाहिए कि हमारी अर्चना में जितना समय लगे तब तक आप सुस्थिर रहें। दीपस्थापन पात्रासादन से पूर्व होना चाहिये।

आत्मप्राण-प्रतिष्ठा की क्रियाविधि

साधक अपने हृदयस्थल पर दाहिना हाथ रखकर 'ॐ ह्रीं क्रीं' इस बीज मंत्र से मानस-चिन्तन करे-'मम सर्वेन्द्रियाणि 'ॐ ह्रीं क्रीं मम वाङ् मनस्त्वक्चक्षु श्रोत्र जिह्वा घ्राण इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा'- इस प्रकार चिन्तन करता हुआ पुनः यह चिन्तन करें- मम गर्भाधानादि पञ्चदश संस्कार सिद्ध्यर्थ (गर्भाधान से लेकर अद्यतन पन्द्रह संस्कारो के न होने की स्थिति में पन्द्रह बार) मन में प्रणव मन्त्र का जप करें और प्राण-शक्ति का चिन्तन करें। यह प्राण-शक्ति पाश, इक्षुदण्ड, अंकुश, पद्म धारण किये हुए बालारुण वर्णमय है यह ध्यान धरें। इसके पश्चात् अपने बायें पैर को (एड़ी तलुवा और अँगुलियों सहित) उठाकर आसन पर तीन बार आघात करता हुआ सोचे कि इस प्रकार हम सभी विघ्नों को दूर कर रहे हैं।

मातृकादिन्यास

यह अन्तर्मातृका बहिर्मातृका भेद से पृथक्-पृथक हैं। पहले हाथों की शुद्धि करे। इस कर शुद्धि को ही न्यास कहा जाता है।

इसके अन्तर्गत

(1) मातृकादिन्यास (2) बहिर्मातृकादिन्यास
(3) अन्तर्मातृकादिन्यास (4) करशुद्धिन्यास
(5) आत्मरक्षान्यास (6) बालाषडङ्ग न्यास
(7) चतुरायतनन्यास (8) वाग्देवतान्यास
(9) वहिश्चक्रन्यास (10) अन्तश्चक्रन्यास
(11)पुनः आज्ञाचक्र में एक-एक अंगुलि के ऊपर (बिन्दु, अर्द्धचन्द्र, रोधिनी, नाद, नादान्त, शक्ति, व्यापिका, शमना, उन्मनी और ब्रह्मरन्ध्र) दशन्यास करें।
(12)कामेश्वरी आदिन्यास (13) मूल विद्यान्यास
(14)षोडशाक्षरी न्यास (15) सम्मोहनन्यास

इन सभी न्यासों की क्रिया-विधि श्री विद्या नित्यार्चन पद्धति में देखें।

गुरु पादुका पूजनम्

तदुपरि गुरु पादुकाओं का स्मरण करे। श्री विद्या नित्यार्चन पद्धति में गुरु, परमगुरु और परमेष्टि गुरु इन तीन पादुकाओं का क्रम वर्णित है। प्रथम गुरु से स्वरूप निरूपण प्राप्त होता है। स्वच्छ प्रकाश प्राप्ति के लिए परमगुरु का चिन्तन किया जाता है। परमेष्टि गरु से स्वात्माराम में विलीन भावना की जाती है।

घण्टापूजन

देवताओं के आगमन और राक्षसों (विघ्नों) को दूर भगाने के लिए पूजन के बाद घण्टा बजाना चाहिए।

संकल्प

देश कालादि का वाचन करते हुए प्रसन्न चित्त से शिवोऽहं की भावना रखनी चाहिए तथा संकल्प आवश्यक है।

आसन पूजा

विनियोग सहित आसन को मन्त्र से पवित्र करें। दाहिने हाथ

में जल लेकर 'सौः' मन्त्र से बारह बार अभिमन्त्रित करके आसन पर जल छिड़के। योगासनाय नमः वीरासनाय नमः शरासनाय नमः। फूल तथा चावल आसन पर छिड़ककर बैठे।

देह रक्षा

"श्री महात्रिपुर सुन्दरि आत्मनं रक्ष रक्ष"। देह रक्षा में गुरु स्मरण, गणपति, दुर्गा, बटुक, योगिनी, क्षेत्रपाल, परमात्मा इन सात देवताओं का हाथों, जानुओं, पैरों, नाभि, तथा हृदय में न्यास होता है। इसके बाद अपने चारो ओर दिग्बन्धन में ज्वालामालिनी भगवती का स्मरण करते हुए एक प्रकार जल से अपने चारो ओर छिड़कना चाहिए। गुरु एवं भैरव से श्री चक्रार्चन के लिए आज्ञा प्राप्त की जाती है।

लघु प्राण-प्रतिष्ठा

अपनी नासिका के सामने एक पुष्प लेकर श्रीयन्त्र में स्थापित करते हुए श्री चक्र की प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है। (ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं हं ॐ हंसः सोहं हंसः शिवः श्री चक्रस्य प्राणा इह प्राणा इत्यादि मन्त्रों से भी श्री चक्र में प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है।

मन्दिर पूजनम्

मन्दिर पूजा में 44 प्राकार हैं। इन प्राकारों की पूजा पुष्प एवं चावल से की जाती है। ये 44 प्राकार निम्नवत् हैं।

(1) अमृत समुद्र (2) रत्नद्वीप
(3) नानावृक्ष महोद्यान (4) कल्पबाटिका
(5) संतान बाटिका (6) हरिचन्दन बाटिका
(7) मन्दार बाटिका (8) पारिजातबाटिका
(9) कदम्ब बाटिका (10) पुष्परागरत्न
(11) पद्मरागरत्न (12) गोमेधकरत्न
(13) बज्ररत्न (हीरा) प्रकारायै नमः
(14) वैदूर्य (लहसुनिया) रत्न
(15) इन्द्रनीलरत्न (16) मुक्तारत्न

(17) मरकतरत्न
(18) विद्रुम (मूँगा) रत्न
(19) माणिक्य
(20) सहस्त्र स्तम्भ
(21) अमृतबापिका
(22) आनन्द बापिका
(23) विमर्श बापिका
(24) बाला तपोद्गार
(25) चन्द्रिकोद्गार
(26) महाश्रंगारपरिघा
(27) महापदमाटवी
(28) चिन्तामणिमय गृहराज
(29) पूर्वाम्नाय
(30) दक्षिणाम्नाय
(31) पश्चिमाम्नाय
(32) उत्तराम्नाय
(33) रत्नप्रदीपवलय
(34) मणिमय महासिंहासनाय
(35) ब्रह्ममयैक पाद
(36) विष्णुमयैक पाद
(37) रुद्रमयैकपाद
(38) ईश्वरमयैकपाद
(39) सदाशिवमयैकमञ्च
(40) हंसतूलिका तल्प (गद्दा)
(41) हंसतूलिका महोपधान (चादर)
(42) कौसुम्भास्तरण (माला)
(43) महावितानकाय (चॅदोवा),
(44) महामाया यवनिका (परदा)।

प्रत्येक प्रकार की पूजा ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बीजमन्त्र से की जाती है। (देखें श्री विद्या सपर्य्या पद्धति)

पात्रासादनम्

वर्द्धिनी कलश स्थापनम् :–चक्र पूजा के लिए वर्द्धिनी कलश की स्थापना अपने बायीं ओर कलश के नीचे त्रिकोणवर्तुल चतुरस्त्र चक्र स्थापित करना चाहिए। पुष्प अक्षत् एवं कर्पूर से सुवासित अर्घ्यपात्र स्थापित करके उसके जल-बिन्दु से त्रिकोण, षट्कोण, वर्त्तुल, चतुरस्र इसमें से चक्र बनाकर (श्री विद्या सपर्य्या पद्वति में चक्राकार देखें) उसमें दक्षिणावर्त्ती शंख स्थापित करें। यदि शंख वामावर्त्ती है तो उसे भी स्थापित कर उसमें वर्द्धिनी-पात्र से जल डालना चाहिए।अनन्तर विशेषार्घ्य पात्र स्थापित करना चाहिए। जल से त्रिकोण षट्कोण वर्त्तुल और चतुरस्त्र बनाकर उसमें दूध डालकर छोटी इलायची का चूर्ण और अदरख पीसकर मिला दें। केशर डालकर शर्करा और शहद डालें। पुनः पद्वति में उल्लिखित

मन्त्रों द्वारा अभिमन्त्रित कर इस प्रकार दशकलात्मक अग्नि, द्वादश कलात्मक सूर्य षोडशकलात्मक चन्द्र का आवाहन-पूजन करते हुए, दश ब्रह्मकला, दश विष्णुकला, दशरुद्र कला तथा चार ईश्वर कलाओं की स्थापना-पूजन करने के पश्चात् सदाशिव की सोलह कलाओं का आवाहन-पूजन किया जाता है। इसके बाद-वाग्विादिनी मन्त्र द्वारा अमृत-कला का आवाहन-पूजन किया जाता है।

आत्मयाग

इस प्रकार विशेषार्घ्य के आगे शुद्धि पात्र की स्थापना करके अग्नि, सूर्य एवं सोमकलाओं का पूजन फिर उसके आगे गुरु-पात्र की स्थापना करके उसमें भी अग्नि, सूर्य एवं सोमकलाओं का पूजन फिर आत्मपात्र की स्थापना करते हुए अमृत विशेषार्घ्य गुरुत्रय में तीन बार, शक्ति-पात्र में तीन बार आत्मपात्र में भी तीन बार अर्घ्य देवें। पुनः आत्मपात्र से स्वयं 'आत्म तत्वं शोधयामि आदि मन्त्रों द्वारा आठ बार आचमन करने के पश्चात् ही श्रीचक्र की अर्चना का अधिकार प्राप्त होता है। इस आत्मशुद्धि के पश्चात् अन्तर्याग विधि से मा का स्मरण किया जाता है।

ध्यानम्

हाथ में पुष्प लेकर मा का ध्यान किया जाता है। ध्यान-मन्त्रों को पढ़ता हुआ यह भावना करे कि हृदय से मातृ-शक्ति निकलकर नासिका द्वारा हाथ में धारित पुष्प में समा गयी है। मन्त्र-पाठ समाप्त होने पर यह पुष्प श्री चक्र पर चढ़ा देना चाहिए। इसके अनन्तर श्री चक्रस्थ देवताओं का आवाहन-पूजन प्रारम्भ हो जाता है। आवाहन-पूजन की विधि सपर्य्या पद्धति में देखें।

आवाहिताभव, संस्थापिताभव, सन्निधापिताभव, सन्निधारुद्धाभव, सम्मुखीभव, अवगुण्ठिताभव, की भावना रखें।

चतु:षष्ठि उपचार

यह उपचार हाथ में चावल या पुष्प लेकर किया जाता है।

भावनात्मकरूप से स्नान, चन्दन-अर्चन तथा पुष्पादि से चतुरायतन (गणेश, सूर्य, विष्णु एवं शिव का आवाहन एवं अर्चन श्री चक्र में किया जाता है। इसके पश्चात् गुरु मण्डल की अर्चना की जाती है। गुरु (मानवौघ), परमगुरु (सिद्धौघ) तथा परमेष्ठि (दिव्यौघ) गुरुत्रय का आवाहन एवं अर्चन किया जाता है।

आवरण-पूजनम्

इस पूजन में आवरण देवताओं का आवाहन-पूजन किया जाता है। प्रथमावरण में सत्ताइस देवताओं का आवाहन होता है। द्वितीयावरण में षोडश (16) नित्याओं का, तृतीयावरण में आठ देवताओं का, चतुर्थ आवरण में 16 शक्तियों का पंचमावरण में दश (10) शक्तियों का, षष्टावरण में भी दश (10) शक्तियों का, सप्तम आवरण में आठ (8) शक्तियों का, अष्टमावरण में भी आठ (8) शक्तियों का, नवमावरणमें महात्रिपुरसुन्दरी का आवाहन-पूजन है। षोडशी पूजन में एक अन्य पूजन भी होता है।

इसके बाद पञ्च-पञ्चिका पूजन प्रारम्भ होता है। इसमें पाँच लक्ष्मियों-पञ्च कोशाम्बा, पञ्च कल्पलताम्बा, पञ्च कामदुग्धाम्बा, पञ्च रत्नाम्बा, षट्दर्शन विद्या तथा अन्त में षडाधार पूजन होता है। फिर आम्नाय समष्टि पूजन में दण्डिनी, मन्त्रिणी श्रीललिताम्बा का यजन है। अब यह सब आवाहन-पूजन और यजन करने के उपरान्त स्नान, चन्दन, कुंकुम, अक्षत, यज्ञोपवीत, वस्त्र, धूप-दीप, आदि षोडशोपचार अथवा यथा शक्ति उपचारों से माता की पूजा करनी चाहिए।

(इन समस्त पूजाओं का क्रम, विधि एवं मन्त्रों का ज्ञान श्री-विद्यापीठ राजराजेश्वरी ललिताम्बा ट्रस्ट, मैस्कर घाट (नानारावघाट), छावनी, कानपुर द्वारा प्रकाशित 'श्री विद्या सपर्य्या पद्धति में' उपलब्ध है, जिसे श्री विद्या के उपासक एवं साधक यहाँ से समूल्य प्राप्त कर सकते हैं।)

श्री विद्या खड्गमाला एवम् भू-शुद्धि पात्रासादनम् फलश्रुतिः

शुद्धा नमोन्ता स्वाहान्ता तर्पणान्ता जयान्तका:।
प्रवृत्त्यय: पञ्चधास्युर्मालासु निखिलास्वपि।
ऋषिच्छन्दो देवतास्य विनियोगै: पृथक्कृता:
सर्वाङ्गमेषु पठ्यन्ते गुह्य: सप्ताष्ट मालिका:।

1- सप्ताष्टमाला माहात्म्य वक्तुं वर्षशतैरपि।
नशक्यते वरारोहे पञ्चभिर्वदनैरपि ।।

2- एकवारं प्रतिदिनं दशपञ्चस्रजो जपेत्।
महापातक निर्मुक्त सर्व पुण्यमवाप्नुयात्।।

भावार्थ :- एक बार प्रतिदिन 15 माला का जो जप करता है वह बड़े से बड़े पापों से मुक्त होकर सब प्रकार के पुण्यों को प्राप्त करता है।

3- मासमेकं समावर्त्य सप्ताष्टस्रजमुत्तमम्।
असाध्ययाप्य साध्याख्यैर्मुच्यते त्रिविधैर्गदै:।।

भावार्थ :- यदि एक मास तक 15 माला प्रतिदिन के क्रम से जप किया जाये तो असाध्य वस्तुओं की प्राप्ति होती है और तीन प्रकार के दैहिक, दैविक और भौतिक रोगों से मुक्ति हो जाती है।

4- मालामन्त्रैरभीभिस्तु मन्त्रिता भूति-पांसव: ।
क्षिप्ताभूताभिभूतानां मूर्ध्नि भूत विनाशका: ।।

भावार्थ :- इस माला मन्त्र से अभिमन्त्रित भस्म जिसके सिर में लगा दी जाय तो उसके ऊपर भूत-प्रेत का प्रभाव नहीं होता।

5- ज्वरिणां च ज्वरा यान्ति वाता वातकिनामयि।
असाध्यरोग ग्रस्तानां रोगा यान्ति द्रुतक्षयम्।।

भावार्थ :- ज्वर-ग्रस्त प्राणियों का ज्वर शान्त हो जाता है और वात-व्याधि दूर हो जाती है तथा असाध्य रोगों से ग्रस्त रोगों का शीघ्र ही क्षय हो जाता है।

6- एतन्मन्त्रित तोयेन भस्मना वा समुत्क्षणात्।
पठित्वा हस्त-स्पर्शाद् वा नात्र कार्याविचारणा।।

भावार्थ :- इन मन्त्रों से अभिमन्त्रित जल अथवा भस्म छिड़कने अथवा मन्त्रोच्चारण करते हुए मस्तक को हाथ से स्पर्श करने से समस्त रोग दूर हो जाते हैं।

7- सप्ताष्टमाला मन्त्रैस्तु मन्त्रयित्वा घटोदकम्।
सप्ताह सेवनं कृत्वा वन्ध्यापुत्रवती भवेत्।।

भावार्थ :- एक घड़े में जल भरकर उसे मन्त्र की 15 मालाओं के जप से अभिमन्त्रित करके वन्ध्या स्त्री उसका सेवन करे तो पुत्रवती हो जाय।

8- अन्येष्वपि दोषेषु मालामन्त्रं पठेन्नरः।
सर्वोपद्रव निर्मुक्तः साक्षाच्छिवमयो भवेत्।।

भावार्थ :- जो व्यक्ति इस मालामन्त्र का एवं विधि जप करता है उसके जीवन के सभी उपद्रव नष्ट हो जाते हैं तथा वह साक्षात् शिव-स्वरूप हो जाता है।

9- सप्ताष्टमालिकाजापी नित्यंपुण्यमयाकृतिः।
ज्वलन्नग्निरिव यस्तैर्वीक्ष्यते भूत-पूतनैः।।

भावार्थ :- इस मन्त्रमाला का पन्द्रह माला जप करने वाला व्यक्ति पुण्यमय स्वरूप वाला होता है। अग्नि के समान दहकते नेत्रों से देखने मात्र से वह भूत-प्रेतादि बाधाओं से मुक्ति दिला देता है।

10- पूजा होमस्तर्पणञ्च मन्त्रशक्ति प्रभावतः।
पुष्पाज्य-तोयाभावेऽपि जप मात्रेण सिद्धयति।।

भावार्थ :- इस माला मन्त्र के प्रभाव से पुष्प, जलादि पूजन सामग्री के अभाव में जप मात्र से ही पूजन, हवन, आदि उपचारों की अभीष्ट सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

11- आपत् काले नित्य पूजां विस्तरात् कर्तुमक्षमः।
एकावर्तन मात्रेण सर्व पूजा फलं लभेत्।।

आपत्ति के समय विस्तृत पूजा करने में यदि व्यक्ति अक्षम-असमर्थ हो तो इस मन्त्रमाला की एक आवृत्ति मात्र सर्व-पूजा का फल देती है।

सविधि श्री श्रीविद्या खड्ग माला
शक्ति-सम्बुद्ध्यन्त-माला
'क'

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को — कृष्णपक्ष की अमावस्या को

आदि गुरुः पर शिवस्याज्ञया; प्रवर्तमानेन देवीमानेन; षट्-त्रिंशत्-तत्त्वात्मक सकल प्रपञ्च-सृष्टि-स्थिति संहार तिरोधानानुग्रह कारिण्या: श्रीपरा-शक्त्या ऊर्ध्व-भ्रू-विभ्रमे 1 अं पूर्णे, 2 षं सत्ये, 3 हं शवले, 4 हस्ख्फ्रें खर्वे, 5 क्लीं रामे, 6 स्हख्फ्रें महा-परिवृत्तौ, 7 थं अष्टादश-परिवृत्तौ, 8 शून्यं महायुगे, 9 खं युगे, 10 अमुक वर्षे, 11 अमुक मासे, 12 अमुक लघु मासे, 13 अमुक पक्षे, 14 अमुक दिने, 15 अमुक तिथि-नित्यायां, 16 अमुक नाथे, अमुक घटिकायां, अमुक नक्षत्रे, अमुक योगे, अमुक करणे, अमुक विद्यायां, अमुक महा विद्यायां, अमुक वासरे शाम्भव-गोत्रोत्पन्न, अमुकानन्दनाथोहं श्रीपर-देवता-प्रीत्यऽर्थं खड्गमाला-महामन्त्रस्य पारायणमहं करिष्ये।

विनियोग:- अस्य श्री शक्ति-सम्बुद्ध्यन्त-माला-मन्त्रस्य उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायि-वरुणादित्य ऋषिः। गायत्री छन्दः। सात्विक-ककार-भट्टारक-पीठ-स्थिति-शिव-कामेश्वराङ्क- निलया श्री ललिता महात्रिपुरसुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। खड्ग-सिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायि-वरुणादित्य ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। सात्विक-ककार-भट्टारकपीठ स्थित शिव कामेश्वराङ्क-निलया श्री ललिता महात्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। खड्ग-सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कराङ्ग-न्यास- ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं

मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यास : ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुँ। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानं : तादृशं खड्गमाप्नोति येन हस्तस्थितेन वै।
अष्टादशमहाद्वीपे साम्राज्यभोक्ता भविष्यति ॥

मानस-पूजा -

1. 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वराङ्क निलया श्रीमहा त्रिपुरसुन्दरी पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'..... अधोमुख कनिष्ठांगुष्ठ से
2. 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वराङ्क निलया श्रीमहा त्रिपुरसुन्दरी पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'..... अधोमुख तर्जनी अंगुष्ठ से
3. 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वराङ्क निलया श्रीमहा त्रिपुरसुन्दरी पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'..... ऊर्ध्वमुख तर्जन्यंगुष्ठ से
4. 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकामेश्वराङ्क निलया श्रीमहा त्रिपुरसुन्दरी पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'..... ऊर्ध्व मुख मध्यमाङ्गुष्ठ से
5. 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वराङ्क निलया श्रीमहा त्रिपुरसुन्दरी पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'..... ऊर्ध्व मुख अनामिकाङ्गुष्ठ से
6. 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वराङ्क निलया श्रीमहा त्रिपुरसुन्दरी पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'..... ऊर्ध्व मुख सर्वाङ्गुलियों से

शक्ति सम्बुद्ध्यन्त माला
माला-पारायण

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नमिस्त्रपुर-सुन्दरि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः हृदयदेवि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिरोदेवि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिखादेवि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कवचदेवि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नेत्रदेवि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अस्त्रदेवि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामेश्वरि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भगमालिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नित्य-क्लिन्ने
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भेरुण्डे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वह्निवासिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महा-वज्रेश्वरि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिवदूति
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्वरिते
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कुलसुन्दरि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नित्ये
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नीलपताके
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विजये
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमङ्गले
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ज्वालामालिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चित्रे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महानित्ये
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः परमेश्वरि परमेश्वर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मित्रीशमयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः षष्ठीशमयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः उड्डीशमयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चर्यानाथमयि

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः लोपामुद्रा-मयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अगस्त्यमयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कालतापनमयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः धर्माचार्य्यमयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मुक्तकेशीश्वरमयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः दीपकलानाथमयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विष्णुदेवमयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्रभाकरदेवमयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः तेजोदेवमयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मनोजदेवमयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कल्याणदेवमयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रत्नदेवमयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वासुदेवमयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः श्रीरामानन्दमयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अणिमासिद्धे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः लघिमासिद्धे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महिमासिद्धे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ईशित्वसिद्धे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वशित्वसिद्धे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्राकाम्यसिद्धे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भुक्तिसिद्धे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः इच्छासिद्धे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्राप्तिसिद्धे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वकामसिद्धे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ब्राह्मी
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः माहेश्वरि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कौमारि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वैष्णवि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वाराहि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः माहेन्द्रि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चामुण्डे

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महालक्ष्मि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसंक्षोभिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व-विद्राविणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमा सर्वाकर्षिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्ववशङ्करि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वोन्मादिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमहांङ्कुशे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वखेचरि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वबीजे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वयोने
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वत्रिखण्डे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रैलोक्य-मोहनचक्र स्वामिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्रकट योगिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामाकर्षिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः बुद्ध्याकर्षिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अहङ्काराकर्षिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शब्दाकर्षिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः स्पर्शाकर्षिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रूपाकर्षिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रसाकर्षिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मेधाकर्षिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चित्ताकर्षिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः धैर्य्याकर्षिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः स्मृत्याकर्षिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नामाकर्षिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः बीजाकर्षिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः आत्माकर्षिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अमृताकर्षिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शरीराकर्षिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाशापरिपूरक-चक्र-स्वामिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गुप्त-योगिनि

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गकुसुमे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमेखले
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमदने
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमदनातुरे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गरेखे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गवेगिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गांकुशे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमालिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गुप्ततर-योगिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व-संक्षोभिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व-विद्राविणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाकर्षिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाह्लादिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसम्मोहिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वस्तम्भिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वजृम्भिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्ववशंङ्करि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरञ्जिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वोन्मादिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वार्थ साधिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व सम्पत्ति पूरिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमन्त्रमयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वद्वन्द्वक्षयंकरि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसौभाग्यदायक चक्रस्वामिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सम्प्रदाययोगिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसिद्धि प्रदे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसम्पत्प्रदे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वप्रियङ्करि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमंगलकारिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वकाम प्रदे

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वदुःख विमोचिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमृत्युप्रशपिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वविघ्न निवारिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाङ्ग सुन्दरि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसौभाग्य दायिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वार्थ साधक चक्रस्वामिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कुलोत्तीर्ण-योगिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वज्ञे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व-शक्ते
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वैश्वर्य प्रदे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वज्ञानमयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वव्याधिविनाशिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाधारस्वरूपे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व पापहरे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वानन्दमयि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरक्षा स्वरूपिणि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वेप्सित प्रदे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरक्षाकर चक्रस्वामिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः निगर्भयोगिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वशिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामेश्वरि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मोदिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विमले
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अरुणे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः जयिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वेश्वरि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कौलिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व रोगहर चक्रस्वामिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रहस्ययोगिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वाणिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चापिनि

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः पाशिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अंकुशिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाकामेश्वरि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महावज्रेश्वरि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाभगमालिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाश्रीसुन्दरि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसिद्धिप्रद चक्रस्वामिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अति रहस्य योगिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः श्री महाभट्टारिके
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वानन्दमय चक्रस्वामिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः परापर रहस्य योगिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरेशि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुर सुन्दरि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुर वासिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुराश्री
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुर मालिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरासिद्धे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुराम्ब
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महात्रिपुर सुन्दरि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहेश्वरि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महा महाराज्ञि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाशक्ते
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहा गुप्ते
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाज्ञप्ते
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहानन्दे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहास्पन्दे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाशये
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहा श्री चक्र नगर साम्राज्ञि ॥181॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॐ

इस प्रकार जपकर अन्त में जप-समर्पण करें-

यथा –

गुह्याति गुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
त्वत्प्रसादान्मे देवि! सिद्धिर्भवति महेश्वरि।

शक्ति-नमोऽन्त-माला

शुक्लपक्ष की द्वितीया को	'ए'	कृष्णपक्षकी चतुर्दशी को

पहले तान्त्रिक पञ्चाङ्ग की सहायता से तान्त्रिक संकल्प करे-

विनियोग - अस्य श्री शक्ति-नमोऽन्त-माला-मन्त्रस्य पाय्विविन्द्रियाधिष्ठायि-मित्रादित्य ऋषिः। उष्णिक् छन्दः। भोगद-एकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-एकवीर-कामेश्वराङ्क-निलया। श्रीएकला-ललिता महा-त्रिपर-सुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। पादुका-सिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- पायिविन्द्रियाधिष्ठायि-मित्रादित्य ऋषये नमः शिरसि। उष्णिक् छन्दसे नमः मुखे। भोगद-एकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-एकवीर-कामेश्वराङ्क-निलयायै श्रीएकला-ललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। पादुका-सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कराङ्गन्यास :- ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग न्यास :- ह्रां हृदयाय नमः । ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैंकवचायहुम् ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट। ह्रः अस्त्राय फट्।

घ्यान :- ताद्वशं पादुका-युग्ममाप्नोति तव भक्तिमान्।
यदाक्रमण-मात्रेण क्षणात् त्रिभुवन-क्रमः।।

मानस-पूजा :-

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वराङ्क-निलया-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः।अनुकल्पयामि

-अधोमुख कनिष्ठांगुष्ठ से

हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वराङ्क-निलया-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः। अनुकल्पयामि

अधोमुख तर्जनी अंगुष्ठ से

यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वराङ्क-निलया-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि। ऊर्ध्वमुख तर्जन्यंगुष्ठ से
रं वह्न्यात्मक दीपं श्रीकामेश्वराङ्क-निलया-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।

-ऊर्ध्वमुख मध्यमांगुष्ठ से

वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वराङ्क-निलया-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि।

-अनामांगुष्ठ से

शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वराङ्क-निलया-श्रीमहा त्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि

-सर्वांगुलियों से

माला पारायण

1. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
2. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हृदय-देव्यै नमः पादुकां पूजयामि।
3. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिरो-देव्यै नमः पादुकां पूजयामि।
4. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिखा-देव्यै नमः पादुकां पूजयामि।
5. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कवच-दैव्यै नमः पादुकां पूजयामि।
6. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नेत्र-देव्यै नमः पादुकां पूजयामि।
7. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अस्त्र-देव्यै नमः पादुकां पूजयामि।
8. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
9. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भगमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
10. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्यक्लिन्नायै नमः पादुकां पूजयामि।
11. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भेरुण्डायै नमः पादुकां पूजयामि।
12. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वह्निवासिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
13. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-वज्रेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
14. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिव-दूत्यै नमः पादुकां पूजयामि।
15. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्वरितायै नमः पादुकां पूजयामि।
16. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुल-सुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
17. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्यायै नमः पादुकां पूजयामि।
18. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नील-पताकायै नमः पादुकां पूजयामि।
19. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विजया नमः पादुकां पूजयामि।
20. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमङ्गलायै नमः पादुकां पूजयामि।
21. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ज्वालामालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
22. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्रायै नमः पादुकां पूजयामि।
23. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महानित्यायै नमः पादुकां पूजयामि।
24. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परमेश्वर-परमेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
25. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मित्रीशमय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
26. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ षष्ठीशमय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
27. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ उड्डीशमय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
28. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चर्य्यानाथमय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
29. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लोपामुद्रामय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
30. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अगस्त्यमय्यै नमः पादुकां पूजयामि।

31. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कालतापनमय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
32. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धर्माचार्य्यमय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
33. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मुक्तकेशीश्वरमय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
34. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ दीपकलानाथमय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
35. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विष्णुदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
36. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रभाकरदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
37. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ तेजोदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
38. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मनोजदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
39. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कल्याणदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
40. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रत्न-देव-मय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
41. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वासुदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
42. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीरामानन्दमय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
43. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अणिमासिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि।
44. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लघिमासिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि।
45. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महिमासिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि।
46. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ईशित्वसिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि।
47. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशित्वसिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि।
48. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि।
49. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भुक्तिसिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि।
50. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इच्छासिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि।
51. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राप्तिसिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि।
52. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वकामसिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि।
53. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ब्राह्म्यै नमः पादुकां पूजयामि।
54. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
55. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौमार्यै नमः पादुकां पूजयामि।
56. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वैष्णव्यै नमः पादुकां पूजयामि।
57. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वाराह्यै नमः पादुकां पूजयामि।
58. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेन्द्र्यै नमः पादुकां पूजयामि।
59. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चामुण्डायै नमः पादुकां पूजयामि।
60. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः पादुकां पूजयामि।
61. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।

62. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविद्राविण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
63. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
64. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्ववशङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
65. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
66. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमहांकुशायै नमः पादुकां पूजयामि।
67. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वखेचर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
68. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वबीजायै नमः पादुकां पूजयामि।
69. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वयोन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
70. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वत्रिखण्डायै नमः पादुकां पूजयामि।
71. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रैलोक्यमोहनचक्र स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
72. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रकटयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
73. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
74. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बुद्ध्याकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
75. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अहङ्काराकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
76. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शब्दाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
77. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्पर्शाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
78. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रुपाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
79. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रसाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
80. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गन्धाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
81. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्ताकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
82. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धैर्याकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
83. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्मृत्याकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
84. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नामाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
85. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बीजाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
86. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आत्माकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
87. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अमृताकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
88. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शरीराकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
89. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
90. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्तयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।

91. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गकुसुमायै नमः पादुकां पूजयामि।
92. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमेखलायै नमः पादुकां पूजयामि।
93. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमदनायै नमः पादुकां पूजयामि।
94. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमदनातुरायै नमः पादुकां पूजयामि।
95. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गरेखायै नमः पादुकां पूजयामि।
96. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गवेगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
97. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गांकुशायै नमः पादुकां पूजयामि।
98. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
99. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभण चक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
100. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्ततरयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
101. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
102. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविद्राविण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
103. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
104. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाह्लादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
105. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्मोहिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
106. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वस्तम्भिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
107. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वजृम्भिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
108. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्ववशङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
109. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरञ्जिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
110. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
111. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थसाधिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
112. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्पत्तिपूरिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
113. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमन्त्रमय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
114. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
115. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसौभाग्यदायकचक्र स्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
116. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सम्प्रदाययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
117. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसिद्धिप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि।
118. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्पत्प्रदायै नमः पादुकां पूजयामि।
119. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वप्रियङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि।

120. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमंगलकारिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
121. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वकामप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि।
122. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-दुःखविमोचिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
123. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमृत्युप्रशमिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
124. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविघ्ननिवारिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
125. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाङ्गसुंदर्य्यै नमः पादुकां पूजयामि।
126. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
127. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
128. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलोत्तीर्णयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
129. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञायै नमः पादुकां पूजयामि।
130. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वशक्त्यै नमः पादुकां पूजयामि।
131. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वैश्वर्यप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि।
132. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञानमय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
133. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
134. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाधारस्वरूपायै नमः पादुकां पूजयामि।
135. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वपापहरायै नमः पादुकां पूजयामि।
136. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्दमय्यै नमः पादुकां पूजयामि।
137. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
138. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेप्सितप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि।
139. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
140. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ निगर्भ-योगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
141. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
142. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
143. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मोदिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
144. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विमलायै नमः पादुकां पूजयामि।
145. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अरुणायै नमः पादुकां पूजयामि।
146. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ जयिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
147. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।

148. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौलिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
149. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरोगहरचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
150. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रहस्ययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
151. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बाणिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
152. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चापिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
153. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ पाशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
154. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अंकुशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
155. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाकामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
156. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महावज्रेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
157. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाभगमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
158. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाश्रीसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
159. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
160. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अतिरहस्ययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
161. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै नमः पादुकां पूजयामि।
162. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्दमयचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
163. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परापररहस्ययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
164. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरायै नमः पादुकां पूजयामि।
165. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरेश्यै नमः पादुकां पूजयामि।
166. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
167. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरवासिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
168. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराश्रियै नमः पादुकां पूजयामि।
169. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
170. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरासिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि।
171. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराम्बमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
172. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि।
173. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाराज्ञ्यै नमः पादुकां पूजयामि।

174. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाशक्त्यै नमः पादुकां पूजयामि।
175. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहागुप्त्यै नमः पादुकां पूजयामि।
176. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाज्ञप्तायै नमः पादुकां पूजयामि।
177. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहानन्दायैनमः पादुकां पूजयामि।
178. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाभहास्पन्दायै नमः पादुकां पूजयामि।
179. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाशयायै नमः पादुकां पूजयामि।
180. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाश्रीचक्र नगर साम्राज्ञै नमः पादुकां पूजयामि।

नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ।।

जप–समर्पण

गुह्याति–गुह्य–गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
त्वत्प्रसादान्मे देवि! सिद्धिर्भवति महेश्वरि ॥

शक्ति स्वाहान्त माला

'ई'

शुक्लपक्ष की तृतीया को — कृष्णपक्ष की त्रयोदशी को

पहले तान्त्रिक पञ्चाङ्ग की सहायता से संकल्प करें। फिर विनियोग एवं न्यासादि के पश्चात् माला पारायण करें।

विनियोग– अस्य श्री शक्ति स्वाहान्त माला-मन्त्रस्य पादेन्द्रियाधिष्ठायि धात्रादित्य ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। मोक्षद ईकार भट्टारक पीठ स्थित ईश्वर कामेश्वराङ्कनिलया श्री ईश्वरी कामेश्वरी ललिता महात्रिपुरसुन्दरि देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। अञ्जन सिद्धौ विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास– पादेन्द्रियाधिष्ठायि धात्रादित्य ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। मोक्षद ईकार भट्टारक पीठ स्थित ईश्वर कामेश्वराङ्क निलयायै श्री ईश्वरी कामेश्वरी ललितामहात्रिपुरसुन्दरि देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। अञ्जन सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कराङ्ग-न्यास– ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ह्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यास– ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुं। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान– सिद्धाञ्जनं समासाद्य तेनाञ्जनित लोचनः ।
निधिं पश्यति सर्वत्र भक्तस्तेन समृद्धिमान् ॥

मानस–पूजा –

1. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वराङ्क निलया श्रीमहा त्रिपुरसुन्दरि पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

..... अधोमुख कनिष्ठांगुष्ठ से

2. 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वराङ्क निलया श्रीमहात्रिपुर सुन्दरि पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

..... अधोमुख तर्जनी अंगुष्ठ से

3. 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वराङ्क निलया श्रीमहात्रिपुर सुन्दरि पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

..... ऊर्ध्वमुख तर्जन्यंगुष्ठ से

4. 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकामेश्वराङ्क निलया श्रीमहा त्रिपुरसुन्दरि पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

..... ऊर्ध्वमुख मध्यमाङ्गुष्ठ से

5. 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वराङ्क निलया श्रीमहा त्रिपुरसुन्दरि पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

..... अनामिकांगुष्ठ से

6. 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वराङ्क निलया श्रीमहा त्रिपुरसुन्दरि पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

..... सर्वाङ्गुलियों से

शक्ति स्वाहान्त माला पारायण

'ई'

शुक्लपक्ष की
तृतीया को

कृष्णपक्ष की
त्रयोदशी को

इस माला के प्रत्येक मन्त्र के अन्त में स्वाहा जोड़कर जप करें।

यथा–

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुर सुन्दर्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः हृदयदेव्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिरो देव्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिखा देव्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कवच देव्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नेत्र देव्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अस्त्र देव्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामेश्वर्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भगमालिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नित्य क्लिन्नायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भेरुण्डायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वह्निवासिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महावज्रेश्वर्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिव दूत्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कुलसुन्दर्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्वरितायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नित्यायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नील पताकायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विजयायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमङ्गलायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ज्वाला मालिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चित्रायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महानित्यायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः परमेश्वर परमेश्वर्यै स्वाहा

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मित्रीश मय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः षष्ठीश मय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः उड्डीश मय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चर्यानाथमय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः लोपामुद्रामय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अगस्त्यमय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः काल तापन मय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः धर्माचार्य्य मय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मुक्तकेशीश्वर मय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः दीप कलानाथ मय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विष्णुदेव मय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्रभाकरदेव मय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः तेजोदेव मय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मनोज देव मय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कल्याण देव मय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रत्नदेव मय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वासुदेव मय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः श्रीरामानन्द मय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अणिमा सिद्ध्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः लघिमा सिद्ध्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महिमा सिद्ध्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ईशित्व सिद्ध्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वशित्व सिद्ध्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्राकाम्य सिद्ध्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भुक्ति सिद्ध्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः इच्छा-सिद्ध्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्राप्ति सिद्ध्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वकाम सिद्ध्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ब्राह्म्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः माहेश्वर्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कौमार्यै स्वाहा

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वैष्णव्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वाराह्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः माहेन्द्र्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चामुण्डायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महालक्ष्म्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व संक्षोभिण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व विद्राविण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाकर्षिण्ये स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्ववशङ्कर्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वोन्मादिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व महांकुशायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व खेचर्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व बीजायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व योन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व त्रिखण्डायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रैलोक्य मोहन चक्र स्वामिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्रकट योगिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामाकर्षिण्ये स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः बुद्ध्याकर्षिण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अहङ्काराकर्षिण्ये स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शब्दाकर्षिण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः स्पर्शाकर्षिण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रूपाकर्षिण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रसाकर्षिण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गन्धाकर्षिण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चित्ताकर्षिण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः धैर्याकर्षिण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः स्मृत्याकर्षिण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नामाकर्षिण्ये स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः बीजाकर्षिण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः आत्माकर्षिण्ये स्वाहा

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अमृताकर्षिण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शरीराकर्षिण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाशा परिपूरक चक्र स्वामिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गुप्त-योगिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गकुसुमायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमेखलायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमदनायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमदनातुरायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गरेखायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्ग वेगिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गांकुशायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमालिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व संक्षोभण चक्र स्वामिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गुप्ततर योगिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व संक्षोभिण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व विद्राविण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाकर्षिण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाह्लादिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व सम्मोहिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व स्तम्भिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वजृम्भिण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व वशंकर्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व-रञ्जिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वोन्मादिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वार्थ साधिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व सम्पत्तिपूरिण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व मंत्र मय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व द्वन्द्वक्षयङ्कर्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व सौभाग्य दायक चक्र स्वामिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सम्प्रदाय योगिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व सिद्धि प्रदायै स्वाहा

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व सम्पत्प्रदायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व प्रियङ्कर्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व कामप्रदायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वदुःख विमोचिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व मृत्यु प्रशमिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व विघ्न निवारिण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाङ्ग सुन्दर्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व सौभाग्य दायिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वार्थसाधक चक्र स्वामिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कुलोत्तीर्ण योगिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वज्ञायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व शक्तयै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वैश्वर्य प्रदायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-ज्ञान-मय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वव्याधि विनाशिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाधार स्वरूपायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व पाप हरायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्दमय्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरक्षास्वरुपिण्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वेप्सितप्रदायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व रक्षाकर चक्र स्वामिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः निगर्भ योगिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वशिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामेश्वर्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मोदिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विमलायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अरुणायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः जयिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वेश्वर्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कौलिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व रोगहर चक्र स्वामिन्यै स्वाहा

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रहस्य-योगिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वाणिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चापिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः पाशिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अंकुशिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाकामेश्वर्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महावज्रेश्वर्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाभगमालिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाश्री सुन्दर्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व सिद्धिप्रदचक्र स्वामिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अति रहस्य योगिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः श्रीश्री महाभट्टारिकायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वानन्दमयचक्र स्वामिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः परापर रहस्य योगिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरेश्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुर सुन्दर्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरवासिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुराश्रियै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुर मालिन्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरा सिद्धायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुराम्बायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महात्रिपुर सुन्दर्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहेश्वर्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महा महाराज्ञै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महा महाशक्त्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महा महा गुप्तायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महा महा ज्ञप्तायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महा महा नन्दायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महा महा स्पन्दायै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महा महाशयायै स्वाहा

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महा महाश्री चक्र नगर साम्राज्ञ्यै स्वाहा
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॐ
इस प्रकार जपकर अन्त में जप समर्पण करें।

यथा –

गुह्याति गुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
त्वत्प्रसादान्मे देवि! सिद्धिर्भवति महेश्वरि॥

शक्ति-तर्पणान्त-माला

'ल'

शुक्लपक्ष की चतुर्थी 4 — कृष्णपक्ष द्वादशी 12

विनियोग - अस्य श्री शक्ति-तर्पणान्त-माला-मन्त्रस्य पाणिन्द्रियाधिष्ठायि-अर्यमादित्य ऋषिः। बृहती छन्दः। सात्विक-लकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-ललिता-कामेश्वराङ्क-निलया श्रीललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। बिल-सिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास :- पाणिन्द्रियाधिष्ठायि-अर्यमादित्य ऋषये नमः शिरसि।
बृहती छन्दसे नमः मुखे। सात्विक-लकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-ललिता-कामेश्वराङ्क-निलयायै श्रीललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। बिल-सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कराङ्ग-न्यासः ॐ हैं कवचाय हुँ। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट् । ह्रां हृदयायनमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः । हैं अनामिकाभ्यांनमः । ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यांनमः । ह्रः करतलकर पृष्ठाभ्यांनमः ।

ध्यान : बिल-द्वारमपावृत्य पाताल-तल-योगिनः।
वीक्ष्यतेभ्यो लब्ध-सिद्धस्तव भक्तः सुखी भवेत्।।

मानस-पूजा -
लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वराङ्क-निलया-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः

हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वराङ्क-निलया-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः
यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वराङ्क-निलया-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः
रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकामेश्वराङ्क-निलया-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वराङ्क-निलया-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः
शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वराङ्क- निलया- श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी- पादुकाभ्यां नमः

माला पारायण

1. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दरी तर्पयामि
2. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हृदय-देवीं तर्पयामि
3. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिरो-देवीं तर्पयामि
4. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिखा-देवीं तर्पयामि
5. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कवच-देवीं तर्पयामि
6. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नेत्र-देवीं तर्पयामि
7. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अस्त्र-देवीं तर्पयामि
8. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वरीं तर्पयामि
9. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भग-मालिनीं तर्पयामि
10. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्य-क्लिन्नां तर्पयामि
11. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भेरुण्डां तर्पयामि
12. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वह्निवासिनीं तर्पयामि
13. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-वज्रेश्वरीं तर्पयामि
14. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिव-दूतीं तर्पयामि
15. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्वरितां तर्पयामि
16. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुल-सुन्दरीं तर्पयामि
17. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्यां तर्पयामि
18. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नील-पताकां तर्पयामि
19. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विजयां तर्पयामि
20. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मङ्गलां तर्पयामि
21. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ज्वाला-मालिनीं तर्पयामि
22. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्रां तर्पयामि
23. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-नित्यां तर्पयामि
24. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परमेश्वर-परमेश्वरीं तर्पयामि
25. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मित्रीश-मयीं तर्पयामि
26. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ षष्ठीश-मयीं तर्पयामि
27. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ उड्डीश-मयीं तर्पयामि
28. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चर्यानाथ-मयीं तर्पयामि
29. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लोपामुद्रा-मयीं तर्पयामि
30. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अगस्त्य-मयीं तर्पयामि

31. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ काल-तापन-मयीं तर्पयामि
32. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धर्माचार-मयीं तर्पयामि
33. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मुक्त केशीश्वर-मयीं तर्पयामि
34. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ दीप-कला-नाथ मयीं तर्पयामि
35. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विष्णु-देव-मयीं तर्पयामि
36. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रभाकर-देव-मयीं तर्पयामि
37. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ तेजो-देव-मयीं तर्पयामि
38. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मनोज-देव-मयीं तर्पयामि
39. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कल्याण-देव-मयीं तर्पयामि
40. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रत्न-देव-मयीं तर्पयामि
41. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वासुदेव-मयीं तर्पयामि
42. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीरामानन्द-मयीं तर्पयामि
43. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अणिमा-सिद्धिं तर्पयामि
44. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लघिमा-सिद्धिं तर्पयामि
45. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महिमा-सिद्धिं तर्पयामि
46. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ईशित्व-सिद्धिं तर्पयामि
47. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशित्व-सिद्धिं तर्पयामि
48. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राकाम्य-सिद्धिं तर्पयामि
49. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भुक्ति-सिद्धिं तर्पयामि
50. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इच्छा-सिद्धिं तर्पयामि
51. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राप्ति-सिद्धिं तर्पयामि
52. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-काम-सिद्धिं तर्पयामि
53. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ब्राह्मी तर्पयामि
54. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेश्वरीं तर्पयामि
55. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौमारीं तर्पयामि
56. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वैष्णवीं तर्पयामि
57. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वाराहीं तर्पयामि
58. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेन्द्रीं तर्पयामि
59. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चामुण्डां तर्पयामि
60. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्मीं तर्पयामि
61. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-संक्षोभिणीं तर्पयामि

62. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विद्राविणीं तर्पयामि
63. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिणीं तर्पयामि
64. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-वशङ्करीं तर्पयामि
65. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिनीं तर्पयामि
66. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-महांकुशां तर्पयामि
67. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-खेचरीं तर्पयामि
68. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-बीजां तर्पयामि
69. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-योनिं तर्पयामि
70. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-त्रिखण्डां तर्पयामि
71. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि
72. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रकट-योगिनीं तर्पयामि
73. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामाकर्षिणीं तर्पयामि
74. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बुद्ध्याकषिणीं तर्पयामि
75. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अहङ्काराकर्षिणीं तर्पयामि
76. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शब्दाकर्षिणीं तर्पयामि
77. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्पर्शाकर्षिणीं तर्पयामि
78. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रुपाकर्षिणीं तर्पयामि
79. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रसाकर्षिणीं तर्पयामि
80. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गन्धाकर्षिणीं तर्पयामि
81. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्ताकर्षिणीं तर्पयामि
82. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धैर्याकर्षिणीं तर्पयामि
83. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्मृत्याकर्षिणीं तर्पयामि
84. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नामाकर्षिणीं तर्पयामि
85. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बीजाकर्षिणीं तर्पयामि
86. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आत्माकर्षिणीं तर्पयामि
87. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अमृताकर्षिणीं तर्पयामि
88. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शरीराकर्षिणीं तर्पयामि
89. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाशापरिपूरक-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि
90. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्त-योगिनीं तर्पयामि
91. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-कुसुमां तर्पयामि
92. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मेखलां तर्पयामि

93. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मदनां तर्पयामि
94. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मदनातुरां तर्पयामि
95. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-रेखां तर्पयामि
96. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-वेगिनीं तर्पयामि
97. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गांकुशां तर्पयामि
98. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मालिनीं तर्पयामि
99. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि
100. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्ततर-योगिनीं तर्पयामि
101. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-संक्षोभिणीं तर्पयामि
102. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विद्राविणीं तर्पयामि
103. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिणीं तर्पयामि
104. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाह्लादिनीं तर्पयामि
105. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सम्मोहिनीं तर्पयामि
106. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-स्तम्भिनीं तर्पयामि
107. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-जृम्भिणीं तर्पयामि
108. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-वशंकरीं तर्पयामि
109. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रञ्जिनीं तर्पयामि
110. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिनीं तर्पयामि
111. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थ-साधिनीं तर्पयामि
112. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सम्पत्ति-पूरणीं तर्पयामि
113. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मन्त्र-मयीं तर्पयामि
114. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-द्वन्द्व-क्षयंकरीं तर्पयामि
115. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सौभाग्यदायकचक्र-स्वामिनीं तर्पयामि
116. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सम्प्रदाय-योगिनीं तर्पयामि
117. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सिद्धि-प्रदां तर्पयामि
118. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सम्पत्प्रदां तर्पयामि
119. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-प्रियङ्कारीं तर्पयामि
120. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मंगल-कारिणीं तर्पयामि
121. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-काम-प्रदां तर्पयामि
122. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-दुःख-विमोचिनीं तर्पयामि
123. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मृत्यु-प्रशमनीं तर्पयामि

124. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विघ्न-निवारिणीं तर्पयामि
125. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाङ्गसुंदरीं तर्पयामि
126. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सौभाग्य-दायिनीं तर्पयामि
127. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि
128. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलोत्तीर्ण-योगिनीं तर्पयामि
129. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञां तर्पयामि
130. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-शक्तिं तर्पयामि
131. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वैश्वर्य-प्रदां तर्पयामि
132. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-ज्ञान-मयीं तर्पयामि
133. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-व्याधि-विनाशिनीं तर्पयामि
134. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाधार-स्वरुपां तर्पयामि
135. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-पाप-हरां तर्पयामि
136. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्द-मयीं तर्पयामि
137. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रक्षा-स्वरुपिणीं तर्पयामि
138. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेप्सितप्रदां तर्पयामि
139. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि
140. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ निगर्भ-योगिनीं तर्पयामि
141. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशिनीं तर्पयामि
142. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वरीं तर्पयामि
143. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मोदिनीं तर्पयामि
144. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विमलां तर्पयामि
145. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अरुणां तर्पयामि
146. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ जयिनीं तर्पयामि
147. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेश्वरीं तर्पयामि
148. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौलिनीं तर्पयामि
149. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि
150. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रहस्य-योगिनी तर्पयामि
151. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बाणिनीं तर्पयामि
152. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चापिनीं तर्पयामि
153. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ पाशिनीं तर्पयामि
154. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अंकुशिनीं तर्पयामि

155. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-कामेश्वरीं तर्पयामि
156. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-वज्रेश्वरीं तर्पयामि
157. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-भगमालिनीं तर्पयामि
158. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-श्रीसुन्दरीं तर्पयामि
159. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि
160. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अतिरहस्य-योगिनीं तर्पयामि
161. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्री-महाभट्टारिकां तर्पयामि
162. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिनीं तर्पयामि
163. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परापर-रहस्य-योगिनीं तर्पयामि
164. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरां तर्पयामि
165. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरेशीं तर्पयामि
166. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर-सुन्दरीं तर्पयामि
167. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर-वासिनीं तर्पयामि
168. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराश्रियं तर्पयामि
169. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर-मालिनीं तर्पयामि
170. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरासिद्धां तर्पयामि
171. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराम्बमहा-त्रिपुर-सुन्दरीं तर्पयामि
172. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महेश्वरीं तर्पयामि
173. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-राज्ञीं तर्पयामि
174. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-शक्तिं तर्पयामि
175. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-गुप्तां तर्पयामि
176. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महाज्ञप्तां तर्पयामि
177. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महानन्दां तर्पयामि
178. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-स्पन्दां तर्पयामि
179. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महाशयां तर्पयामि
180. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-श्रीचक्र-नगर-साम्राज्ञीं तर्पयामि
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॐ।। 1754

जप-समर्पण

गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
त्वत्प्रसादान्मे देवि! सिद्धिर्भवति महेश्वरि।

शक्ति-जयान्त-माला

शुक्लपक्ष की पञ्चमी 5   'ह्रीं'   कृष्णपक्ष एकादशी 11

विनियोग - अस्य श्री शक्ति-जयान्त-माला-मन्त्रस्य वागिन्द्रियाधिष्ठायि-अंशु-मदादित्य ऋषिः। पंक्तिश्छन्दः। सात्विक-ह्रींकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-हृदय-कामेश्वराङ्क-निलया श्रीहृल्लेखा-ललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। वाक्-सिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास :- वागिन्द्रियाधिष्ठायि-अंशु-मदादित्य ऋषये नमः शिरसि।
पंक्तिश्छन्द से नमः मुखे। सात्विक-ह्रींकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-हृदय-कामेश्वराङ्क-निलया श्रीहृल्लेखा-ललिता महात्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। खड्ग-सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कराङ्ग-न्याय : ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यासः ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुं। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

घ्यान : वाक्-सिद्धिर्द्विविधा प्रोक्ता शापानुग्रह-कारिणी।
महा-कवित्य-रूपा च भक्तस्तेन द्वयास्पदः।।

मानस-पूजा -

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीकामेश्वराङ्क-निलया-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः

हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीकामेश्वराङ्क-निलया-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः

यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीकामेश्वराङ्क-निलया-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः

रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीकामेश्वराङ्क-निलया-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः

वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीकामेश्वराङ्क-निलया-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः

शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीकामेश्वराङ्क-निलया-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः

माला पारायण

1. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दरी जय जय
2. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हृदय-देवि जय जय
3. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिरो-देवि जय जय
4. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिखा-देवि जय जय
5. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कवच-देवि जय जय
6. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नेत्र-देवि जय जय
7. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अस्त्र-देवि जय जय
8. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वरि जय जय
9. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भग-मालिनि जय जय
10. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्य-क्लिन्ने जय जय
11. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भेरुण्डे जय जय
12. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वह्निवासिनि जय जय
13. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-वज्रेश्वरि जय जय
14. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिव-दूति जय जय
15. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्वरिते जय जय
16. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुल-सुन्दरि जय जय
17. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्ये जय जय
18. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नील-पताके जय जय
19. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विजये जय जय
20. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मङ्गले जय जय
21. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ज्वाला-मालिनी जय जय
22. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्रे जय जय
23. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-नित्ये जय जय
24. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परमेश्वर-परमेश्वरि जय जय
25. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मित्रीश-मयि जय जय
26. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ षष्ठीश-मयि जय जय
27. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ उड्डीश-मयि जय जय
28. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चर्यानाथ-मयि जय जय
29. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लोपामुद्रा-मयि जय जय
30. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अगस्त्य-मयि जय जय

31. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ काल-तापन-मयि जय जय
32. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धर्माचार-मयि जय जय
33. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मुक्तकेशीश्वर-मयि जय जय
34. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ दीप-कला-नाथ-मयि जय जय
35. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विष्णु-देव-मयि जय जय
36. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रभाकर-देव-मयि जय जय
37. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ तेजो-देव-मयि जय जय
38. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मनोज-देव-मयि जय जय
39. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कल्याण-देव-मयि जय जय
40. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रत्न-देव-मयि जय जय
41. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वासुदेव-मयि जय जय
42. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीरामानन्द-मयि जय जय
43. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अणिमा-सिद्धे जय जय
44. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लघिमा-सिद्धे जय जय
45. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महिमा-सिद्धे जय जय
46. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ईशित्व-सिद्धे जय जय
47. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशित्व-सिद्धे जय जय
48. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राकाम्य-सिद्धे जय जय
49. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भुक्ति-सिद्धे जय जय
50. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इच्छा-सिद्धे जय जय
51. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राप्ति-सिद्धे जय जय
52. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-काम-सिद्धे जय जय
53. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ब्राह्मि जय जय
54. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेश्वरि जय जय
55. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौमारि जय जय
56. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वैष्णवि जय जय
57. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वाराहि जय जय
58. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेन्द्रि जय जय
59. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चामण्डे जय जय
60. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्मि जय जय
61. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-संक्षोभिणि जय जय

62. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विद्राविणि जय जय
63. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिणि जय जय
64. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-वशङ्करि जय जय
65. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिनि जय जय
66. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-महांकुशे जय जय
67. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-खेचरि जय जय
68. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-बीजे जय जय
69. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-योने जय जय
70. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-त्रिखण्डे जय जय
71. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रैलोक्य-मोहन-चक्र स्वामिनि जय जय
72. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रकट-योगिनि जय जय
73. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामाकर्षिणि जय जय
74. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बुद्ध्याकर्षिणि जय जय
75. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अहङ्काराकर्षिणि जय जय
76. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शब्दाकर्षिणी जय जय
77. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्पर्शाकर्षिणि जय जय
78. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रुपाकर्षिणी जय जय
79. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रसाकर्षिणि जय जय
80. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गन्धाकर्षिणी जय जय
81. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्ताकर्षिणि जय जय
82. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धैर्याकर्षिणि जय जय
83. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्मृत्याकर्षिणि जय जय
84. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नामाकर्षिणि जय जय
85. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बीजाकर्षिणि जय जय
86. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आत्माकर्षिणि जय जय
87. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अमृताकर्षिणि जय जय
88. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शरीराकर्षिणि जय जय
89. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाशापरिपूरक-चक्र-स्वामिनि जय जय
90. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्त-योगिनि जय जय
91. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-कुसुमे जय जय
92. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मेखले जय जय

93. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मदने जय जय
94. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मदनातुरे जय जय
95. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-रेखे जय जय
96. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-वेगिनि जय जय
97. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गांकुशे जय जय
98. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मालिनि जय जय
99. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिनि जय जय
100. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्ततर-योगिनि जय जय
101. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-संक्षोभिणि जय जय
102. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विद्राविणि जय जय
103. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिणि जय जय
104. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाह्लादिनि जय जय
105. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सम्मोहिनि जय जय
106. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वस्तम्भिनि जय जय
107. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-जृम्भिणि जय जय
108. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-वशंकरि जय जय
109. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रञ्जिनि जय जय
110. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिनि जय जय
111. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थ-साधिनि जय जय
112. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सम्पत्ति-पूरिणि जय जय
113. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मंत्र-मयि जय जय
114. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-द्वन्द्व-क्षयंकरि जय जय
115. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सौभाग्यदायकचक्र-स्वामिनि जय जय
116. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सम्प्रदाय-योगिनि जय जय
117. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सिद्धि-प्रदे जय जय
118. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सम्पत्प्रदे जय जय
119. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-प्रियङ्करि जय जय
120. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मंगल-कारिणि जय जय
121. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-काम-प्रदे जय जय
122. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-दुःख-विमोचिनि जय जय
123. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मृत्यु-प्रशमिनि जय जय

124. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विघ्न-निवारिणि जय जय
125. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाङ्गसुंदरि जय जय
126. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सौभाग्य-दायिनि जय जय
127. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिनि जय जय
128. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलोत्तीर्ण-योगिनि जय जय
129. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञे जय जय
130. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-शक्ते जय जय
131. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वैश्वर्य-प्रदे जय जय
132. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-ज्ञान-मयि जय जय
133. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-व्याधि-विनाशिनि जय जय
134. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाधार-स्वरूपे जय जय
135. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-पाप-हरे जय जय
136. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्द-मयि जय जय
137. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रक्षा-स्वरुपिणि जय जय
138. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेप्सितप्रदे जय जय
139. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिनि जय जय
140. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ निगर्भ-योगिनि जय जय
141. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशिनि जय जय
142. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वरि जय जय
143. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मोदिनि जय जय
144. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विमले जय जय
145. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अरुणे जय जय
146. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ जयिनि जय जय
147. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेश्वरि जय जय
148. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौलिनि जय जय
149. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रोग हर चक्र स्वामिनि जय जय
150. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रहस्य-योगिनि जय जय
151. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बाणिनि जय जय
152. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चापिनि जय जय
153. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ पाशिनि जय जय
154. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अंकुशिनि जय जय

155. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-कामेश्वरि जय जय
156. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-वज्रेश्वरि जय जय
157. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-भगमालिनि जय जय
158. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-श्रीसुन्दरि जय जय
159. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वमिनि जय जय
160. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अतिरहस्य-योगिनि जय जय
161. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीमहाभट्टारिके जय जय
162. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिनि जय जय
163. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परापर-रहस्य-योगिनि जय जय
164. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरे जय जय
165. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरेशि जय जय
166. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर-सुन्दरि जय जय
167. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर-वासिनि जय जय
168. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराश्री जय जय
169. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर-मालिनि जय जय
170. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरासिद्धे जय जय
171. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराम्बमहा-त्रिपुर-सुन्दरि जय जय
172. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महेश्वरि जय जय
173. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-राज्ञि जय जय
174. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-शक्ते जय जय
175. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-गुप्ते जय जय
176. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महाज्ञप्ते जय जय
177. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महानन्दे जय जय
178. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-स्पन्दे जय जय
179. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महाशये जय जय
180. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-श्रीचक्र-नगर-साम्राज्ञि जय जय
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं।।175

जप-समर्पण

गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
त्वत्प्रसादान्मे देवि! सिद्धिर्भवति महेश्वरि।

शिव-सम्बुद्ध्यन्त-माला

शुक्लपक्ष की षष्ठी को

'ह'

कृष्णपक्षकी दशमी को

सर्वप्रथम तान्त्रिक पञ्चांङ्ग की सहायता से तान्त्रिक सङ्कल्प करे।

विनियोग - अस्य श्री शिव-सम्बुद्ध्यन्त-माला-मन्त्रस्य घ्राणेन्द्रियाधिष्ठायि-भगादित्य ऋषिः। त्रिष्टुप् छन्दः। भोगद-हकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-हलिनी-ललिता-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-महा-भट्टारक देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः । सौः कीलकं। देह-शुद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- घ्राणेन्द्रियाधिष्ठायि-भगादित्य ऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। भोगद- हकार- भट्टारक-पीठ-स्थित-हलिनी-ललिता-मण्डिताङ्क-श्रीहलिक-कामेश्वर-महा-भट्टारकाय देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। देह-शुद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कराङ्गन्यास :- ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यास :- ह्रां हृदयाय नमः । ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचायहुम् । ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान :- तथा सिद्ध्यति ते भक्तो यच्छरीरस्य पार्वति।
तप्त-काञ्चन-गौरस्य कदापि क्वापि न क्षयः।।

मानस-पूजा :-

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः।

ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः।

ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क-

श्रीकामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः।
ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः।
ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः।
ॐ शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क-श्रीकामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः।

माला पारायण

1. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर–सुन्दर
2. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हृदय–देव
3. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिरो–देव
4. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिखा–देव
5. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कवच–दैव
6. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नेत्र–देव
7. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अस्त्र–देव
8. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वर
9. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भगमालिन्
10. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्यक्लिन्न
11. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भेरुण्ड
12. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वह्निवासिन्
13. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा–वज्रेश्वर
14. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिव–दूत
15. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्वरित
16. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुल–सुन्दर
17. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्य
18. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नील–पताक
19. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विजय
20. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमङ्गल
21. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ज्वालामालिन्
22. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्र
23. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महानित्य
24. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परमेश्वर–परमेश्वर
25. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मित्रीश–मय
26. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ षष्ठीश–मय
27. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ उड्डीश–मय
28. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चर्यानाथ–मय
29. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लोपामुद्रा–मय
30. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अगस्त्य–मय

31. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ काल-तापन-मय
32. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धर्माचार-मय
33. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मुक्त केशीश्वर-मय
34. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ दीप-कला-नाथ-मय
35. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विष्णु-देव-मय
36. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रभाकर-देव-मय
37. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ तेजो-देव-मय
38. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मनोज-देव-मय
39. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कल्याण-देव-मय
40. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रत्न-देव-मय
41. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वासुदेव-मय
42. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीरामानन्द-मय
43. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अणिमा-सिद्ध
44. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लघिमा-सिद्ध
45. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महिमा-सिद्ध
46. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ईशित्व-सिद्ध
47. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशित्व-सिद्ध
48. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राकाम्य-सिद्ध
49. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भुक्ति-सिद्ध
50. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इच्छा-सिद्ध
51. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राप्ति-सिद्ध
52. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-काम-सिद्ध
53. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ब्राह्म
54. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेश्वर
55. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौमार
56. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वैष्णव
57. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वाराह
58. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेन्द्र
59. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चामुण्ड
60. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्मि
61. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-संक्षोभिन्

62. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विद्राविन्
63. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिन्
64. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-वशङ्कर
65. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादन्
66. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-महांकुश
67. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वखेचर
68. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-बीज
69. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-योने
70. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-त्रिखण्ड
71. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रैलोक्य-मोहन-चक्र स्वामिन्
72. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रकट-योगिन्
73. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामाकर्षण
74. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बुद्ध्याकर्षण
75. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अहङ्काराकर्षण
76. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शब्दाकर्षण
77. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्पर्शाकर्षण
78. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रुपाकर्षण
79. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रसाकर्षण
80. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गन्धाकर्षण
81. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्ताकर्षण
82. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धैर्याकर्षण
83. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्मृत्याकर्षण
84. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नामाकर्षण
85. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बीजाकर्षण
86. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आत्माकर्षण
87. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अमृताकर्षण
88. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शरीराकर्षण
89. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाशापरिपूरक-चक्र-स्वामिन्
90. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्त-योगिन्
91. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-कुसुम
92. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मेखल

93. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मदन
94. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मदनातुर
95. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-रेख
96. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-वेगिन्
97. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गांकुश
98. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मालिन्
99. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिन्
100. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्ततर-योगिन्
101. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-संक्षोभिन्
102. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विद्राविन्
103. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिन्
104. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाह्लादिन्
105. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सम्मोहिन्
106. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-स्तम्भिन्
107. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-जृम्भिन्
108. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-वशंकर
109. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रञ्जिन्
110. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिन्
111. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थ-साधिन्
112. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सम्पत्ति-पूरण
113. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मन्त्र-मय
114. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-द्वन्द्व-क्षयंकर
115. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सौभाग्यदायकचक्र-स्वामिन्
116. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सम्प्रदाय-योगिन्
117. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सिद्धि-प्रद
118. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सम्पत्प्रद
119. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-प्रियङ्कर
120. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मंगल-कारिन्
121. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-काम-प्रद
122. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-दुःख-विमोचन्
123. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मृत्यु-प्रशमन्

124. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विघ्न-निवारिन्
125. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाङ्गसुंदर
126. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सौभाग्य-दायिन्
127. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिन्
128. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलोत्तीर्ण-योगिन्
129. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञ
130. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-शक्त
131. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वैश्वर्य-प्रद
132. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-ज्ञान-मय
133. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-व्याधि-विनाशिन्
134. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाधार-स्वरूप
135. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-पाप-हर
136. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्द-मय
137. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रक्षा-स्वरूपिन्
138. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेप्सिसतप्रद
139. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिन्
140. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ निगर्भ-योगिन्
141. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशिन्
142. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वर
143. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मोदिन्
144. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विमल
145. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अरुण
146. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ जयिन्
147. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेश्वर
148. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौलिन्
149. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिन्
150. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रहस्य-योगिन्
151. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बाणिन्
152. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चापिन्
153. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ पाशिन्
154. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अंकुशिन्

155. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-कामेश्वर
156. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-वज्रेश्वर
157. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-भगमालिन्
158. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-श्रीसुन्दर
159. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिन्
160. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अति-रहस्य-योगिन्
161. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्री-महाभट्टारक
162. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिन्
163. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परापर-रहस्य-योगिन्
164. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर
165. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरेश
166. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर-सुन्दर
167. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर-वासिन्
168. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराश्री
169. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर-मालिन्
170. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरासिद्ध
171. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराम्बमहा-त्रिपुर-सुन्दर
172. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महेश्वर
173. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-राज
174. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-शक्त
175. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-गुप्त
176. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महाज्ञप्त
177. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महानन्द
178. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-स्पन्द
179. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महाशय
180. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-श्रीचक्र-नगर-सम्राज
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॐ ऐं ।। 981

जप-समर्पण

गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
त्वत्प्रसादान्मे देव! सिद्धिर्भवति महेश्वर।

शिव नमोऽन्त माला

शुक्लपक्ष की सप्तमी को — **'स'** — कृष्णपक्ष नवमी 9

सर्वप्रथम तान्त्रिक पञ्चाङ्ग की सहायता से तान्त्रिक सङ्कल्प करें-

विनियोग - अस्य श्री शिव-नमोऽन्त-माला-मन्त्रस्य जिह्वेन्द्रियाधिष्ठायि-इन्द्रादित्य ऋषिः। जगती छन्दः। भोगद-सकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-सरस्वती-ललिता-मण्डिताङ्क-सर्वज्ञ-कामेश्वर-महा-भट्टारक देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। लौह-सिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास :- जिह्वेन्द्रियाधिष्ठायि-इन्द्रादित्य ऋषये नमः शिरसि। जगती छन्दसे नुमः मुखे। भोगद-सकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-सरस्वती-ललिता-मण्डिताङ्क-सर्वज्ञ-कामेश्वर-महाभट्टारकाय देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। बिल-शुद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कराङ्ग-न्यास : ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यास : ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुँ। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

घ्यान : त्वद्-भक्त-स्पर्शनिन लोहोप्यष्ट-विधः शिवे।
काञ्चनी-भावमाप्नोति यथा स्याच्छिव-तुल्यता।

मानस-पूजा –

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः।

ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः।

ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः।

ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः।

ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः।

ॐ शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर-पादुकाभ्यां नमः।

माला पारायण

1. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमिस्त्रपुर-सुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि
2. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हृदय-देवाय नमः पादुकां पूजयामि
3. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिरो-देवाय नमः पादुकां पूजयामि
4. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिखा-देवाय नमः पादुकां पूजयामि
5. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कवच-देवाय नमः पादुकां पूजयामि
6. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नेत्र-देवाय नमः पादुकां पूजयामि
7. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अस्त्र-देवाय नमः पादुकां पूजयामि
8. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
9. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भग-मालिने नमः पादुकां पूजयामि
10. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्य-क्लिन्नाय नमः पादुकां पूजयामि
11. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भेरुण्डाय नमः पादुकां पूजयामि
12. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वह्निवासिने नमः पादुकां पूजयामि
13. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-वज्रेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
14. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिव-दूताय नमः पादुकां पूजयामि
15. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्वरिताय नमः पादुकां पूजयामि
16. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुल-सुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि
17. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्याय नमः पादुकां पूजयामि
18. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नील-पताकाय नमः पादुकां पूजयामि
19. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विजयाय नमः पादुकां पूजयामि
20. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मङ्गलाय नमः पादुकां पूजयामि
21. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ज्वाला-मालिने नमः पादुकां पूजयामि
22. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्राय नमः पादुकां पूजयामि
23. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-नित्याय नमः पादुकां पूजयामि
24. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परमेश्वर-परमेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
25. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मित्रीश-मयाय नमः पादुकां पूजयामि
26. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ षष्ठीय-मयाय नमः पादुकां पूजयामि
27. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ उड्डीश-मयाय नमः पादुकां पूजयामि
28. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चर्यानाथ-मयाय नमः पादुकां पूजयामि
29. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लोपामुद्रा-मयाय नमः पादुकां पूजयामि
30. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अगस्त्य-मयाय नमः पादुकां पूजयामि

31. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ काल-तापन-मयाय नमः पादुकां पूजयामि
32. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धर्माचार-मयाय नमः पादुकां पूजयामि
33. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मुक्त केशीश्वर-मयाय नमः पादुकां पूजयामि
34. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ दीप कला नाथ मयाय नमः पादुकां पूजयामि
35. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विष्णु-देव-मयाय नमः पादुकां पूजयामि
36. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रभाकर-देव-मयाय नमः पादुकां पूजयामि
37. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ तेजो-देव-मयाय नमः पादुकां पूजयामि
38. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मनोज-देव-मयाय नमः पादुकां पूजयामि
39. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कल्याण-देव-मयाय नमः पादुकां पूजयामि
40. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रत्न-देव-मयाय नमः पादुकां पूजयामि
41. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वासुदेव-मयाय नमः पादुकां पूजयामि
42. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीरामानन्द-मयाय नमः पादुकां पूजयामि
43. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अणिमा-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
44. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लघिमा-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
45. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महिमा-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
46. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ईशित्व-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
47. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशित्व-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
48. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राकाम्य-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
49. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भुक्ति-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
50. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इच्छा-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
51. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राप्ति-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
52. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-काम-सिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
53. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ब्राह्माय नमः पादुकां पूजयामि
54. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
55. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौमाराय नमः पादुकां पूजयामि
56. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वैष्णवाय नमः पादुकां पूजयामि
57. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वाराहाय नमः पादुकां पूजयामि
58. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेन्द्राय नमः पादुकां पूजयामि
59. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चामुण्डाय नमः पादुकां पूजयामि
60. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्याय नमः पादुकां पूजयामि
61. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-संक्षोभिणे नमः पादुकां पूजयामि

62. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विद्राविणे नमः पादुकां पूजयामि
63. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिणे नमः पादुकां पूजयामि
64. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-वशङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि
65. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिने नमः पादुकां पूजयामि
66. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-महांकुशाय नमः पादुकां पूजयामि
67. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-खेचराय नमः पादुकां पूजयामि
68. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-बीजाय नमः पादुकां पूजयामि
69. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-योनये नमः पादुकां पूजयामि
70. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-त्रिखण्डाय नमः पादुकां पूजयामि
71. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रैलोक्य-मोहन-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
72. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रकट-योगिने नमः पादुकां पूजयामि
73. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
74. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बुद्ध्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
75. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अहङ्काराकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
76. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शब्दाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
77. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्पर्शाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि तर्पयामि
78. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रुपाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
79. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रसाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
80. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गन्धाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
81. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्ताकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
82. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धैर्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
83. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्मृत्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
84. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नामाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
85. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बीजाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
86. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आत्माकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
87. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अमृताकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
88. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शरीराकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
89. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाशापरिपूरक-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
90. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्त-योगिने नमः पादुकां पूजयामि
91. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-कुसुमाय नमः पादुकां पूजयामि
92. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मेखलाय नमः पादुकां पूजयामि

93. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग–मदनाय नमः पादुकां पूजयामि
94. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग–मदनातुराय नमः पादुकां पूजयामि
95. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग–रेखाय नमः पादुकां पूजयामि
96. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग–वेगिने नमः पादुकां पूजयामि
97. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गांकुशाय नमः पादुकां पूजयामि
98. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग–मालिने नमः पादुकां पूजयामि
99. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व–संक्षोभण–चक्र–स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
100. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्ततर–योगिने नमः पादुकां पूजयामि
101. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व–संक्षोभिणे नमः पादुकां पूजयामि
102. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व–विद्राविणे नमः पादुकां पूजयामि
103. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिणे नमः पादुकां पूजयामि
104. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाह्लादिने नमः पादुकां पूजयामि
105. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व–सम्मोहिने नमः पादुकां पूजयामि
106. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व–स्तम्भिने नमः पादुकां पूजयामि
107. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व–जृम्भिणे नमः पादुकां पूजयामि
108. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व–वशंकराय नमः पादुकां पूजयामि
109. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व–रञ्जिने नमः पादुकां पूजयामि
110. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिने नमः पादुकां पूजयामि
111. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थ–साधिने नमः पादुकां पूजयामि
112. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व–सम्पत्ति–पूरणाय नमः पादुकां पूजयामि
113. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व–मन्त्र–मयाय नमः पादुकां पूजयामि
114. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व–द्वन्द्व–क्षयंकराय नमः पादुकां पूजयामि
115. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व–सौभाग्यदायकचक्र–स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
116. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सम्प्रदाय–योगिने नमः पादुकां पूजयामि
117. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व–सिद्धि–प्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
118. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व–सम्पत्प्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
119. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व–प्रियङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि
120. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व–मंगल–कारिणे नमः पादुकां पूजयामि
121. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व–क़ाम–प्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
122. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व–दुःख–विमोचिने नमः पादुकां पूजयामि
123. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व–मृत्यु–प्रशमनाय नमः पादुकां पूजयामि

124. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विघ्न-निवारणाय नमः पादुकां पूजयामि
125. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाङ्गसुंदराय नमः पादुकां पूजयामि
126. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सौभाग्य-दायिने नमः पादुकां पूजयामि
127. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
128. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलोत्तीर्ण-योगिने नमः पादुकां पूजयामि
129. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञाय नमः पादुकां पूजयामि
130. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-शक्तये नमः पादुकां पूजयामि
131. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वैश्वर्य-प्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
132. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-ज्ञान-मयाय नमः पादुकां पूजयामि
133. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-व्याधि-विनाशिने नमः पादुकां पूजयामि
134. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाधार-स्वरूपाय नमः पादुकां पूजयामि
135. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-पाप-हराय नमः पादुकां पूजयामि
136. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्द-मयाय नमः पादुकां पूजयामि
137. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रक्षा-स्वरूपिणे नमः पादुकां पूजयामि
138. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेप्सितप्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
139. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
140. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ निगर्भ-योगिने नमः पादुकां पूजयामि
141. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशिने नमः पादुकां पूजयामि
142. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
143. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मोदिने नमः पादुकां पूजयामि
144. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विमलाय नमः पादुकां पूजयामि
145. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अरुणाय नमः पादुकां पूजयामि
146. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ जयिने नमः पादुकां पूजयामि
147. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
148. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौलिने नमः पादुकां पूजयामि
149. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
150. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रहस्य-योगिने नमः पादुकां पूजयामि
151. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बाणिने नमः पादुकां पूजयामि
152. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चापिने नमः पादुकां पूजयामि
153. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ पाशिने नमः पादुकां पूजयामि
154. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अंकुशिने नमः पादुकां पूजयामि

155. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा–कामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
156. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा–वज्रेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
157. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा–भगमालिने नमः पादुकां पूजयामि
158. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा–श्रीसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि
159. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
160. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अतिरहस्य–योगिने नमः पादुकां पूजयामि
161. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्री–महाभट्टारकाय नमः पादुकां पूजयामि
162. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्द–मय–चक्र–स्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
163. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परापर–रहस्य–योगिने नमः पादुकां पूजयामि
164. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराय नमः पादुकां पूजयामि
165. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरेशाय नमः पादुकां पूजयामि
166. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर–सुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि
167. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर–वासिने नमः पादुकां पूजयामि
168. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराश्रिये नमः पादुकां पूजयामि
169. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर–मालिने नमः पादुकां पूजयामि
170. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरासिद्धाय नमः पादुकां पूजयामि
171. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराम्बमहा–त्रिपुर–सुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि
172. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा–महेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
173. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा–महा–राजाय नमः पादुकां पूजयामि
174. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा–महा–शक्तये नमः पादुकां पूजयामि
175. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा–महा–गुप्ताय नमः पादुकां पूजयामि
176. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा–महाज्ञप्तये नमः पादुकां पूजयामि
177. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा–महानन्दाय नमः पादुकां पूजयामि
178. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा–महा–स्पन्दाय नमः पादुकां पूजयामि
179. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा–महाशयाय नमः पादुकां पूजयामि
180. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा–महा–श्रीचक्र–नगर–सम्राजाय नमः पादुकां पूजयामि

नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ।।

जप–समर्पण

गुह्याति–गुह्य–गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
त्वत्प्रसादान्मे देव! सिद्धिर्भवति महेश्वर।

शिव-स्वाहान्त-माला

'क'

शुक्लपक्ष की अष्टमी 8 को

कृष्णपक्ष की अष्टमी 8 को

सर्वप्रथम तान्त्रिक पञ्चाङ्ग की सहायता से तान्त्रिक संकल्प करें-

विनियोग - अस्य श्री शिव-स्वाहान्त-माला-मन्त्रस्य चक्षुरिन्द्रियाधिष्ठायि-विवस्वदादित्य ऋषिः। अति-जगती छन्दः। तामस-ककार-भट्टारक-पीठ-स्थित-कमला-ललिता-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-महा-भट्टारक देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। अणिमाद्यष्टैश्वर्य-सिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास :- चक्षुरिन्द्रियाधिष्ठायि-विवस्वदादित्य ऋषये नमः शिरसि। जगती छन्दसे नमः मुखे। तामस-ककार-भट्टारक-पीठ-स्थित-कमला-ललिता-मण्डिताङ्क-श्रीकाल-मर्दन-कामेश्वर-महाभट्टारक देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। अणिमाद्यष्टैश्वर्य-सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कराङ्ग-न्यास : ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतल- करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यास : ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुँ। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान : येऽष्टाणुत्व-महत्वाद्याः स्वेच्छा-मात्रेण कल्पिताः।
तव भक्त-शरीराणां ते स्युर्नैसर्गिका गुणाः।।

मानस-पूजा –

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर पादुकाभ्यां नमः

ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर पादुकाभ्यां नमः

ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर पादुकाभ्यां नमः

ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर पादुकाभ्यां नमः

ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर पादुकाभ्यां नमः

ॐ शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर पादुकाभ्यां नमः

माला पारायण

1. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दराय स्वाहा
2. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हृदय-देवाय स्वाहा
3. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिरो-देवाय स्वाहा
4. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिखा-देवाय स्वाहा
5. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कवच-देवाय स्वाहा
6. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नेत्र-देवाय स्वाहा
7. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अस्त्र-देवाय स्वाहा
8. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वराय स्वाहा
9. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भग-मालिने स्वाहा
10. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्य-क्लिन्नाय स्वाहा
11. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भेरुण्डाय स्वाहा
12. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वह्निवासिने स्वाहा
13. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-वज्रेश्वराय स्वाहा
14. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिव-दूताय स्वाहा
15. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्वरिताय स्वाहा
16. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुल-सुन्दराय स्वाहा
17. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्याय स्वाहा
18. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नील-पताकाय स्वाहा
19. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विजयाय स्वाहा
20. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मङ्गलाय स्वाहा
21. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ज्वाला-मालिने स्वाहा
22. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्राय स्वाहा
23. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-नित्याय स्वाहा
24. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परमेश्वर-परमेश्वराय स्वाहा
25. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मित्रीश-मयाय स्वाहा
26. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ षष्ठीश-मयाय स्वाहा
27. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ उड्डीश-मयाय स्वाहा
28. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चर्यानाथ-मयाय स्वाहा
29. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लोपामुद्रा-मयाय स्वाहा
30. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अगस्त्य-मयाय स्वाहा

31. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ काल-तापन-मयाय स्वाहा
32. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धर्माचार-मयाय स्वाहा
33. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मुक्तकेशीश्वर-मयाय स्वाहा
34. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ दीप-कला-नाथ-मयाय स्वाहा
35. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विष्णु-देव-मयाय स्वाहा
36. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रभाकर-देव-मयाय स्वाहा
37. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ तेजो-देव-मयाय स्वाहा
38. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मनोज-देव-मयाय स्वाहा
39. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कल्याण-देव-मयाय स्वाहा
40. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रत्न-देव-मयाय स्वाहा
41. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वासुदेव-मयाय स्वाहा
42. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीरामानन्द-मयाय स्वाहा
43. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अणिमा-सिद्धये स्वाहा
44. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लघिमा-सिद्धये स्वाहा
45. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महिमा-सिद्धये स्वाहा
46. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ईशित्व-सिद्धये स्वाहा
47. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशित्व-सिद्धये स्वाहा
48. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राकाम्य-सिद्धये स्वाहा
49. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भुक्ति-सिद्धये स्वाहा
50. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इच्छा-सिद्धये स्वाहा
51. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राप्ति-सिद्धये स्वाहा
52. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-काम-सिद्धये स्वाहा
53. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ब्राह्मय स्वाहा
54. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेश्वराय स्वाहा
55. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौमाराय स्वाहा
56. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वैष्णवाय स्वाहा
57. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वाराहाय स्वाहा
58. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेन्द्राय स्वाहा
59. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चामुण्डाय स्वाहा
60. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्माय स्वाहा
61. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-संक्षोभिणे स्वाहा

62. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विद्राविणे स्वाहा
63. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिणे स्वाहा
64. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-वशङ्कराय स्वाहा
65. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिने स्वाहा
66. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-महांकुशाय स्वाहा
67. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-खेचराय स्वाहा
68. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-बीजाय स्वाहा
69. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-योनये स्वाहा
70. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-त्रिखण्डाय स्वाहा
71. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रैलोक्य-मोहन-चक्र स्वामिने स्वाहा
72. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रकट-योगिने स्वाहा
73. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामाकर्षणाय स्वाहा
74. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बुद्ध्याकर्षणाय स्वाहा
75. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अहङ्काराकर्षणाय स्वाहा
76. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शब्दाकर्षणाय स्वाहा
77. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्पर्शाकर्षणाय स्वाहा
78. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रुपाकर्षणाय स्वाहा
79. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रसाकर्षणाय स्वाहा
80. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गन्धाकर्षणाय स्वाहा
81. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्ताकर्षणाय स्वाहा
82. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धैर्याकर्षणाय स्वाहा
83. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्मृत्याकर्षणाय स्वाहा
84. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नामाकर्षणाय स्वाहा
85. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बीजाकर्षणाय स्वाहा
86. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आत्माकर्षणाय स्वाहा
87. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अमृताकर्षणाय स्वाहा
88. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शरीराकर्षणाय स्वाहा
89. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाशापूरक-चक्र-स्वामिने स्वाहा
90. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्त-योगिने स्वाहा
91. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-कुसुमाय स्वाहा
92. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मेखलाय स्वाहा

93. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मदनाय स्वाहा
94. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मदनातुराय स्वाहा
95. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-रेखाय स्वाहा
96. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-वेगिने स्वाहा
97. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गांकुशाय स्वाहा
98. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमालिने स्वाहा
99. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिने स्वाहा
100. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्ततर-योगिने स्वाहा
101. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-संक्षोभिणे स्वाहा
102. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विद्राविणे स्वाहा
103. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिणे स्वाहा
104. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाह्लादिने स्वाहा
105. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सम्मोहिने स्वाहा
106. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-स्तम्भिने स्वाहा
107. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-जृम्भिणे स्वाहा
108. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-वशंकराय स्वाहा
109. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रञ्जिने स्वाहा
110. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिने स्वाहा
111. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थ-साधिने स्वाहा
112. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सम्पत्ति-पूरणाय स्वाहा
113. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मंत्र-मयाय स्वाहा
114. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-द्वन्द्व-क्षयंकराय स्वाहा
115. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सौभाग्यदायकचक्र-स्वामिने स्वाहा
116. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सम्प्रदाय-योगिने स्वाहा
117. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सिद्धि-प्रदाय स्वाहा
118. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सम्पत्प्रदाय स्वाहा
119. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-प्रियङ्कराय स्वाहा
120. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मंगल-कारिणे स्वाहा
121. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-काम-प्रदाय स्वाहा
122. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-दुःख-विमोचिने स्वाहा
123. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मृत्यु-प्रशमनाय स्वाहा

124. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विघ्न-निवारिणे स्वाहा
125. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाङ्गसुंदराय स्वाहा
126. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सौभाग्य-दायिने स्वाहा
127. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिने स्वाहा
128. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलोत्तीर्ण-योगिने स्वाहा
129. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा
130. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-शक्तये स्वाहा
131. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वैश्वर्य-प्रदाय स्वाहा
132. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-ज्ञान-मयाय स्वाहा
133. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-व्याधि-विनाशिने स्वाहा
134. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाधार-स्वरूपाय स्वाहा
135. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-पाप-हराय स्वाहा
136. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्द-मयाय स्वाहा
137. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रक्षा-स्वरूपिणे स्वाहा
138. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेप्सितप्रदाय स्वाहा
139. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिने स्वाहा
140. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ निगर्भ-योगिने स्वाहा
141. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशिने स्वाहा
142. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वराय स्वाहा
143. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मोदिने स्वाहा
144. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विमलाय स्वाहा
145. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अरुणाय स्वाहा
146. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ जयिने स्वाहा
147. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेश्वराय स्वाहा
148. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौलिने स्वाहा
149. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिने स्वाहा
150. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रहस्य-योगिने स्वाहा
151. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बाणिने स्वाहा
152. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चापिने स्वाहा
153. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ पाशिने स्वाहा
154. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अंकुशिने स्वाहा

155. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-कामेश्वराय स्वाहा
156. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-वज्रेश्वराय स्वाहा
157. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-भगमालिने स्वाहा
158. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-श्रीसुन्दराय स्वाहा
159. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वामिने स्वाहा
160. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अतिरहस्य-योगिने स्वाहा
161. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीमहाभट्टारकाय स्वाहा
162. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिने स्वाहा
163. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परापर-रहस्य-योगिने स्वाहा
164. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराय स्वाहा
165. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरेशाय स्वाहा
166. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर-सुन्दराय स्वाहा
167. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर-वासिने स्वाहा
168. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराश्रिये स्वाहा
169. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर-मालिने स्वाहा
170. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरासिद्धाय स्वाहा
171. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराम्बमहा-त्रिपुर-सुन्दराय स्वाहा
172. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महेश्वराय स्वाहा
173. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-राजाय स्वाहा
174. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-शक्तये स्वाहा
175. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-गुप्ताय स्वाहा
176. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महाज्ञप्तये स्वाहा
177. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महानन्दाय स्वाहा
178. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-स्पन्दाय स्वाहा
179. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महाशयाय स्वाहा
180. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-श्रीचक्र-नगर-सम्राजाय स्वाहा
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॐ।।

जप-समर्पण

गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
त्वत्प्रसादान्मे देव! सिद्धिर्भवति महेश्वर।

शिव-तर्पणान्त-माला

'ह'

शुक्लपक्ष की नवमी 9 को | कृष्णपक्ष की सप्तमी 7 को

सर्वप्रथम तान्त्रिक पञ्चाङ्ग की सहायता से तान्त्रिक सङ्कल्प करें-

विनियोग - अस्य श्री शिव-तर्पणान्त-माला-मन्त्रस्य त्वगिन्द्रयाधिष्ठायि-पूषादित्य ऋषिः। श्क्वरी छन्दः। मोक्षद-हकार-भट्टारक-पीठ-स्थित-हरवल्लभा-ललिता-मण्डिताङ्क -हरनाथ-कामेश्वर-महा-भट्टारक देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। बिल-सिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास :- त्वगिन्द्रयाधिष्ठायि-पूषादित्य ऋषये नमः शिरसि। श्क्वरी छन्दसे नमः मुखे। मोक्षद-हकार-भट्टारक -पीठ-स्थित-हरवल्लभा-ललिता-मण्डिताङ्क -हरनाथ-कामेश्वर-महाभट्टारकाय देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। बिल-सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कराङ्ग-न्यास : ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतल- करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यास : ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुं। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान : शरीरमर्थं प्राणांश्च निवेद्य निज-भृत्य-वत्।
तव भक्तान् निषेवन्ते वशी-भूता नृपादयः ।।

मानस-पूजा -

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर पादुकाभ्यां नमः

ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर पादुकाभ्यां नमः

ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर पादुकाभ्यां नमः

ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर पादुकाभ्यां नमः

ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर पादुकाभ्यां नमः

ॐ शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर पादुकाभ्यां नमः

माला पारायण

1. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दरं तर्पयामि
2. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हृदय-देवं तर्पयामि
3. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिरो-देवं तर्पयामि
4. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिखा-देवं तर्पयामि
5. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कवच-देवं तर्पयामि
6. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नेत्र-देवं तर्पयामि
7. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अस्त्र-देवं तर्पयामि
8. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वरं तर्पयामि
9. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भग-मालिनं तर्पयामि
10. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्य-क्लिन्नं तर्पयामि
11. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भेरुण्डं तर्पयामि
12. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वह्निवासिनं तर्पयामि
13. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-वज्रेश्वरं तर्पयामि
14. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिव-दूतं तर्पयामि
15. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्वरितं तर्पयामि
16. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुल-सुन्दरं तर्पयामि
17. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्यं तर्पयामि
18. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नील-पताकं तर्पयामि
19. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विजयं तर्पयामि
20. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मङ्गलं तर्पयामि
21. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ज्वाला-मालिनं तर्पयामि
22. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्रं तर्पयामि
23. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-नित्यं तर्पयामि
24. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परमेश्वर-परमेश्वरं तर्पयामि
25. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मित्रीश-मयं तर्पयामि
26. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ षष्ठीश-मयं तर्पयामि
27. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ उड्डीश-मयं तर्पयामि
28. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चर्यानाथ-मयं तर्पयामि
29. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लोपामुद्रा-मयं तर्पयामि
30. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अगस्त्य-मयं तर्पयामि

31. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ काल-तापन-मयं तर्पयामि
32. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धर्माचार-मयं तर्पयामि
33. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मुक्तकेशीश्वर-मयं तर्पयामि
34. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ दीप-कला-नाथ-मयं तर्पयामि
35. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विष्णु-देव-मयं तर्पयामि
36. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रभाकर-देव-मयं तर्पयामि
37. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ तेजो-देव-मयं तर्पयामि
38. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मनोज-देव-मयं तर्पयामि
39. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कल्याण-देव-मयं तर्पयामि
40. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रत्न-देव-मयं तर्पयामि
41. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वासुदेव-मयं तर्पयामि
42. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीरामानन्द-मयं तर्पयामि
43. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अणिमा-सिद्धं तर्पयामि
44. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लघिमा-सिद्धं तर्पयामि
45. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महिमा-सिद्धं तर्पयामि
46. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ईशित्व-सिद्धं तर्पयामि
47. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशित्व-सिद्धं तर्पयामि
48. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राकाम्य-सिद्धं तर्पयामि
49. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भुक्ति-सिद्धं तर्पयामि
50. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इच्छा-सिद्धं तर्पयामि
51. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राप्ति-सिद्धं तर्पयामि
52. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-काम-सिद्धं तर्पयामि
53. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ब्राह्मं तर्पयामि
54. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेश्वरं तर्पयामि
55. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौमारं तर्पयामि
56. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वैष्णवं तर्पयामि
57. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वाराहं तर्पयामि
58. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेन्द्रं तर्पयामि
59. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चामुण्डं तर्पयामि
60. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यं तर्पयामि
61. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-संक्षोभिणं तर्पयामि

62. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विद्राविणं तर्पयामि
63. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षणं तर्पयामि
64. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-वशङ्करं तर्पयामि
65. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिनं तर्पयामि
66. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-महांकुशं तर्पयामि
67. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-खेचरं तर्पयामि
68. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-बीजं तर्पयामि
69. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-योनिं तर्पयामि
70. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-त्रिखण्डं तर्पयामि
71. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रैलोक्य-मोहन-चक्र स्वामिनं तर्पयामि
72. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रकट-योगिनं तर्पयामि
73. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामाकर्षणं तर्पयामि
74. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बुद्ध्याकर्षणं तर्पयामि
75. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अहङ्काराकर्षणं तर्पयामि
76. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शब्दाकर्षणं तर्पयामि
77. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्पर्शाकर्षणं तर्पयामि
78. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रुपाकर्षणं तर्पयामि
79. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रसाकर्षणं तर्पयामि
80. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गन्धाकर्षणं तर्पयामि
81. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्ताकर्षणं तर्पयामि
82. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धैर्याकर्षणं तर्पयामि
83. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्मृत्याकर्षणं तर्पयामि
84. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नामाकर्षणं तर्पयामि
85. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बीजाकर्षणं तर्पयामि
86. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आत्माकर्षणं तर्पयामि
87. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अमृताकर्षणं तर्पयामि
88. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शरीराकर्षणं तर्पयामि
89. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाशापरिपूरक-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि
90. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्त-योगिनं तर्पयामि
91. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-कुसुमं तर्पयामि
92. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मेखलं तर्पयामि

93. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मदनं तर्पयामि
94. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मदनातुरं तर्पयामि
95. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-रेखं तर्पयामि
96. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-वेगिनं तर्पयामि
97. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गांकुशं तर्पयामि
98. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमालिनं तर्पयामि
99. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि
100. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्ततर-योगिनं तर्पयामि
101. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-संक्षोभिणं तर्पयामि
102. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विद्राविणं तर्पयामि
103. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षणं तर्पयामि
104. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाह्लादिनं तर्पयामि
105. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सम्मोहनं तर्पयामि
106. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-स्तम्भिनं तर्पयामि
107. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-जृम्भिणं तर्पयामि
108. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-वशंकरं तर्पयामि
109. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रञ्जिनं तर्पयामि
110. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिनं तर्पयामि
111. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थ-साधिनं तर्पयामि
112. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सम्पत्ति-पूरणं तर्पयामि
113. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मंत्र-मयं तर्पयामि
114. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-द्वन्द्व-क्षयंकरं तर्पयामि
115. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सौभाग्यदायकचक्र-स्वामिनं तर्पयामि
116. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सम्प्रदाय-योगिनं तर्पयामि
117. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सिद्धि-प्रदं तर्पयामि
118. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सम्पत्प्रदं तर्पयामि
119. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-प्रियङ्करं तर्पयामि
120. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मंगल-कारिणं तर्पयामि
121. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-काम-प्रदं तर्पयामि
122. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-दुःख-विमोचिनं तर्पयामि
123. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मृत्यु-प्रशमनं तर्पयामि

124. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विघ्न-निवारिणं तर्पयामि
125. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाङ्गसुंदरं तर्पयामि
126. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सौभाग्य-दायिनं तर्पयामि
127. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि
128. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलोत्तीर्ण-योगिनं तर्पयामि
129. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञं तर्पयामि
130. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-शक्तं तर्पयामि
131. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वैश्वर्य-प्रदं तर्पयामि
132. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-ज्ञान-मयं तर्पयामि
133. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-व्याधि-विनाशिनं तर्पयामि
134. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाधार-स्वरूपं तर्पयामि
135. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-पाप-हरं तर्पयामि
136. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्द-मयं तर्पयामि
137. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रक्षा-स्वरूपिणं तर्पयामि
138. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेप्सितप्रदं तर्पयामि
139. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि
140. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ निगर्भ-योगिनं तर्पयामि
141. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशिनं तर्पयामि
142. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वरं तर्पयामि
143. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मोदिनं तर्पयामि
144. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विमलं तर्पयामि
145. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अरुणं तर्पयामि
146. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ जयिनं तर्पयामि
147. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेश्वरं तर्पयामि
148. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौलिनं तर्पयामि
149. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि
150. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रहस्य-योगिनं तर्पयामि
151. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बाणिनं तर्पयामि
152. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चापिनं तर्पयामि
153. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ पाशिनं तर्पयामि
154. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अंकुशिनं तर्पयामि

155. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-कामेश्वरं तर्पयामि
156. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-वज्रेश्वरं तर्पयामि
157. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-भगमालिनं तर्पयामि
158. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-श्रीसुन्दरं तर्पयामि
159. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वमिनं तर्पयामि
160. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अतिरहस्य-योगिनं तर्पयामि
161. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीमहाभट्टारिकं तर्पयामि
162. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिनं तर्पयामि
163. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परापर-रहस्य-योगिनं तर्पयामि
164. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरं तर्पयामि
165. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरेशं तर्पयामि
166. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर-सुन्दरं तर्पयामि
167. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर-वासिनं तर्पयामि
168. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराश्रयं तर्पयामि
169. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर-मालिनं तर्पयामि
170. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरासिद्धं तर्पयामि
171. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराम्बमहा-त्रिपुर-सुन्दरं तर्पयामि
172. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महेश्वरं तर्पयामि
173. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-राजं तर्पयामि
174. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-शक्तं तर्पयामि
175. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-गुप्तं तर्पयामि
176. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महाज्ञप्तं तर्पयामि
177. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महानन्दं तर्पयामि
178. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-स्पन्दं तर्पयामि
179. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महाशयं तर्पयामि
180. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-श्रीचक्र-नगर-सम्राजं तर्पयामि
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ।

जप-समर्पण

गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
त्वत्प्रसादान्मे देव! सिद्धिर्भवति महेश्वर।

शिव-जयान्त-माला

'ल'

शुक्लपक्ष
दशमी 10 का

कृष्णपक्ष की
षष्ठी 6 का

सर्वप्रथम तान्त्रिक पञ्चाङ्ग की सहायता से तान्त्रिक सङ्कल्प करें-

विनियोग - अस्य श्री शिव-जयान्त-माला-मन्त्रस्य श्रोत्रेन्द्रियाधिष्ठायि-सावित्रादित्य ऋषिः। अति-शक्वरी छन्दः। तामस-लकार भट्टारक-पीठ-स्थित-लक्ष्मी-ललिता-मण्डिताङ्क-ललज्जिह्वा-कामेश्वर-महा-भट्टारक देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। सर्वाकर्षण-सिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास :- श्रोत्रेन्द्रियाधिष्ठायि-सावित्रादित्य ऋषये नमः शिरसि। अति-शक्वरी छन्दसे नमः मुखे। तामस-लकार भट्टारक-पीठ-स्थित-लक्ष्मी-ललिता-मण्डिताङ्क-ललज्जिह्वा-कामेश्वर-महा-भट्टारक देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। सर्वाकर्षण-सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कराङ्ग-न्यास : ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतल- करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यास : ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुँ। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान : लोह-प्राकार-संगुप्ता निगडैर्यन्त्रिता अपि ।
त्वद्भक्तैः कृष्यमाणाश्च समायान्त्येव योषितः।।

मानस-पूजा –

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर पादुकाभ्यां नमः

ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर पादुकाभ्यां नमः

ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर पादुकाभ्यां नमः

ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर पादुकाभ्यां नमः

ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर पादुकाभ्यां नमः

ॐ शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर पादुकाभ्यां नमः

माला पारायण

1. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर-सुन्दर जय जय
2. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हृदय-देव जय जय
3. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिरो-देव जय जय
4. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिखा-देव जय जय
5. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कवच-देव जय जय
6. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नेत्र-देव जय जय
7. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अस्त्र-देव जय जय
8. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वर जय जय
9. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भग-मालिन जय जय
10. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्य-क्लिन्न जय जय
11. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भेरुण्ड जय जय
12. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वह्निवासिन जय जय
13. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-वज्रेश्वर जय जय
14. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिव-दूत जय जय
15. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्वरित जय जय
16. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुल-सुन्दर जय जय
17. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्य जय जय
18. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नील-पताक जय जय
19. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विजय जय जय
20. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मङ्गल जय जय
21. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ज्वाला-मालिन जय जय
22. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्र जय जय
23. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-नित्य जय जय
24. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परमेश्वर-परमेश्वर जय जय
25. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मित्रीश-मय जय जय
26. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ षष्ठीश-मय जय जय
27. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ उड्डीश-मय जय जय
28. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चर्यानाथ-मय जय जय
29. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लोपामुद्रा-मय जय जय
30. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अगस्त्य-मय जय जय

31. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ काल-तापन-मय जय जय
32. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धर्माचार-मय जय जय
33. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मुक्तकेशीश्वर-मय जय जय
34. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ दीप-कला-नाथ-मय जय जय
35. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विष्णु-देव-मय जय जय
36. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रभाकर-देव-मय जय जय
37. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ तेजो-देव-मय जय जय
38. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मनोज-देव-मय जय जय
39. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कल्याण-देव-मय जय जय
40. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रत्न-देव-मय जय जय
41. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वासुदेव-मय जय जय
42. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीरामानन्द-मय जय जय
43. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अणिमा-सिद्ध जय जय
44. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लघिमा-सिद्ध जय जय
45. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महिमा-सिद्ध जय जय
46. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ईशित्व-सिद्ध जय जय
47. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशित्व-सिद्ध जय जय
48. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राकाम्य-सिद्ध जय जय
49. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भुक्ति-सिद्ध जय जय
50. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इच्छा-सिद्ध जय जय
51. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राप्ति-सिद्ध जय जय
52. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-काम-सिद्ध जय जय
53. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ब्राह्म जय जय
54. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेश्वर जय जय
55. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौमार जय जय
56. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वैष्णव जय जय
57. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वाराह जय जय
58. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेन्द्र जय जय
59. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चामुण्ड जय जय
60. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्य जय जय
61. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-संक्षोभिन् जय जय

62. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विद्राविन् जय जय
63. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिन् जय जय
64. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-वशङ्कर जय जय
65. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिन जय जय
66. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-महांकुश जय जय
67. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-खेचर जय जय
68. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-बीज जय जय
69. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-योनि जय जय
70. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-त्रिखण्ड जय जय
71. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रैलोक्य-मोहन-चक्र स्वामिन् जय जय
72. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रकट-योगिन जय जय
73. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामाकर्षण जय जय
74. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बुद्ध्याकर्षण जय जय
75. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अहङ्काराकर्षण जय जय
76. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शब्दाकर्षण जय जय
77. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्पर्शाकिर्षण जय जय
78. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रुपाकर्षण जय जय
79. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रसाकर्षण जय जय
80. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गन्धाकर्षण जय जय
81. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्ताकर्षण जय जय
82. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धैर्याकिर्षण जय जय
83. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्मृत्याकर्षण जय जय
84. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नामाकर्षण जय जय
85. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बीजाकर्षण जय जय
86. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आत्माकर्षण जय जय
87. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अमृताकर्षण जय जय
88. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शरीराकर्षण जय जय
89. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाशापरिपूरक-चक्र-स्वामिन् जय जय
90. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्त-योगिन् जय जय
91. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-कुसुम जय जय
92. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मेखल जय जय

93. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मदन जय जय
94. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-मदनातुर जय जय
95. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-रेख जय जय
96. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्ग-वेगिन् जय जय
97. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गांकुश जय जय
98. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमालिन् जय जय
99. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-संक्षोभण-चक्र-स्वामिन् जय जय
100. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्ततर-योगिन् जय जय
101. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-संक्षोभन् जय जय
102. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विद्रावन् जय जय
103. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षन् जय जय
104. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाह्लादन् जय जय
105. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सम्मोहन् जय जय
106. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-स्तम्भन् जय जय
107. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-जृम्भन् जय जय
108. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-वशंकर जय जय
109. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रञ्जन जय जय
110. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिन जय जय
111. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थ-साधिन जय जय
112. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सम्पत्ति-पूरण जय जय
113. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मंत्र-मय जय जय
114. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-द्वन्द्व-क्षयंकर जय जय
115. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सौभाग्यदायकचक्र-स्वामिन जय जय
116. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सम्प्रदाय-योगिन् जय जय
117. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सिद्धि-प्रद जय जय
118. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सम्पत्प्रद जय जय
119. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-प्रियङ्कर जय जय
120. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मंगल-कारिन् जय जय
121. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-काम-प्रद जय जय
122. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-दुःख-विमोचिन् जय जय
123. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-मृत्यु-प्रशमन् जय जय

124. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-विघ्न-निवारिन् जय जय
125. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाङ्गसुंदर जय जय
126. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सौभाग्य-दायिन् जय जय
127. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिन् जय जय
128. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलोत्तीर्ण-योगिन् जय जय
129. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञ जय जय
130. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-शक्त जय जय
131. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वैश्वर्य-प्रद जय जय
132. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-ज्ञान-मय जय जय
133. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-व्याधि-विनाशिन् जय जय
134. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाधार-स्वरूप जय जय
135. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-पाप-हर जय जय
136. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्द-मय जय जय
137. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रक्षा-स्वरूपिन् जय जय
138. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेप्सितप्रद जय जय
139. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रक्षा-कर-चक्र-स्वामिन् जय जय
140. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ निगर्भ-योगिन् जय जय
141. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशिन् जय जय
142. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वर जय जय
143. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मोदिन् जय जय
144. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विमल जय जय
145. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अरुण जय जय
146. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ जयिन् जय जय
147. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेश्वर जय जय
148. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौलिन् जय जय
149. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-रोग-हर-चक्र-स्वामिन् जय जय
150. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रहस्य-योगिन् जय जय
151. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बाणिन् जय जय
152. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चापिन् जय जय
153. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ पाशिन् जय जय
154. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अंकुशिन् जय जय

155. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-कामेश्वर जय जय
156. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-वज्रेश्वर जय जय
157. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-भगमालिन् जय जय
158. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-श्रीसुन्दर जय जय
159. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र-स्वमिन् जय जय
160. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अतिरहस्य-योगिन् जय जय
161. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीमहाभट्टारक जय जय
162. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिन् जय जय
163. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परापर-रहस्य-योगिन् जय जय
164. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर जय जय
165. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरेश जय जय
166. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर-सुन्दर जय जय
167. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर-वासिन् जय जय
168. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराश्रय जय जय
169. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुर-मालिन् जय जय
170. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरासिद्ध जय जय
171. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराम्बमहा-त्रिपुर-सुन्दर जय जय
172. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महेश्वर जय जय
173. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-राज् जय जय
174. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-शक्त जय जय
175. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-गुप्त जय जय
176. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महाज्ञप्त जय जय
177. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महानन्द जय जय
178. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-स्पन्द जय जय
179. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महाशय जय जय
180. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महा-महा-श्रीचक्र-नगर-सम्राज् जय जय
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ।

जप-समर्पण

गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
त्वत्प्रसादान्मे देव! सिद्धिर्भवति महेश्वर।

मिथुन सम्बुद्ध्यन्त--माला

'ह्रीं'

शुक्लपक्ष की एकादशी 11 को — कृष्णपक्ष की पञ्चमी 5 को

पहले तान्त्रिक पञ्चाङ्ग की सहायता से संकल्प करें। फिर विनियोग एवं न्यासादि के पश्चात् माला पारायण करें।

विनियोग – अस्य श्री शक्ति शिव मिथुन सम्बुद्ध्यन्त माला मन्त्रस्य अहंकार तत्त्वाधिष्ठायि-त्वष्ट्रादित्य ऋषिः । अष्टिच्छन्दः। तामस ह्रींकार भट्टारकपीठ स्थित श्री हिरण्या श्रीललिता हृदयेश्वर कामेश्वर महाभट्टारक मिथुन देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं देह शुद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास – अहंकार तत्त्वाधिष्ठायि त्वष्ट्रादित्य ऋषये नमः शिरसि। अष्टिच्छन्दसे नमः मुखे। तामस ह्रींकार भट्टारक पीठ स्थित श्रीहिरण्या ललिता श्री हृदयेश्वर कामेश्वर महाभट्टारक मिथुन देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। सर्व सम्मोहन सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कराङ्ग-न्यास : ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यास : ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुं। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानं –

अम्बिके तव भक्तानामवलोकन मात्रतः।
कृत्याकृत्य विमूढाः स्युर्नरानार्यो नृपादयः॥

मानस-पूजा –

1. 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि' –
   .... अधोमुख कनिष्ठांगुष्ठ से
2. 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'
   ...... अधोमुख तर्जनी अंगुष्ठ से
3. 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'
   ......ऊर्ध्वमुख तर्जन्यंगुष्ठ से
4. 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'
   ...... ऊर्ध्वमुख मध्यमांगुष्ठ से
5. 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'
   ...... ऊर्ध्वमुख अनामांगुष्ठ से
6. 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'
   ...... ऊर्ध्व मुख सर्वाङ्गुलियों से

अथ मिथुन सम्बुद्ध्यन्त माला पारायण

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुर सन्दरी त्रिपुर सुन्दर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः हृदयदेवि, हृदयदेव
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिरोदेवि शिरोदेव
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिखादेवि शिखादेव
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कवचदेवि कवचदेव
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नेत्रदेवि नेत्रदेव
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अस्त्रदेवि अस्त्रदेव
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामेश्वरि कामेश्वर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भगमालिनि भगमालिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नित्यक्लिन्ने नित्यक्लिन्न
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भेरुण्डे भेरुण्ड
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वह्निवासिनि वह्निवासिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महावज्रेश्वरि महावज्रेश्वर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिवदूती शिवदूत
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्वरिते त्वरित
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कुलसुन्दरि कुलसुन्दर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नित्ये नित्य
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नीलपताके नीलपताक
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विजये विजय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमङ्गले सर्वमङ्गल
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ज्वालामालिनि ज्वालामालिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चित्रे चित्र
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महानित्ये महानित्य
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः परमेश्वरि परमेश्वरि परमेश्वर परमेश्वर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मित्रीशमयि मित्रेश मय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः षष्ठीशमयि षष्ठीशमय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः उड्डीशमयि उड्डीशमय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चर्य्यानाथमयि चर्य्यानाथमय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः लोपामुद्रामयि लोपामुद्रामय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अगस्त्यमयि अगस्त्यमय

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कालतापनमयि कालतापनमय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः धर्माचार्य्यमयि धर्माचार्य्यमय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मुक्तकेशीश्वरमयि मुक्तकेशीश्वरमय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः दीपकलानाथमयि, दीपकलानाथमय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विष्णुदेवमयि विष्णुदेवमय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्रभाकरदेवमयि प्रभाकरदेवमय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः तेजोदेवमयि तेजोदेवमय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मनोजदेवमयि मनोजदेवमय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कल्याणदेवमयि कल्याणदेवमय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रत्नदेवमयि रत्नदेवमय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वासुदेवमयि वासुदेवमय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रामानन्दमयि रामानन्दमय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अणिमासिद्धि अणिमासिद्ध
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः लघिमासिद्धि लघिमासिद्ध
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महिमासिद्धि महिमासिद्ध
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ईशित्वसिद्धि ईशित्वसिद्ध
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वशित्वसिद्धि वशित्वसिद्ध
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्राकाम्यसिद्धि प्राकाम्यसिद्ध
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भुक्तिसिद्धि भुक्तिसिद्ध
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः इच्छासिद्धि इच्छासिद्ध
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्राप्तिसिद्धि प्राप्तिसिद्ध
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वकामसिद्धि सर्वकामसिद्ध
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ब्राह्मी ब्राह्म्य
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः माहेश्वरि माहेश्वर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कौमारि कौमार
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वैष्णवि वैष्णव
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वाराहि वाराह
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः माहेन्द्रि माहेन्द्र
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चामुण्डे चामुण्ड
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महालक्ष्मि महालक्ष्म
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसंक्षोभिणि सर्वसंक्षोभण

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वविद्राविणि सर्वविद्रावण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाकिर्षिणि सर्वाकिर्षण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्ववशङ्करि सर्ववशङ्कर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वोन्मादिनि सर्वोन्मादन
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमहांङ्कुशे सर्वमहांङ्कुश
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वखेचरि सर्वखेचर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वबीजे सर्वबीज
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वयोने सर्वयोन
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वत्रिखण्डे सर्वत्रिखण्ड
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रैलोक्यमोहनचक्र स्वामिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रैलोक्यचक्र स्वामिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्रकटयोगिनि प्रकटयोगिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामाकर्षिणि कामाकर्षण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः बुद्धयाकर्षिणि बुद्धयाकर्षण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अहङ्काराकर्षिणि अहङ्काराकर्षण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शब्दाकर्षिणि शब्दाकर्षण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः स्पर्शाकिर्षिणि स्पर्शाकिर्षण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रूपाकर्षिणि रूपाकर्षण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रसाकर्षिणि रसाकर्षण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गन्धाकर्षिणि गन्धाकर्षण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चित्ताकर्षिणि चित्ताकर्षण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः धैर्य्या कर्षिणि धैर्य्या कर्षण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः स्मृत्याकर्षिणि स्मृत्याकर्षण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नामाकर्षिणि नामाकर्षण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः बीजाकर्षिणि बीजाकर्षण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः आत्माकर्षिणि आत्माकर्षण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अमृताकर्षिणि अमृताकर्षण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शरीराकर्षिणि शरीराकर्षण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गुप्तयोगिनि गुप्तयोगिन्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गकुसुमे अनङ्गकुसुम
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमेखले अनङ्गमेखल
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्ग मदने अनङ्ग मदन
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमदनातुरे अनङ्गमदनातुर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गरेखे अनङ्गरेख
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गवेगिनि अनङ्गवेग
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गांकुशे अनङ्गांकुश
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमालिनि अनङ्गमालिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व संक्षोभणचक्र स्वामिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व संक्षोभण चक्र स्वामिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गुप्ततरयोगिनि गुप्ततरयोगिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसंक्षोभिणि सर्वसंक्षोभण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वविद्राविणि सर्वविद्रावण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाकिर्षिणि सर्वाकर्षण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाह्लादिनि सर्वाह्लादन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसम्मोहिनि सर्वसम्मोहन
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वस्तम्भिनि सर्वस्तम्भन
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वजृम्भिणि सर्वजृम्भण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्ववशंकरि सर्ववशंकर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरञ्जिन सर्वरञ्जन
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वोन्मादिनि सर्वोन्मादन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वार्थसाधिनि सर्वार्थसाधिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसम्पत्तिपूरिणि सर्वसम्पत्तिपूरण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमन्त्रमयि सर्वमन्त्रमय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि सर्वद्वन्द्वक्षयंकर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसौभाग्य दायक चक्र स्वामिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसौभाग्य दायक चक्र स्वामिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सम्प्रदाय योगिनि सम्प्रदाययोगिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसिद्धिप्रदे सर्वसिद्धिप्रद
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसम्पत्प्रदे सर्वसम्पत्प्रद
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वप्रियङ्करि सर्वप्रियङ्कर

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमङ्गलकारिणि सर्वमङ्गलकारिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वकामप्रदे सर्वकामप्रद
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वदुःखविमोचिनि सर्वदुःखविमोचन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमृत्युप्रशमनि सर्वमृत्युप्रशमन
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वविघ्ननिवारिणि सर्वविघ्ननिवारण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाङ्गसुंदरि सर्वाङ्गसुंदर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसौभाग्यदायिनि सर्वसौभाग्यदायिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वार्थचक्र स्वामिनि सर्वार्थचक्र स्वामिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कुलोत्तीर्णयोगिनि कुलोत्तीर्णयोगिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वज्ञे सर्वज्ञ
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वशक्ते सर्वशक्त
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वैश्वर्य्यप्रदे सर्वैश्वर्य्यप्रद्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वज्ञानमयि सर्वज्ञानमय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वव्याधिविनाशिनि सर्वव्याधि विनाशन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाधारस्वरूपे सर्वाधारस्वरूप
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वपापहरे सर्वपापहर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वानन्दमयि सर्वानन्दमय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरक्षास्वरूपिणि सर्वरक्षास्वरुप
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वेप्सितप्रदे सर्वेप्सितप्रद
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरक्षाकरचक्र स्वामिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः निगर्भयोगिनि निगर्भयोगिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वशिनि वशिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामेश्वरि कामेश्वर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मोदिनि मोदिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विमले विमल
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अरुणे अरुण
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः जयिनि जयिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वेश्वरि सर्वेश्वर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कौलिनि कौलिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरोगहर चक्र स्वामिनि सर्वरोगहर चक्र स्वामिन्!

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रहस्य-योगिनि रहस्ययोगिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः बाणिनि वाणिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चापिनि चापिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः पाशिनि पाशिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अंकुशिनि अंकुशिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाकामेश्वरि महाकामेश्वर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महावज्रेश्वरि महावज्रेश्वर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाभगमालिनि महाभगमालिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाश्रीसुन्दरि महाश्रीसुन्दर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसिद्धिप्रद चक्र स्वामिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसिद्धिप्रद चक्र स्वामिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अतिरहस्ययोगिनि अतिरहस्ययोगिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः श्री श्रीमहाभट्टारिके श्री श्रीमहाभट्टारक
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वानन्दमय चक्र स्वामिनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वानन्दमय चक्र स्वामिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः परापर रहस्ययोगिनि, परापर रहस्य योगिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरे त्रिपुर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरेशी त्रिपुरेश
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरसुन्दरि त्रिपुरसुन्दर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरवासिनि त्रिपुरवासिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुराश्रिये त्रिपुराश्रिय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरमालिनि त्रिपुरमालिन्
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरासिद्धे त्रिपुरासिद्ध
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुराम्बमहात्रिपुरसुन्दरि
त्रिपुराम्बमहात्रिपुरसुन्दर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहेश्वरि महामहेश्वर
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाराज्ञि महामहाराज
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाशक्ते महामहाशक्त
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहागुप्ते महामहागुप्त
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाज्ञप्ते महामहाज्ञप्त
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहानन्दे महामहानन्द

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहास्पन्दे महामहास्पन्द
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाश्री चक्रनगर साम्राज्ञि
महामहाश्री चक्रनगर साम्राज
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐ ॐ॥

गुह्याति गुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवति में देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥

मिथुन नमोऽन्त माला

'स'

शुक्लपक्ष की द्वादशी 12 को — कृष्णपक्ष की चतुर्थी 4 को

पहले तान्त्रिक पञ्चाङ्ग की सहायता से संकल्प करें। फिर विनियोग एवं न्यासादि के पश्चात् माला पारायण करें।

विनियोग – अस्य श्रीशक्ति शिव मिथुन नमोऽन्त माला–मन्त्रस्य बुद्धितत्वाधिष्ठायि वैष्णवादित्य ऋषिः। अत्यष्टिच्छन्दः। मोक्षद सकार भट्टारकपीठ स्थित श्री सकल जननी ललिता श्री सकलेश्वर कामेश्वर महाभट्टारक देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। सर्व स्तम्भन सिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास – बुद्धि तत्त्वाधिष्ठायि वैष्णवादित्य ऋषये नमः शिरसि। अत्यष्टि छन्दसे नमः मुखे। मोक्षद सकार भट्टारक पीठ स्थित श्रीसकल जननी ललिता श्री सकलेश्वर कामेश्वर महाभट्टारक मिथुन देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। सर्व स्तम्भन सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कराङ्गन्यास : ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ह्रः करतल–करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग–न्यास : ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुँ। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानं : देवि त्वद् भक्तमालोक्य शरीरेन्द्रिय चेतसाम्।
स्तम्भनाद् वैरिणः स्तब्धाः स्व स्व कार्य पराङ्मुखाः ॥

मानस-पूजा –

1. 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

.... अधोमुख कनिष्ठांगुष्ठ से

2. 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी मण्डिताङ्क श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

...... अधोमुख तर्जनी अंगुष्ठ से

3. 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहात्रिपुर सुंन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

......ऊर्ध्वमुख तर्जन्यंगुष्ठ से

4. 'रं व ह्यात्मकं दीपं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

...... ऊर्ध्वमुख मध्यमांगुष्ठ से

5. 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

...... अनामांगुष्ठ से

6. 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

...... सर्वाङ्गुलियों से

माला पारायण

इस माला के प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'नमः पादुकां पूजयामि' जोड़कर जप करें यथा-
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः पादुकाम् पूजयामि त्रिपुर सुन्दराय नमः पादुकाम् पूजयामि ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः हृदयदेव्यै नमः हृदयदेवाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिरोदेव्यै नमः शिरोदेवाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिखा देव्यै नमः शिखादेवाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कवच देव्यै नमः कवच देवाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नेत्रदेव्यै नमः नेत्रदेवाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अस्त्र देव्यै नमः अस्त्र देवाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामेश्वर्य्यै नमः कामेश्वराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भगमालिन्यै नमः भगमालिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नित्यक्लिन्नायै नमः नित्यक्लिन्नाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भेरुण्डायै नमः भेरुण्डाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वह्निवासिन्यै नमः वह्निवासिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महावज्रेश्वर्य्यै नमः महावज्रेश्वराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिवदूत्यै नमः शिवदूताय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्वरितायै नमः त्वरिताय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कुलसुन्दर्य्यै नमः कुलसुन्दराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नित्यायै नमः नित्याय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नीलपताकायै नमः नीलपताकाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विजयायै नमः विजयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमङ्गलायै नमः सर्वमङ्गलाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ज्वालामालिन्यै नमः ज्वालामालिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चित्रायै नमः चित्राय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महानित्यायै नमः महानित्याय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः परमेश्वर्य्यै नमः परमेश्वराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मित्रीशमय्यै नमः मित्रेशमयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः षष्ठीशमय्यै नमः षष्ठीशमयाय नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः उड्डीशमय्यै नमः उड्डीशमयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चर्य्यानाथमय्यै नमः चर्य्यानाथमयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः लोपामुद्रामय्यै नमः लोपामुद्रामयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अगस्त्यमय्यै नमः अगस्त्यमयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कालतापनमय्यै नमः कालतापनमयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः धर्माचार्यमय्यै नमः धर्माचार्यमयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मुक्तकेशीश्वरमय्यै नमः मुक्तकेशीश्वरमयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः दीपकलानाथमय्यै नमः दीपकलानाथमयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विष्णुदेवमय्यै नमः विष्णुदेवमयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्रभाकरदेवमय्यै नमः प्रभाकरदेवमयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः तेजोदेवमय्यै नमः तेजोदेवमयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मनोजदेवमय्यै नमः मनोजदेवमयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कल्याणदेवमय्यै नमः कल्याण देवमयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रत्नदेवमय्यै नमः रत्नदेवमयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वासुदेवमय्यै नमः वासुदेवमयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रामानन्दमय्यै नमः रामानन्दमयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अणिमा सिद्ध्यै नमः अणिमा सिद्धाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः लघिमासिद्ध्यै नमः लघिमा सिद्धाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महिमासिद्ध्यै नमः महिमासिद्धाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ईशित्वसिद्ध्यै नमः ईशित्वसिद्धाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वशित्वसिद्ध्यै नमः वशित्वसिद्धाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः प्राकाम्यसिद्धाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भुक्तिसिद्ध्यै नमः भुक्तिसिद्धाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः इच्छासिद्ध्यै नमः इच्छासिद्धाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्राप्तिसिद्ध्यै नमः प्राप्तिसिद्धाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वकाम सिद्ध्यै नमः सर्वकाम सिद्धाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ब्राह्म्यै नमः ब्राह्माय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः माहेश्वर्य्यै नमः माहेश्वराय नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कौमार्य्यै नमः कौमाराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वैष्णव्यै नमः वैष्णवाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वाराह्यै नमः वाराहाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः माहेन्द्र्यै नमः माहेन्द्राय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चामुण्डायै नमः चामुण्डाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्म्याय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसंक्षोभिण्यै नमः सर्वसंक्षोभिण्याय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वविद्राविण्यै नमः सर्वविद्रावणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाकर्षिण्ये नमः सर्वाकर्षणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्ववशङ्कर्य्यै नमः सर्ववशंकराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वोन्मादिन्यै नमः सर्वोन्मादिन्याय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमहाङ्कुशायै नमः सर्वमहाङ्कुशाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वखेचर्य्यै नमः सर्वखेचराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वबीजे नमः सर्वबीजाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वयोन्ये नमः सर्वयोन्याय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वत्रिखण्डायै नमः सर्वत्रिखण्डाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रैलोक्य मोहन चक्र स्वामिन्यै नमः
त्रैलोक्य मोहन चक्र स्वामिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्रकटयोगिन्यै नमः प्रकटयोगिन्याय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामाकर्षिण्यै नमः कामाकर्षणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः बुद्ध्याकर्षिण्यै नमः बुद्ध्याकर्षणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अहङ्काराकर्षिण्यै नमः अहङ्काराकर्षणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शब्दाकर्षिण्यै नमः शब्दाकर्षणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः स्पर्शाकर्षिण्यै नमः स्पर्शाकर्षणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रूपाकर्षिण्यै नमः रूपाकर्षणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रसाकर्षिण्यै नमः रसाकर्षणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गन्धाकर्षिण्यै नमः गन्धाकर्षणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चित्ताकर्षिण्यै नमः चित्ताकर्षणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः धैर्य्याकर्षिण्यै नमः धैर्य्याकर्षणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः स्मृत्याकर्षिण्यै नमः स्मृत्याकर्षणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नामाकर्षिण्यै नमः नामाकर्षणाय नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः बीजाकर्षिण्यै नमः बीजाकर्षणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः आत्माकर्षिण्यै नमः आत्माकर्षणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अमृताकर्षिण्यै नमः अमृताकर्षणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शरीराकर्षिण्यै नमः शरीराकर्षणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिन्यै नमः
सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गुप्तयोगिन्यै नमः गुप्तयोगिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गकुसुमायै नमः अनङ्ग कुसुमाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमेखलायै नमः अनङ्गमेखलाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमदनायै नमः अनङ्गमदनाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्ग मदनातुरायै नमः
अनङ्ग मदनातुराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्ग रेखायै नमः अनङ्ग रेखाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गवेगिन्यै नमः अनङ्गवेगिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गाङ्कुशायै नमः अनङ्गाङ्कुशाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमालिन्यै नमः अनङ्गमालिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिन्यै नमः
सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गुप्ततर योगिन्यै नमः गुप्ततर योगिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसंक्षोभिण्यै नमः सर्वसंक्षोभणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वविद्राविण्यै नमः सर्वविद्राविणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाकर्षिण्यै नमः सर्वाकर्षणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाह्लादिन्यै नमः सर्वाह्लादनाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसंमोहिन्यै नमः सर्वसमोहनाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वस्तम्भिन्यै नमः सर्वस्ताम्भिनाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वजृम्भिण्यै नमः सर्वजृम्भणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्ववशंकर्य्यै नमः सर्ववशंकराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरञ्जिन्यै नमः सर्वरञ्जनाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वोन्मादिन्यै नमः सर्वोन्मादनाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वार्थसाधिन्यै नमः सर्वार्थसाधनाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसम्पत्तिपूरिण्यै नमः सर्वसम्पत्तिपूरणाय नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमन्त्रमय्यै नमः सर्वमन्त्रमयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वद्वन्द्वक्षयंकर्य्यै नमः सर्वद्वन्द्वक्षयंकराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसौभाग्य दायक चक्र स्वामिन्यै नमः
सर्वसौभाग्य दायक चक्र स्वामिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सम्प्रदाय योगिन्यै नमः सम्प्रदाययोगिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसिद्धिप्रदायै नमः सर्वसिद्धिप्रदाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व सम्पतप्रदायै नमः सर्व सम्पतप्रदाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वप्रियंङ्कर्य्यै नमः सर्वप्रियंङ्कराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमङ्गलकारिण्यै नमः सर्वमङ्गलकारिणे नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वकामप्रदायै नमः सर्वकामप्रदाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वदुःखविमोचिन्यै नमः
सर्वदुःख विमोचिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमृत्युप्रशमिन्यै नमः सर्वमृत्युप्रशमने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वविघ्ननिवारिण्यै नमः सर्वविघ्ननिवारणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाङ्ग सुन्दर्यै नमः सर्वाङ्ग सुन्दराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसौभाग्य दायिन्यै नमः
सर्वसौभाग्य दायिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वार्थ साधक चक्र स्वामिन्यै नमः
सर्वार्थ साधक चक्र स्वामिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कुलोत्तीर्णयोगिन्यै नमः कुलोत्तीर्णयोगिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वज्ञायै नमः सर्वज्ञे नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वशक्त्यै नमः सर्वशक्ताय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वैश्वर्य्यप्रदायै नमः सर्वैश्वर्य्य प्रदाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वज्ञानमय्यै नमः सर्वज्ञानमयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः
सर्वव्याधिविनाशनाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाधारस्वरूपायै नमः सर्वाधार स्वरूपाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व पाप हरायै नमः सर्वपाप हराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वानन्दमय्यै नमः सर्वानन्दमयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः
सर्वरक्षास्वरूपिण्याय नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वेप्सितप्रदायै नमः सर्वेप्सितप्रदाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिन्यै नमः
सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः निगर्भयोगिन्यै नमः निगर्भयोगिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वशिन्यै नमः वशिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामेश्वर्य्यै नमः कामेश्वराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मोदिन्यै नमः मोदिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विमलायै नमः विमलाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अरुणायै नमः अरुणाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः जयिन्यै नमः जयिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वेश्वर्य्यै नमः सवैश्वराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कौलिन्यै नमः कौलिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरोगहर चक्र स्वामिन्यै नमः
सर्वरोगहर चक्र स्वामिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रहस्ययोगिन्यै नमः रहस्ययोगिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वाणिन्यै नमः वाणिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चापिन्यै नमः चापिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः पाशिन्यै नमः पाशिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अङ्कुशिन्यै नमः अङ्कुशिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाकामेश्वर्य्यै नमः महाकामेश्वराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महावज्रेश्वर्य्यै नमः महावज्रेश्वराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाभगमालिन्यै नमः महाभगमालिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाश्री सुन्दर्य्यै नमः महाश्री सुन्दराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसिद्धि प्रद चक्र स्वामिन्यै नमः
सर्वसिद्धि प्रद चक्र स्वामिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अतिरहस्य योगिन्यै नमः अतिरहस्य योगिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै नमः
श्रीश्रीमहाभट्टारकाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वानन्दमय चक्र स्वामिन्यै नमः
सर्वानन्दमय चक्र स्वामिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः परापर रहस्ययोगिन्यै नमः

परापर रहस्ययोगिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरायै नमः त्रिपुराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरेश्यै नमः त्रिपुरेशाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरसुन्दर्य्यै नमः त्रिपुरसुन्दराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरवासिन्यै नमः त्रिपुर वासिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुराश्रियै नमः त्रिपुराश्रियाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरमालिन्यै नमः त्रिपुरमालिने नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरासिद्धे नमः त्रिपुरासिद्धाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुराम्बमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः
त्रिपुराम्बमहात्रिपुरसुन्दराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहेश्वर्य्यै नमः महामहेश्वराय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाराज्ञै नमः महामहाराजाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाशक्त्यै नमः महामहाशक्ताय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहा गुप्तायै नमः महामहा गुप्ताय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहा ज्ञप्तायै नमः महामहा ज्ञप्ताय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहानन्दायै नमः महामहानन्दाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहास्पन्दायै नमः महामहास्पन्दाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाशयायै नमः महामहाशयाय नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाश्रीचक्र नगर साम्राज्ञै नमः
महामहाश्रीचक्र नगर साम्राजाय नमः
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॐ
श्री पर देवतार्पणमस्तु

गुह्याति गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवति मे देवित्वत्प्रसादात् महेश्वरि ॥

मिथुन स्वाहान्त माला
माला पारायण

शुक्लपक्ष की त्रयोदशी 13 को

'क'

कृष्णपक्ष की तृतीया 3 को

पहले तान्त्रिक पञ्चाङ्ग की सहायता से संकल्प करें। फिर विनियोग एवं न्यासादि के पश्चात् माला पारायण करें।

विनियोग - अस्य श्रीशक्ति शिव मिथुन स्वाहान्त मालामन्त्रस्य मनस्तत्वाधिष्ठायि ब्रह्मात्मने प्रातरादित्य ऋषिः। धृतिच्छन्दः। राजस ककार भट्टारकपीठ स्थित श्रीकामकोटि ललिता श्रीकरुणाकर कामेश्वर महाभट्टारक देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। धर्मार्थं काम मोक्ष सिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास - मनस्तत्वाधिष्ठायि ब्रह्मात्मने प्रातरादित्य ऋषये नमः शिरसि। धृतिच्छन्दसे नमः मुखे। राजस ककार भट्टारक पीठ स्थित श्रीकामकोटि ललिता श्रीकरुणाकर कामेश्वर महाभट्टारक देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। धर्मार्थ काम मोक्ष सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कराङ्गन्यास : ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ह्रः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यास : ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुँ। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानं : धर्मश्चार्थश्च कामश्च मोक्षश्चेति् चतुर्बिधः।
तव भक्तः स्व भक्तेभ्यः प्रयच्छत्यत्वप्रयासतः ॥

मानस-पूजा -

1. 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

   .... अधोमुख कनिष्ठांगुष्ठ से

2. 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

   ...... अधोमुख तर्जनी अंगुष्ठ से

3. 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

   ......ऊर्ध्वमुख तर्जन्यंगुष्ठ से

4. 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

   ...... ऊर्ध्वमुख मध्यमांगुष्ठ से

5. 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

   ...... अनामांगुष्ठ से

6. 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

   ...... सर्वाङ्गुलियों से

श्री मिथुन स्वाहान्त माला

इस माला के प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'स्वाहा' जोड़कर जप करें

यथा–

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा त्रिपुर सुन्दराय स्वाहा॥

माला पारायण

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरसुन्दर्य्यै स्वाहा त्रिपुरसुन्दराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः हृदयदेव्यै स्वाहा हृदयदेवाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिरोदेव्यै स्वाहा शिरोदेवाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिखा देव्यै स्वाहा शिखादेवाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कवच देव्यै स्वाहा कवच देवाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नेत्रदेव्यै स्वाहा नेत्रदेवाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अस्त्र देव्यै स्वाहा अस्त्र देवाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामेश्वर्य्यै स्वाहा कामेश्वराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भगमालिन्यै स्वाहा भगमालिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नित्यक्लिन्नायै स्वाहा नित्यक्लिन्नाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भेरुण्डायै स्वाहा भेरुण्डाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वह्निवासिन्यै स्वाहा वह्निवासिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महावज्रेश्वर्य्यै स्वाहा महावज्रेश्वराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिवदूत्यै स्वाहा शिवदूताय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्वरितायै स्वाहा त्वरिताय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कुलसुन्दर्य्यै स्वाहा कुलसुन्दराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नित्यायै स्वाहा नित्याय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नीलपताकायै स्वाहा नीलपताकाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विजयायै स्वाहा विजयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमङ्गलायै स्वाहा सर्वमङ्गलाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ज्वालामालिन्यै स्वाहा ज्वालामालिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चित्रायै स्वाहा चित्राय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महानित्यायै स्वाहा महानित्याय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः परमेश्वर्य्यै स्वाहा परमेश्वराय स्वाहा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मित्रीशमय्यै स्वाहा मित्रेशमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः षष्ठीशमय्यै स्वाहा षष्ठीशमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः उड्डीशमय्यै स्वाहा उड्डीशमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चर्य्यानाथमय्यै स्वाहा चर्य्यानाथमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः लोपामुद्रामय्यै स्वाहा लोपामुद्रामयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अगस्त्यमय्यै स्वाहा अगस्त्यमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कालतापनमय्यै स्वाहा कालतापनमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः धर्माचार्यमय्यै स्वाहा धर्माचार्यमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मुक्तकेशीश्वरमय्यै स्वाहा
मुक्तकेशीश्वरमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः दीपकलानाथमय्यै स्वाहा
दीपकलानाथमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विष्णुदेवमय्यै स्वाहा विष्णुदेवमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्रभाकरदेवमय्यै स्वाहा
प्रभाकरदेवमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः तेजोदेवमय्यै स्वाहा तेजोदेवमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मनोजदेवमय्यै स्वाहा मनोजदेवमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कल्याणदेवमय्यै स्वाहा कल्याण
देवमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रत्नदेवमय्यै स्वाहा रत्नदेवमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वासुदेवमय्यै स्वाहा वासुदेवमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रामानन्दमय्यै स्वाहा रामानन्दमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अणिमा सिद्ध्य्यै स्वाहा
अणिमा सिद्धाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः लघिमासिद्ध्यै स्वाहा
लघिमा सिद्धाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महिमासिद्ध्यै स्वाहा महिमासिद्धाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ईशित्वसिद्ध्यै स्वाहा ईशित्वसिद्धाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वशित्वसिद्ध्यै स्वाहा वशित्वसिद्धाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्राकाम्यसिद्ध्यै स्वाहा
प्राकाम्यसिद्धाय स्वाहा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भुक्तिसिद्ध्यै स्वाहा भुक्तिसिद्धाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः इच्छासिद्ध्यै स्वाहा इच्छासिद्धाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्राप्तिसिद्ध्यै स्वाहा प्राप्तिसिद्धाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वकाम सिद्ध्यै स्वाहा
सर्वकाम सिद्धाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ब्राह्म्यै स्वाहा ब्राह्मणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः माहेश्वर्य्यै स्वाहा माहेश्वराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कौमार्य्यै स्वाहा कौमाराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वैष्णव्यै स्वाहा वैष्णवाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वाराह्यै स्वाहा वाराहाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः माहेन्द्रयै स्वाहा माहेन्द्राय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चामुण्डायै स्वाहा चामुण्डाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महालक्ष्म्यै स्वाहा महालक्ष्म्याय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसंक्षोभिण्यै स्वाहा
सर्वसंक्षोभिण्याय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वविद्राविण्यै स्वाहा सर्वविद्रावणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाकर्षिण्ये स्वाहा सर्वाकर्षणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्ववशङ्कर्य्यै स्वाहा सर्ववशंकराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वोन्मादिन्यै स्वाहा सर्वोन्मादिन्याय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमहाङ्कुशायै स्वाहा
सर्वमहाङ्कुशाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वखेचर्य्यै स्वाहा सर्वखेचराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वबीजे स्वाहा सर्वबीजाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वयोन्यै स्वाहा सर्वयोन्याय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वत्रिखण्डायै स्वाहा सर्वत्रिखण्डाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रैलोक्य मोहन चक्र स्वामिन्यै स्वाहा
त्रैलोक्य मोहन चक्र स्वामिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्रकटयोगिन्यै स्वाहा प्रकटयोगिन्याय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामाकर्षिण्यै स्वाहा कामाकर्षणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः बुद्ध्याकर्षिण्यै स्वाहा
बुद्ध्याकर्षणाय स्वाहा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अहङ्काराकर्षिण्यै स्वाहा
अहङ्काराकर्षणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शब्दाकर्षिण्यै स्वाहा शब्दाकर्षणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः स्पर्शाकिर्षिण्यै स्वाहा स्पर्शाकिर्षणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रूपाकर्षिण्यै स्वाहा रूपाकर्षणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रसाकर्षिण्यै स्वाहा रसाकर्षणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गन्धाकर्षिण्यै स्वाहा गन्धाकर्षणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चित्ताकर्षिण्यै स्वाहा चित्ताकर्षणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः धैर्य्याकर्षिण्यै स्वाहा धैर्य्याकर्षणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः स्मृत्याकर्षिण्यै स्वाहा स्मृत्याकर्षणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नामाकर्षिण्यै स्वाहा नामाकर्षणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः बीजाकर्षिण्यै स्वाहा बीजाकर्षणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः आत्माकर्षिण्यै स्वाहा आत्माकर्षणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अमृताकर्षिण्यै स्वाहा अमृताकर्षणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शरीराकर्षिण्यै स्वाहा शरीराकर्षणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिन्यै स्वाहा
सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गुप्तयोगिन्यै स्वाहा गुप्तयोगिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गकुसुमायै स्वाहा अनङ्ग कुसुमाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमेखलायै स्वाहा अनङ्गमेखलाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमदनायै स्वाहा अनङ्गमदनाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्ग मदनातुरायै स्वाहा अनङ्ग मदनातुराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्ग रेखायै स्वाहा अनङ्ग रेखाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गवेगिन्यै स्वाहा अनङ्गवेगिनाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गाङ्कुशायै स्वाहा
अनङ्गाङ्कुशाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमालिन्यै स्वाहा अनङ्गमालिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिन्यै स्वाहा
सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गुप्ततर योगिन्यै स्वाहा
गुप्ततर योगिन्ने स्वाहा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सवसंक्षोभिण्यै स्वाहा सर्वसंक्षोभणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वविद्राविण्यै स्वाहा सर्वविद्राविणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाकर्षिण्यै स्वाहा सर्वाकर्षणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाह्लादिन्यै स्वाहा सर्वाह्लादनाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसंमोहिन्यै स्वाहा सर्वसमोहिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वस्तम्भिन्यै स्वाहा सर्वस्तम्भिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वजृम्भिण्यै स्वाहा सर्वजृम्भणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्ववशंकर्य्यै स्वाहा सर्ववशंकराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरञ्जिन्यै स्वाहा सर्वरञ्जनाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वोन्मादिन्यै स्वाहा सर्वोन्मादिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वार्थसाधिन्यै स्वाहा सर्वार्थसाधिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसम्पत्तिपूरिण्यै स्वाहा सर्वसम्पत्तिपूरणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमन्त्रमय्यै स्वाहा सर्वमन्त्रमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वद्वन्द्वक्षयंकर्य्यै स्वाहा सर्वद्वन्द्वक्षयंकराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसौभाग्य दायक चक्र स्वामिन्यै स्वाहा
सर्वसौभाग्य दायक चक्र स्वामिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सम्प्रदाय योगिन्यै स्वाहा
सम्प्रदाययोगिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसिद्धिप्रदायै स्वाहा सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व सम्पतप्रदायै स्वाहा
सर्व सम्पतप्रदाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वप्रियंङ्कर्य्यै स्वाहा सर्वप्रियंङ्कराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमङ्गलकारिण्यै स्वाहा
सर्वमङ्गलकारिणे स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वकामप्रदायै स्वाहा सर्वकामप्रदाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वदुःखविमोचिन्यै स्वाहा
सर्वदुःख विमोचिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमृत्युप्रशिमिन्यै स्वाहा
सर्वमृत्युप्रशमनाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वविघ्ननिवारिण्यै स्वाहा
सर्वविघ्ननिवारणाय स्वाहा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाङ्ग सुन्दर्यै स्वाहा
सर्वाङ्ग सुन्दराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसौभाग्य दायिन्यै स्वाहा
सर्वसौभाग्य दायिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वार्थ साधक चक्र स्वामिन्यै स्वाहा
सर्वार्थ साधक चक्र स्वामिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कुलोत्तीर्णयोगिन्यै स्वाहा
कुलोत्तीर्णयोगिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वज्ञायै स्वाहा सर्वज्ञाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वशक्त्यै स्वाहा सर्वशक्ताय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वैश्वर्य्यप्रदायै स्वाहा सर्वैश्वर्य्य प्रदाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वज्ञानमय्यै स्वाहा सर्वज्ञानमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वव्याधिविनाशिन्यै स्वाहा
सर्वव्याधिविनाशनाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाधारस्वरूपायै स्वाहा
सर्वाधार स्वरूपाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व पाप हरायै स्वाहा
सर्वपाप हराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वानन्दमय्यै स्वाहा सर्वानन्दमयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरक्षास्वरूपिण्यै स्वाहा
सर्वरक्षास्वरूपिण्याय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वेप्सितप्रदायै स्वाहा सर्वेप्सितप्रदाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिन्यै स्वाहा
सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः निगर्भयोगिन्यै स्वाहा निगर्भयोगिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वशिन्यै स्वाहा वशिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामेश्वर्य्यै स्वाहा कामेश्वराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मोदिन्यै स्वाहा मोदनाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विमलायै स्वाहा विमलाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अरुणायै स्वाहा अरुणाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः जयिन्यै स्वाहा जयिने स्वाहा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वेश्वर्य्यै स्वाहा सर्वैश्वराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कौलिन्यै स्वाहा कौलिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरोगहर चक्र स्वामिन्यै स्वाहा
सर्वरोगहर चक्र स्वामिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रहस्ययोगिन्यै स्वाहा रहस्ययोगिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वाणिन्यै स्वाहा वाणिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चापिन्यै स्वाहा चापिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः पाशिन्यै स्वाहा पाशिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अङ्कुशिन्यै स्वाहा अङ्कुशिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाकामेश्वर्य्यै स्वाहा
महाकामेश्वराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महावज्रेश्वर्य्यै स्वाहा महावज्रेश्वराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाभगमालिन्यै स्वाहा
महाभगमालिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाश्री सुन्दर्य्यै स्वाहा
महाश्री सुन्दराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसिद्धि प्रद चक्र स्वामिन्यै स्वाहा
सर्वसिद्धि प्रद चक्र स्वामिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अतिरहस्य योगिन्यै स्वाहा
अतिरहस्य योगिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै स्वाहा
श्रीश्रीमहाभट्टारकाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वानन्दमय चक्र स्वामिन्यै स्वाहा
सर्वानन्दमय चक्र स्वामिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः परापर रहस्ययोगिन्यै स्वाहा
परापर रहस्ययोगिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरायै स्वाहा त्रिपुराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरेश्यै स्वाहा त्रिपुरेशाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरसुन्दर्य्यै स्वाहा त्रिपुरसुन्दराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरवासिन्यै स्वाहा त्रिपुर वासिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुराश्रियै स्वाहा त्रिपुराश्रियाय स्वाहा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरमालिन्यै स्वाहा त्रिपुरमालिने स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरासिद्ध्यै स्वाहा त्रिपुरासिद्धाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुराम्बमहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा
त्रिपुराम्बमहात्रिपुरसुन्दराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहेश्वर्य्यै स्वाहा महामहेश्वराय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाराज्ञ्यै स्वाहा महामहाराजाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाशक्त्यै स्वाहा
महामहाशक्त्याय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहा गुप्तायै स्वाहा
महामहा गुप्ताय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहा ज्ञप्तायै स्वाहा
महामहा ज्ञप्ताय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्वाहा महामहानन्दायै स्वाहा
महामहानन्दाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहास्पन्दायै स्वाहा
महामहास्पन्दाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाशयायै स्वाहा महामहाशयाय स्वाहा
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाश्रीचक्र नगर साम्राज्ञै स्वाहा
महामहाश्रीचक्र नगर साम्राजाय स्वाहा

नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॐ
श्री पर देवतार्पणमस्तु

गुह्याति गुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवति मे देवित्वत्प्रसादात् महेश्वरि ॥

मिथुन तर्पणान्त माला

शुक्लपक्ष की चतुर्दशी 14 को

'ल'

कृष्णपक्ष की द्वितीया 2 को

पहले तान्त्रिक पञ्चाङ्ग की सहायता से संकल्प करें। फिर विनियोग एवं न्यासादि के पश्चात् माला पारायण करें।

विनियोग – अस्य श्रीशक्ति शिव मिथुन तर्पणान्त माला मन्त्रस्य प्रकृति तत्वाधिष्ठायि विष्ण्वात्मक मध्याह्नादित्य ऋषिः। अति धृतिच्छन्दः। राजस लकार भट्टारकपीठ स्थित श्रीलीलावती ललिता श्री लावण्यनायक कामेश्वर महाभट्टारक मिथुन देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। सर्व नित्यानन्द सिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास – प्रकृति तत्त्वाधिष्ठायि विष्ण्वात्मने मध्याह्नादित्य ऋषये नमः शिरसि। अति धृतिच्छन्दसे नमः मुखे। राजस लकार भट्टारक पीठ स्थित श्रीलीलावती ललिता श्रीलावण्यनायक कामेश्वर महाभट्टारक देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। नित्यानन्द सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कराङ्गन्यास : ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ह्रः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग–न्यास : ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुँ। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानं : अलौकिकं लौकिकं चेत्यानन्दद्वितयं सदा।
सुलभं परमेशानि! त्वत् पादौ भजतां नृणाम् ॥

मानस–पूजा –

1. 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

.... अधोमुख कनिष्ठांगुष्ठ से

2. 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

...... अधोमुख तर्जनी अंगुष्ठ से

3. 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

......ऊर्ध्वमुख तर्जन्यंगुष्ठ से

4. 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

...... ऊर्ध्वमुख मध्यमांगुष्ठ से

5. 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

...... अनामांगुष्ठ से

6. 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

...... सर्वाङ्गुलियों से

माला पारायण

इस माला के प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'तर्पयामि' जोड़कर जप करें–

यथा –

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नमस्त्रिपुर सुन्दरीं तर्पयामि त्रिपुर सुन्दरं तर्पयामि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः हृदय देवीं तर्पयामि हृदय देवं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिरोदेवीं तर्पयामि शिरोदेवं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिखा देवीं तर्पयामि शिखादेवं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कवचदेवीं तर्पयामि कवचदेवं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नेत्रदेवीं तर्पयामि नेत्रदेवं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अस्त्रदेवीं तर्पयामि अस्त्रदेवं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामेश्वरीं तर्पयामि कामेश्वरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भगमालिनीं तर्पयामि भगमालिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नित्यक्लिन्नां तर्पयामि नित्यक्लिन्नं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भेरुण्डां तर्पयामि भेरुण्डं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वह्निवासिनीं तर्पयामि वह्निवासिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मनः महावज्रेश्वरीं तर्पयामि महावज्रेश्वरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिवदूतीं तर्पयामि शिवदूतं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्वरितां तर्पयामि त्वरितं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कुलसुन्दरीं तर्पयामि कुलसुन्दरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नित्यां तर्पयामि नित्यं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नीलपताकां तर्पयामि नीलपताकं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विजयां तर्पयामि विजयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमङ्गलां तर्पयामि सर्वमङ्गलं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ज्वालामालिनीं तर्पयामि ज्वालामालिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चित्रां तर्पयामि चित्रं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महानित्यां तर्पयामि महानित्यं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः परमेश्वर परमेश्वरीं तर्पयामि
परमेश्वर परमेश्वरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मित्रीशमयीं तर्पयामि मित्रेशमयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः षष्ठीशमयीं तर्पयामि षष्ठीशमयं तर्पयामि

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः उड्डीशमयीं तर्पयामि उड्डीशमयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चर्य्यानाथमयीं तर्पयामि चर्य्यानाथमयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः लोपामुद्रामयीं तर्पयामि लोपामुद्रामयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अगस्त्यमयीं तर्पयामि अगस्त्यमयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कालतापनमयीं तर्पयामि कालतापनमयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः धर्माचार्यमयीं तर्पयामि धर्माचार्यमयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मुक्तकेशीश्वरमयीं तर्पयामि
मुक्तेकेशीश्वरमयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः दीपकलानाथमयीं तर्पयामि
दीपकलानाथमयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विष्णुदेवमयीं तर्पयामि विष्णुदेवमय तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्रभाकरदेवमयीं तर्पयामि
प्रभाकरदेवमयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः तेजोदेवमयीं तर्पयामि तेजोदेवमयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मनोजदेवमयीं तर्पयामि मनोजदेवमयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कल्याणदेवमयीं तर्पयामि
कल्याणदेवमयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रत्नदेवमयीं तर्पयामि रत्नदेवमयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वासुदेवमयीं तर्पयामि वासुदेवमयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रामानन्दमयीं तर्पयामि रामानन्दमयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अणिमासिद्धिं तर्पयामि अणिमासिद्धं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः लघिमासिद्धिं तर्पयामि लघिमासिद्धं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महिमासिद्धिं तर्पयामि महिमासिद्धं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ईशित्वसिद्धिं तर्पयामि ईशित्वसिद्धं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वशित्वसिद्धिं तर्पयामि वशित्वसिद्धं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्राकाम्यसिद्धिं तर्पयामि प्राकाम्यसिद्धं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भुक्तिसिद्धिं तर्पयामि भुक्तिसिद्धं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः इच्छासिद्धिं तर्पयामि इच्छासिद्धं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्राप्तिसिद्धिं तर्पयामि प्राप्तिसिद्धं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वकामसिद्धिं तर्पयामि सर्वकामसिद्धं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ब्राह्मीं तर्पयामि ब्राह्म्यं तर्पयामि

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः माहेश्वरीं तर्पयामि माहेश्वरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कौमारीं तर्पयामि कौमारं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वैष्णवीं तर्पयामि वैष्णवं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वाराहीं तर्पयामि वाराहं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः माहेन्द्रीं तर्पयामि माहेन्द्रं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चामुण्डां तर्पयामि चामुण्डं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महालक्ष्मीं तर्पयामि महालक्ष्मं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसंक्षोभिणीं तर्पयामि सर्वसंक्षोभणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वविद्राविणीं तर्पयामि सर्वविद्रावणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाकिर्षिणीं तर्पयामि सर्वाकर्षणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्ववशङ्करीं तर्पयामि सर्ववशङ्करं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वोन्मादिनीं तर्पयामि सर्वोन्मादनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमहांङ्कुशां तर्पयामि सर्वमहांङ्कुशं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वखेचरीं तर्पयामि सर्वखेचरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वबीजां तर्पयामि सर्वबीजं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वयोनिं तर्पयामि सर्वयोनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वत्रिखण्डां तर्पयामि सर्वत्रिखण्डं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रैलोक्य मोहनचक्र स्वामिनीं तर्पयामि
त्रैलोक्य मोहनचक्र स्वामिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्रकटयोगिनीं तर्पयामि प्रकटयोगिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामाकर्षिणीं तर्पयामि कामाकर्षणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः बुद्ध्याकर्षिणीं तर्पयामि बुद्ध्याकर्षणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अहङ्काराकर्षिणीं तर्पयामि
अहङ्काराकर्षणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शब्दाकर्षिणीं तर्पयामि शब्दाकर्षणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः स्पर्शाकर्षिणीं तर्पयामि स्पर्शाकर्षणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रूपाकर्षिणीं तर्पयामि रूपाकर्षणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रसाकर्षिणीं तर्पयामि रसाकर्षणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गन्धाकर्षिणीं तर्पयामि गन्धाकर्षणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चित्ताकर्षिणीं तर्पयामि चित्ताकर्षणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः धैर्य्याकर्षिणीं तर्पयामि धैर्य्याकर्षणं तर्पयामि

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः स्मृत्याकर्षिणीं तर्पयामि स्मृत्याकर्षणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नामाकर्षिणीं तर्पयामि नामाकर्षणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः बीजाकर्षिणीं तर्पयामि बीजाकर्षणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः आत्माकर्षिणीं तर्पयामि आत्माकर्षणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अमृताकर्षिणीं तर्पयामि अमृताकर्षणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शरीराकर्षिणीं तर्पयामि शरीराकर्षणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिनीं तर्पयामि
सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गुप्तयोगिनीं तर्पयामि गुप्तयोगिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गकुसुमां तर्पयामि अनङ्गकुसुमं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमेखलां तर्पयामि अनङ्गमेखलं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमदनां तर्पयामि अनङ्गमदनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमदनातुरां तर्पयामि
अनङ्गमदनातुरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गरेखां तर्पयामि अनङ्गरेखं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गवेगिनीं तर्पयामि अनङ्गवेगिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गांकुशां तर्पयामि अनङ्गांकुशं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमालिनीं तर्पयामि अनङ्गमालिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्व संक्षोभणचक्र स्वामिनीं तर्पयामि
सर्व संक्षोभण चक्र स्वामिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गुप्ततरयोगिनीं तर्पयामि गुप्ततरयोगिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसंक्षोभिणीं तर्पयामि सर्वसंक्षोभणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वविद्रावणीं तर्पयामि सर्वविद्रावणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाकर्षिणीं तर्पयामि सर्वाकर्षणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाह्लादिनीं तर्पयामि सर्वाह्लादनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसम्मोहिनीं तर्पयामि सर्वसम्मोहनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वस्तम्भिनीं तर्पयामि सर्वस्तम्भनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वजृम्भणीं तर्पयामि सर्वजृम्भणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्ववशंकरीं तर्पयामि सर्ववशंकरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरञ्जिनीं तर्पयामि सर्वरञ्जनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वोन्मादिनीं तर्पयामि सर्वोन्मादनं तर्पयामि

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वार्थसाधिनीं तर्पयामि सर्वार्थसाधनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसम्पत्तिपूरिणी तर्पयामि
सर्वसम्पत्तिपूरणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमन्त्रमयीं तर्पयामि सर्वमन्त्रमयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करीं तर्पयामि
सर्वद्वन्द्वक्षयंकरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसौभाग्य दायक चक्र स्वामिनीं तर्पयामि
सर्वसौभाग्य दायक चक्र स्वामिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सम्प्रदाय योगिनीं तर्पयामि
सम्प्रदाययोगिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसिद्धिप्रदां तर्पयामि सर्वसिद्धिप्रदं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वप्रियङ्करीं तर्पयामि सर्वप्रियङ्करं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमङ्गलकारिणीं तर्पयामि
सर्वमङ्गलकारिणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वकामप्रदां तर्पयामि सर्वकामप्रदं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वदुःखविमोचिनीं तर्पयामि
सर्वदुःख विमोचनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमृत्युप्रशमनीं तर्पयामि
सर्वमृत्युप्रशमनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वविघ्ननिवारिणीं तर्पयामि
सर्वविघ्ननिवारणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाङ्गसुंदरीं तर्पयामि सर्वाङ्गसुंदरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसौभाग्यदायिनीं तर्पयामि
सर्वसौभाग्यदायिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वार्थचक्र साधक चक्र स्वामिनीं तर्पयामि
सर्वार्थचक्र साधक चक्र स्वामिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कुलोत्तीर्णयोगिनीं तर्पयामि
कुलोत्तीर्णयोगिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वज्ञां तर्पयामि सर्वज्ञं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वशक्तीं तर्पयामि सर्वशक्तं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वैश्वर्य्यप्रदां तर्पयामि सर्वैश्वर्य्यप्रदं तर्पयामि

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वज्ञानमयीं तर्पयामि सर्वज्ञानमयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वव्याधिविनाशिनीं तर्पयामि
सर्वव्याधि विनाशिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाधारस्वरूपां तर्पयामि
सर्वाधारस्वरूपं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वपापहरां तर्पयामि सर्वपापहरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वानन्दमयीं तर्पयामि सर्वानन्दमयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरक्षास्वरूपिणीं तर्पयामि
सर्वरक्षास्वरूपिणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वेप्सितप्रदां तर्पयामि सर्वेप्सितप्रदं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरक्षाकरचक्र स्वामिनीं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः निगर्भयोगिनीं तर्पयामि निगर्भयोगिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वशिनीं तर्पयामि वशिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामेश्वरीं तर्पयामि कामेश्वरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मोदिनीं तर्पयामि मोदिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विमलां तर्पयामि विमलं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अरुणां तर्पयामि अरुणं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः जयिनीं तर्पयामि जयिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वेश्वरीं तर्पयामि सर्वेश्वरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कौलिनीं तर्पयामि कौलिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरोगहर चक्र स्वामिनीं तर्पयामि
सर्वरोगहर चक्र स्वामिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रहस्ययोगिनीं तर्पयामि रहस्ययोगिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वाणिनीं तर्पयामि वाणिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चापिनीं तर्पयामि चापिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः पाशिनीं तर्पयामि पाशिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अंकुशिनी तर्पयामि अंकुशिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाकामेश्वरीं तर्पयामि महाकामेश्वरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महावज्रेश्वरीं तर्पयामि महावजेश्वरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाभगमालिनीं तर्पयामि महाभगमालिनं तर्पयामि

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाश्रीसुन्दरीं तर्पयामि महाश्रीसुन्दरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसिद्धिप्रद चक्र स्वमिनीं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसिद्धिप्रद चक्र स्वमिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अतिरहस्ययोगिनीं तर्पयामि
अतिरहस्ययोगिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः श्रीश्रीमहाभट्टारिकां तर्पयामि
श्रीश्रीमहाभट्टारकं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वानन्दमय चक्र स्वामिनीं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वानन्दमय चक्र स्वामिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः परापर रहस्ययोगिनीं तर्पयामि
परापर रहस्य योगिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरां तर्पयामि त्रिपुरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरेशीं तर्पयामि त्रिपुरेशं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरसुन्दरीं तर्पयामि त्रिपुरसुन्दरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरवासिनीं तर्पयामि त्रिपुरवासिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुराश्रिये तर्पयामि त्रिपुराश्रियं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरमालिनीं तर्पयामि त्रिपुरमालिनं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरासिद्धां तर्पयामि त्रिपुरासिद्धं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुराम्बमहात्रिपुरसुन्दरीं तर्पयामि
त्रिपुराम्बमहात्रिपुरसुन्दरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहेश्वरी तर्पयामि महामहेश्वरं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाराज्ञीं तर्पयामि महामहाराजं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाशक्तिं तर्पयामि महामहाशक्तं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहागुप्तां तर्पयामि महामहागुप्तं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाज्ञप्तां तर्पयामि महामहाज्ञप्तं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहानन्दां तर्पयामि महामहानन्दं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहास्पन्दां तर्पयामि महामहास्पन्दं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाशयां तर्पयामि महामहाशयं तर्पयामि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाश्री चक्रनगर साम्राज्ञीं तर्पयामि
महामहाश्री चक्रनगर साम्राजं तर्पयामि

नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐ ॐ
श्री परदेवतार्पणमस्तु

गुह्याति गुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवति में देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥

अथ श्री मिथुन जयान्त माला

'ह्रीं'

शुक्लपक्ष की पूर्णिमा 15 को — कृष्णपक्ष की प्रतिपदा 1 को

पहले तान्त्रिक पञ्चाङ्ग की सहायता से संकल्प करें। फिर विनियोग एवं न्यासादि के पश्चात् माला पारायण करें।

विनियोग – अस्य श्रीशक्ति शिव मिथुन जयान्त माला मन्त्रस्य पुरुष तत्त्वाधिष्ठायि शिवात्मक सायमादित्य ऋषिः। कृतिच्छन्दः। राजस ह्रींकार भट्टारकपीठ स्थित हरेश्वरी ललिता श्री हिरण्यबाहु कामेश्वर महाभट्टारक मिथुन देवता। ऐं बीजं। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकं। भोग मोक्ष सिद्धौ विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास – पुरुष तत्त्वाधिष्ठायि शिवात्मक सायमादित्य ऋषये नमः शिरसि। कृतिच्छन्दसे नमः मुखे। राजस ह्रींकार भट्टारक पीठ स्थित हरेश्वरी ललिता श्रीहिरण्यबाहुक कामेश्वर महाभट्टारक देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः नाभौ। सौः कीलकाय नमः पादयोः। भोग मोक्ष सिद्धौ विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कराङ्गन्यास : ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यास : ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुँ। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानं : या भोग दायिनी देवी जीवन्मुक्ति प्रदा न सा।
मोक्षदा तु न भोगाय ललिता तु उभय प्रदा ॥

मानस–पूजा –

1. 'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

.... अधोमुख कनिष्ठांगुष्ठ से

2. 'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

...... अधोमुख तर्जनी अंगुष्ठ से

3. 'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

......ऊर्ध्वमुख तर्जन्यंगुष्ठ से

4. 'रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

...... ऊर्ध्वमुख मध्यमांगुष्ठ से

5. 'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

...... अनामांगुष्ठ से

6. 'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी श्रीकामेश्वर मिथुन पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'

...... सर्वाङ्गुलियों से

माला पारायण

इस माला के प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'जय जय' जोड़कर जप करें-

यथा-
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुर सन्दरीं जय जय त्रिपुर सुन्दर जय जय ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरसन्दरीं जय जय त्रिपुर सुन्दरं जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः हृदयदेवि जय जय हृदयदेव जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिरोदेवि जय जय शिरोदेव जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिखादेवि जय जय शिखादेव जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कवचदेवि जय जय कवचदेव जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नेत्रदेवि जय जय नेत्रदेव जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अस्त्रदेवि जय जय अस्त्रदेव जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामेश्वरीं जय जय कामेश्वरं जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भगमालिनि जय जय भगमालिन जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नित्यक्लिन्ने जय जय नित्यक्लिन्न जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भेरुण्डे जय जय भेरुण्ड जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वह्निवासिनि जय जय वह्निवासिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महावज्रेश्वरि जय जय महावज्रेश्वर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शिवदूति जय जय शिवदूत जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्वरिते जय जय त्वरित जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कुलसुन्दरि जय जय कुलसुन्दर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नित्ये जय जय नित्य जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नीलपताके जय जय नीलपताक जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विजये जय जय विजय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमङ्गले जय जय सर्वमङ्गल जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ज्वालामालिने जय जय ज्वालामालिन जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चित्रे जय जय चित्र जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महानित्ये जय जय महानित्य जय जय

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः परमेश्वर परमेश्वरि जय जय
परमेश्वर परमेश्वर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मित्रीशमयि जय जय मित्रेशमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः षष्ठीशमयि जय जय षष्ठीशमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः उड्डीशमयि जय जय उड्डीशमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चर्य्यानाथमयि जय जय चर्य्यानाथमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः लोपामुद्रामयि जय जय लोपामुद्रामय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अगस्त्यमयि जय जय अगस्त्यमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कालतापनमयि जय जय कालतापनमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः धर्माचार्यमयि जय जय धर्माचार्यमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मुक्तेकेशीश्वरिमय जय जय
मुक्तकेशीश्वरमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः दीपकलानाथमयि जय जय
दीपकलानाथमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विष्णुदेवमयि जय जय विष्णुदेवमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्रभाकरदेवमयि जय जय
प्रभाकरदेवमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः तेजोदेवमयि जय जय तेजोदेवमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मनोजदेवमयि जय जय मनोजदेवमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कल्याणदेवमयि जय जय
कल्याणदेवमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रत्नदेवमयि जय जय रत्नदेवमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वासुदेवमयि जय जय वासुदेवमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रामानन्दमयि जय जय रामानन्दमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अणिमासिद्धि जय जय अणिमासिद्ध जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः लघिमासिद्धि जय जय लघिमासिद्ध जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महिमासिद्धि जय जय महिमासिद्ध जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ईशित्वसिद्धि जय जय ईशित्वसिद्ध जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वशित्वसिद्धि जय जय वशित्वसिद्ध जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्राकाम्यसिद्धि जय जय प्राकाम्यसिद्ध जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः भुक्तिसिद्धि जय जय भुक्तिसिद्ध जय जय

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः इच्छासिद्धि जय जय इच्छासिद्ध जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्राप्तिसिद्धे जय जय प्राप्तिसिद्ध जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्क्कामसिद्धे जय जय सर्क्कामसिद्ध जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ब्राह्मि जय जय ब्राह्म जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः माहेश्वर्यै जय जय माहेश्वर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कौमार्यै जय जय कौमार जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वैष्णव्यै जय जय वैष्णव जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वाराह्यै जय जय वाराह जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः माहेन्द्र्यै जय जय माहेन्द्र जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चामुण्डायै जय जय चामुण्ड जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महालक्ष्म्यै जय जय महालक्ष्म्य जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसंक्षोभिण्यै जय जय सर्वसंक्षोभण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वविद्राविण्यै जय जय सर्वविद्रावण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाकार्षिण्यै जय जय सर्वाकर्षण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्ववशङ्कर्यै जय जय सर्ववशङ्कर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वोन्मादिन्यै जय जय सर्वोन्मादन जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमहाङ्कुशाय जय जय
सर्वमहाङ्कुश जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वखेचरि जय जय सर्वखेचर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वबीजे जय जय सर्वबीज जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वयोन्ये जय जय सर्वयोन्य जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वत्रिखण्डे जय जय सर्वत्रिखण्ड जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रैलोक्यमोहनचक्र स्वामिनि जय जय
त्रैलोक्य मोहन चक्र स्वामिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः प्रकटयोगिनि जय जय प्रकटयोगिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामाकर्षिणि जय जय कामाकर्षण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः बुद्ध्याकर्षिणि जय जय बुद्ध्याकर्षण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अहङ्काराकर्षिणि जय जय
अहङ्काराकर्षण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शब्दाकर्षिणि जय जय शब्दाकर्षण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः स्पर्शाकर्षिणि जय जय स्पर्शाकर्षण जय जय

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रूपाकर्षिणि जय जय रूपाकर्षण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रसाकर्षिणि जय जय रसाकर्षण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गन्धाकर्षिणि जय जय गन्धाकर्षण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चित्ताकर्षिणि जय जय चित्ताकर्षण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः धैर्य्याकर्षिणि जय जय धैर्य्याकर्षण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः स्मृत्याकर्षिणि जय जय स्मृत्याकर्षण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः नामाकर्षिणि जय जय नामाकर्षण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः बीजाकर्षिणि जय जय बीजाकर्षण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः आत्माकर्षिणि जय जय आत्माकर्षण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अमृताकर्षिणि जय जय अमृताकर्षण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः शरीराकर्षिणि जय जय शरीराकर्षण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिनि जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गुप्तयोगिनि जय जय गुप्तयोगिन जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गकुसुमे जय जय अनङ्गकुसुम जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमेखले जय जय अनङ्गमेखल जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्ग मदने जय जय अनङ्ग मदन जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमदनातुरे जय जय
अनङ्गमदनातुर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गरेखे जय जय अनङ्गरेख जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गवेगिनि जय जय अनङ्गवेग जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गांकुश जय जय अनङ्गांकुश जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अनङ्गमालिन्यै जय जय अनङ्गमालिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिनि जय जय
सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः गुप्ततरयोगिनि जय जय गुप्ततरयोगिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसंक्षोभिणि जय जय सर्वसंक्षोभण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वविद्राविणि जय जय सर्वविद्रावण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाकर्षिणि जय जय सर्वाकर्षण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाह्लादिनि जय जय सर्वाह्लादन जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसम्मोहिनि जय जय सर्वसम्मोहन जय जय

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वस्तम्भिनि जय जय सर्वस्तम्भन जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वजृम्भणि जय जय सर्वजृम्भण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्ववशंकरि जय जय सर्ववशंकर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरञ्जिनि जय जय सर्वरञ्जन जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वोन्मादिनि जय जय सर्वोन्मादन जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वार्थसाधिनि जय जय सर्वार्थसाधन जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसम्पत्तिपूरिणि जय जय
सर्वसम्पत्तिपूरण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमन्त्रमयि जय जय सर्वमन्त्रमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि जय जय
सर्वद्वन्द्वक्षयंकर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसौभाग्य दायकचक्र स्वामिनि जय जय
सर्वसौभाग्य दायक चक्र स्वामिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सम्प्रदाय योगिनि जय जय
सम्प्रदाययोगिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसिद्धिप्रदे जय जय सर्वसिद्धिप्रद जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वप्रियङ्करि जय जय सर्वप्रियङ्कर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमङ्गलकारिणि जय जय
सर्वमङ्गलकारिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वकामप्रदे जय जय सर्वकामप्रद जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वदुःखविमोचिनि जय जय
सर्वदुःखविमोचन जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वमृत्युप्रशमिनि जय जय
सर्वमृत्युप्रशमन जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वविघ्ननिवारिणि जय जय
सर्वविघ्ननिवारन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाङ्गसुंदरि जय जय सर्वाङ्गसुंदर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसौभाग्यदायिनि जय जय
सर्वसौभाग्यदायिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वार्थ साधक चक्र स्वामिनि जय जय
सर्वार्थ साधक चक्र स्वामिन् जय जय

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कुलोत्तीर्णयोगिनि जय जय
कुलोत्तीर्णयोगिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वज्ञे जय जय सर्वज्ञ जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वशक्ते जय जय सर्वशक्त जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वैश्वर्य्यप्रदे जय जय सर्वैश्वर्य्यप्रद जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वज्ञानमयि जय जय सर्वज्ञानमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वव्याधिविनाशिनि जय जय
सर्वव्याधि विनाशिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वाधारस्वरूपे जय जय
सर्वाधारस्वरूप जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वपापहरे जय जय सर्वपापहर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वानन्दमयि जय जय सर्वानन्दमय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरक्षास्वरूपिणि जय जय
सर्वरक्षास्वरूप जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वेप्सितप्रदे जय जय सर्वेप्सितप्रद जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरक्षाकरचक्र स्वामिनि जय जय
सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः निगर्भयोगिनि जय जय निगर्भयोगिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वशिनि जय जय वशिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कामेश्वरि जय जय कामेश्वर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः मोदिनि जय जय मोदिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः विमले जय जय विमल जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अरुणे जय जय अरुण जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः जयिनि जय जय जयिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वेश्वरि जय जय सर्वेश्वर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः कौलिनि जय जय कौलिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वरोगहर चक्र स्वामिनि जय जय
सर्वरोगहर चक्र स्वामिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः रहस्ययोगिनि जय जय रहस्ययोगिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः वाणिनि जय जय वाणिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः चापिनि जय जय चापिन् जय जय

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः पाशिनि जय जय पाशिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अंकुशिनि जय जय अंकुशिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाकामेश्वरि जय जय महाकामेश्वर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महावज्रेश्वरि जय जय महावजेश्वर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाभगमालिनि जय जय
महाभगमालिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महाश्रीसुन्दरि जय जय महाश्रीसुन्दर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसिद्धिप्रद चक्र स्वमिनि जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसिद्धिप्रद चक्र स्वमिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः अतिरहस्ययोगिनि जय जय
अतिरहस्ययोगिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः श्रीश्रीमहाभट्टारिके जय जय
श्रीश्रीमहाभट्टारक जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वानन्दमय चक्र स्वामिनि जय जय
सर्वानन्दमय चक्र स्वामिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः परापर रहस्ययोगिनि जय जय
परापर रहस्य योगिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरे जय जय त्रिपुर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरेशी जय जय त्रिपुरेश जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरसुन्दरि जय जय त्रिपुरसुन्दर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरवासिनि जय जय त्रिपुरवासिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुराश्रिये जय जय त्रिपुराश्रिय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरमालिनि जय जय त्रिपुरमालिन् जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरासिद्धे जय जय त्रिपुरासिद्ध जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुराम्ब जय जय त्रिपुराम्ब जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महात्रिपुरसुन्दरि जय जय महात्रिपुरसुन्दर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहेश्वरि जय जय महामहेश्वर जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाराज्ञि जय जय महामहाराज जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाशक्ते जय जय महामहाशक्त जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहागुप्ते जय जय महामहागुप्त जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाज्ञप्ते जय जय महामहाज्ञप्त जय जय

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहानन्दे जय जय महामहानन्द जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहास्पन्दे जय जय महामहास्पन्द जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहाशये जय जय महामहाशय जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहा चक्रनगर सम्राज्ञि जय जय
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः महामहा श्री चक्रनगर सम्राज जय जय

नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐ ॐ

श्री परदेवतार्पणमस्तु

गुह्यति गुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवति में देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥

द्वितीय खण्ड

देवी स्तोत्रावली
एवं
नाभि विद्या

देव्यथर्वशीर्षम्

श्री गणेशाय नमः ।। ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति साऽब्रवीदहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च। अहमानंदानानंदौ। अहं विज्ञानाविज्ञाने। अहं ब्रह्माब्रह्मणी। द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये। इति चाथर्वणी श्रुतिः। अहं पंचभूतानि। अहं पंचतन्मात्राणि। अहमखिलं जगत्। वेदोऽहमवेदोऽहम्। विद्याहमविद्याहम्। अजाहमनजाहम्। अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम्। अहँ रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्हिमादित्यैरुत विश्व देवैः। अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि। अहमिंद्राग्नी अहमश्विना उभौ। अहँ सोमं त्वष्टारं भगं दधामि। अहं विष्णुमुरुक्रमम्। ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि। अहं दधामि द्रविणँ हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुव्रते। अहँ राज्ञी संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। अहँ सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वंतः समुद्रे। य एवं वेद स दैवीँ संपदमाप्नोति। ते देवा अब्रुवन् । नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्। तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः। देवीं वाचमजनयंत देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदंति। सा नो मंद्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु ।। कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कंदमातरम्। सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम् । महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्। अदितिर्ह्यजनिष्ठ दक्ष या दुहिता तव। तां देवा अन्वजायंत भद्रा अमृतबंधवः। कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हंसा मातलिश्चाभ्रमिंद्रः। पुनर्गुहा सकला मायया चापृथक् क्लेशा विश्वमातादिविद्याः ।। एषात्म शक्तिः । एषा विश्वमोहिनी पाशांकुशधनुर्बाणधरा। एषा श्रीमहाविद्या। य एवं वेद स शोकं तरति। नमस्ते भगवति मातरस्मान्पाहि सर्वतः। सैषा वैष्णव्यष्टौ वसवः, सैवैकादश रुद्राः, सैषा द्वादशादित्याः, सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च, सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि

पिशाचयक्षसिद्धाः। सैषा सत्त्वरजस्तमांसि, सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी, सैषा प्रजापतींद्रमनवः, सैषा गृहनक्षत्रज्योतिः कलाकाष्ठादि-विश्वरूपिणी, तामहं प्रणौमि नित्यम्। पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम्। अनंतां विजयां शुद्धां शरण्यां सर्वदां शिवाम्। वियदाकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्। अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम्। एवमेकाक्षरं मंत्रं यतयः शुद्धचेतसः। ध्यायंति परमानंदमया ज्ञानांबुराशयः। बाङ्मया ब्रह्मभूस्तस्मात्षष्ठ-वक्त्रसमन्वितम्। सूर्यो वामश्रोत्रबिंदुसंयुक्ताष्टतृतीयकम्। नारायणेन संमिश्रो वायुश्चाधारयुक्ततः। विच्चेनवार्णकोणस्य महाना-नंददायकः। हृत्पुडरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम्। पाशांकुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्। त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुहं भजे। भजामि त्वां महादेवि महाभयविनाशिनि। महादारिद्र्यशमनि महाकारुण्य- रूपिणि। यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानंति तस्मादुच्यते अज्ञेया। यस्या अंतो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनंता। यस्या लक्षं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्षा। यस्या जननं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अजा। एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका। एकैव विश्वरुपिणी तस्मादुच्यतेऽनेका। अत एवोच्यतेऽज्ञेयाऽनंता-लक्ष्याऽजैकानेका। मंत्राणां मातृका देवीं शब्दानां ज्ञानरूपिणी। ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी ॥ यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता। तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्। नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्। इदमथर्वशीर्षं योऽधीते। स पंचाथर्वशीर्ष- फलमाप्नोति। इदमथर्वशीर्षं ज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति। शतलक्षं प्रजप्त्वापि नार्चाशुद्धिं च विंदति। शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः। दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते। महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायंप्रातः प्रयुंजानोऽपापो भवति। निशीथे तुरीयसंध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति। नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासांनिध्यं भवति। भौमाश्विन्यां महादेवीसंनिधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति स महामृत्युं तरति य एवं वेद। इत्युपनिषत्॥ इति देव्यथर्वशीर्षं संपूर्णम् ॥

देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

श्रीगणोशाय नमः ॥ न मंत्रं नो यंत्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो । न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः। न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं । परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥1॥ विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया । विधेयाशक्यत्त्वात्तव चरणयोर्याच्युतिरभूत्। तदेतत्क्षंतव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे । कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥2॥ पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः संति सरलाः । परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः। मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे । कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥3॥ जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता । न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया। तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे। कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥4॥ परित्यक्त्वा देवान्विविधविधसेवाकुलतया । मया पंचाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि। इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता । निरालंबो लंबोदरजननि कं यामि शरणम् ॥5॥ श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा । निरातंको रंको विहरति चिरं कोटिकनकैः। तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं। जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥6॥ चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो । जटाधारी कंठे भुजगपतिहारी पशुपतिः। कपालीभूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं । भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम्॥7॥ न मोक्षस्याकांक्षा न च विभववांछापि च न मे । न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छाऽपि न पुनः। अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै । मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥8॥ नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः । किं रूक्षचिंतनपरैर्न कृतं वचोभिः। श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाथे । धत्से कृपामुचितमंबपरं तवैव ॥9॥ आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशिवे। नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरंति ॥10॥ जगदंब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणाऽस्ति चेन्मयि। अपराधपरंपरावृतं न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥11॥ मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि। एवं ज्ञात्वा महादेवि यथा योग्यं तथा कुरु ॥12॥ इति

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमच्छंकराचार्यविरचितं देव्यपराध क्षमापनस्तोत्रं संपूर्णम्॥

आनंदलहरी ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ भवानि स्तोतुं त्वां प्रभवति चतुर्भिर्न वदनैः । प्रजानामीशानस्त्रिपुरमथनः पंचभिरपि । न षड्भिः सेनानीर्दशशतमुखैरप्यहिपतिस्तदाऽन्येषां केषां कथय कथ-मस्मिन्नवसरः ॥1॥ घृतक्षीरद्राक्षामधुमधुरिमा कैरपि पदैर्विशिष्यानाख्येयो भवति रसनामात्र विषयः। तथा ते सौंदर्यं परमशिवदृङ्मात्रविषयः। कथंकारं ब्रूमः सकलनिगमाऽगोचरगुणे ॥2॥ मुखे ते तांबूलं नयनयुगले कज्जलकला । ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिकलता। स्फुरत्कांची शाटी पृथुकटितटे हाटकमयी । भजामस्त्वां गौरीं नगपतिकिशोरीमविरतम् ॥3॥ विराजन्मन्दारद्रुमकुसुमहारस्तनतटी। नदद्वीणानाद श्रवणविल सत्कुंडलगुणा। नतांगी मातंगी रुचिरगतिभंगी भगवती । सती शंभोरंभोरुहचटुल चक्षुर्विजयते ॥4॥ नवीनार्कभ्राजन्मणि कनकभूषापरिकरै । वृतांगी सारंगी रुचिरनयनांगीकृतशिवा। तडित्पीता पीतांबरललित- मंजीरसुभगा। ममाऽपर्णा पूर्णा निरवधिसुखैरस्तु सुमुखी ॥5॥ हिमाद्रेः संभूता सुललितकरैः पल्लवयुता । सुपुष्पा मुक्ताभिर्भ्रमरकलिता चालकभरैः। कृतस्थाणु-स्थाना कुचफलनता सूक्तिसरसा । रुजां हंत्री गंत्री विलसति चिदानंदलतिका ॥6॥ सपर्णामाकीर्णां कतिपयगुणैः सादरमिह। श्रयंत्यन्ये वल्लीं मत तु मतिरेवं विलसति। अपर्णैका सेव्या जगति सकलैर्यत्परिवृतः । पुराणोऽपि स्थाणुः फलति किल कैवल्यपदवीम् ॥7॥ विधात्री धर्माणां त्वमसि सकलाम्नाय- जननी । त्वमर्थानां मूलं धनदनमनीयाङ्घ्रिकमले। त्वमादिः कामानां जननि कृतकंदर्पविजये । सतां भक्तेर्बीजं त्वमसि परमब्रह्ममहिषी ॥8॥ प्रभूता भक्तिस्ते यदपि न ममालोलमनसस्त्वया तु श्रीमत्या सदयम्-वलोक्योऽहमधुना। पयोदः पानीयं दिशति मधुरं चातकमुखे । भृशं शंके कैर्वा विधिभिरनुनीता मम मतिः ॥9॥ कृपापांगालोकं वितर तरसा साधुचरिते । न ते युक्तोपेक्षा मयि शरणदीक्षामुपगते। न

चेदिष्टं दद्यादनुपदमहो कल्पलतिका । विशेष: सामान्यै: कथमितरवल्लीपरिकरै: ॥10॥ महांतं विश्वासं तव चरणपंकेरुहयुगे। निधायान्यन्नैवाश्रितमिह मया दैवतमुमे। तथापि त्वच्चेतो यदि मयि न जायेत सदयं । निरालंबो लंबोदरजननि कं यामि शरणम् ॥11॥ अय:स्पर्शे लग्नं सपदि लभते हेमपदवीं । यथा रथ्यापाथ: शुचि भवति गंगौघमिलितम्। तथा तत्तत्पापेरतिमलिनमंतर्मम यदि । त्वयि प्रेम्णासक्तं कथमिव न जायेत विमलम् ॥12॥ त्वदन्य-स्मादिच्छाविषयफललाभेन नियम: । त्वमर्थाना- मिच्छाधिकमपि समर्था वितरणे। इति प्राहु: प्रांच्च: कमलभवनाद्यास्त्वयि मन:। त्वदासक्तं नक्तंदिवमुचितमीशानि कुरु तत् ॥13॥ स्फुरन्नानारत्नस्फटिकमयभित्तिप्रतिफलं। त्वदाकारं चंचच्छशधर-विलासौघशिखरम्। मुकुंदब्रह्मेंद्र प्रभृतिपरिवारं विजयते। तवागारं रम्यं त्रिभुवनमहाराज- गृहिणि ॥14॥ निवास: कैलासे विधिशतमखाद्या: स्तुतिकरा: । कुटुंबं त्रैलोक्यं कृतकरपुट: सिद्धनिकर:। महेश: प्राणेशस्तदवनिधराधीशतनये । न ते सौभाग्यस्य क्वचिदपि मनागस्ति तुलना ॥15॥ वृषो वृद्धो यानं विषमशनमाशा निवसनं । श्मशानं क्रीडाभूर्भुजगनिवहो भूषणनिधि:। समग्रा सामग्री जगति विदितैव स्मररिपो: तदेतस्यैश्वर्यं तव जननि सौभाग्यमहिमा ॥16॥ अशेषब्रह्मांड- प्रलयविधिनैसर्गिकमति: । श्मशानेष्वासीन: कृतभसितलेप: पशुपति:। दधौ कंठे हालाहलमखिलभूगोलकृपया । भवत्या: संगत्या: फलमिति च कल्याणि कलये ॥17॥ त्वदीयं सौंदर्यं निरतिशयमालोक्य परया । भियैवासीद्गंगा जलमयतनु: शैलतनये। तदेतस्या स्ताम्यद्वदनकमलं वीक्ष्य कृपया । प्रतिष्ठामातेने निजशिरसि वासेन गिरिश: ॥18॥ विशालश्रीखंडद्रवमृगमदाकीर्णघुसृण:। प्रसूनव्यामिश्रं भगवति तवाभ्यंगसलिलम्। समादाय स्रष्टा चलितपदपांसून्निजकरै: । समाधत्ते सृष्टिं विबुधपुरपंकेरुहदृशाम् ॥19॥ वसंते सानंदे कुसुमितलताभि: परिवृते । स्फुरन्नानापद्मे सरसि कलहंसालिसुभगे। सखीभि: खेलंतीं मलयपवनांदोलितजलै:। स्मरेद्यस्त्वां तस्य ज्वरजनित- पीडाऽपसरति ॥20॥ इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमच्छंकराचार्यविरचितानंदलहरी संपूर्णा ॥

त्रिपुरसुंदरीस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः ॥ कदंबवनचारिणीं मुनिकदंबकादंबिनीं नितम्बजितभूधरां सुरनितंबिनीसेविताम् । नवांबुरुहलोचनाम-भिनवांबुदश्यामलां त्रिलोचनकुटुंबिनीं त्रिपुरसुंदरीमाश्रये ॥1॥ कदंब वनवासिनीं कनकवल्लकीधारिणीं महार्हमणिहारिणीं मुखसमुल्लसद्वारुणीम्। दयाविभवकारिणीं विशदलोचनीं चारिणीं त्रिलोचन कुटुंबनीं त्रिपुरसुंदरीमाश्रये ॥2॥ कदंबवनशालया कुचभरोल्लसन्मालया कुचोपमितशैलया गुरुकृपालसद्वेलया। मदारुणकपोलया मधुरगीतवाचालया कयापि घननीलया कवचिता वयं लीलया ॥3॥ कदंबवनमध्यगां कनकमंडलोपस्थितां षडंबुरुहवासिनीं सततसिद्धिसौदामिनीम्। विडंबितजपारुचिं विकचचंद्र चूडामणिं त्रिलोचनकुटुंबिनीं त्रिपुरसुंदरीमाश्रये ॥4॥ कुचांचितविपंचिकां कुटिलकुंतलालंकृतां कुशेशयनिवासिनीं कुटिलचित्तविद्वेषिणीम्। मदारुणविलोचनां मनसिजारि संमोहिनीं मतंगमुनिकन्यकां मधुरभाषिणीमाश्रये ॥5॥ स्मरेत्प्रथमपुष्पिणीं रुधिर बिंदुनीलांबरां गृहीतमधुपात्रिकां मधुविघूर्णनेत्रांचलाम्। घनस्तन भरोन्नतां गलितचूलिकां श्यामलां त्रिलोचनकुटुंबिनीं त्रिपुरसुंदरीमाश्रये ॥6॥ सकुंकुमविलेपनामलकचुंबिकस्तूरिकां समंदहसितेक्षणां सशरचापपाशांकुशाम्। अशेषजनमोहिनीमरुणमाल्यभूषांबरां जपाकुसुमभासुरां जपविधौ स्मराम्यंबिकाम् ॥7॥ पुरंदरपुरंध्रिकाचिकुरबंधसैरंध्रिकां पितामहपतिव्रतां पटुपटीर-चर्चारताम् । मुकुंदरमणीं मणीलसदलंक्रियाकारिणीं भजामि भुवनांबिकां सुरवधूटिकाचेटिकाम् ॥8॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमच्छंकराचार्यविरचितं त्रिपुर सुंदरीस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

शीतलाष्टकम्

श्रीगणेशाय नमः ॥ अस्य श्रीशीतलाष्टकस्तोत्रस्य महादेव ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, शीतला देवता, लक्ष्मीर्बीजम्, भवानी शक्तिः, सर्वविस्फोटकनिवृत्तये जपे विनियोगः ॥ ईश्वर उवाच ॥ वंदेऽहं

शीतलां देवीं रासभस्थां दिगंबराम् । मार्जनीकलशोपेतां शूर्पालंकृतमस्तकाम् ॥1॥ वंदेऽहं शीतलां देवीं सर्वरोगभयापहाम् । यामासाद्य निवर्तेत विस्फोटकभयं महत् ॥2॥ शीतले शीतले चेति यो ब्रूयाद्दाहपीडितः । विस्फोटकभयं घोरं क्षिप्रं तस्य प्रणश्यति ॥3॥ यस्त्वामुदकमध्ये तु धृत्वा पूजयते नरः। विस्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥4॥ शीतले ज्वरदग्धस्य पूतिगंधयुतस्य च। प्रनष्टचक्षुषः पुंसस्त्वामाहुर्जीवनौषधम् ॥5॥ शीतले तनुजान्रोगान्नृणां हरसि दुस्त्यजान् । विस्फोटकविदीर्णानां त्वमेकामृतवर्षिणी ॥6॥ गलगंडग्रहा रोगा ये चान्ये दारुणा नृणाम् । त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यांति संक्षयम् ॥7॥ न मंत्रो नौषधं तस्य पापरोगस्य विद्यते। त्वामेकां शीतले धात्रीं नान्यां पश्यामि देवताम् ॥8॥ मृणालतंतुसदृशीं नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम् । यस्त्वां संचिंतयेद्देवि तस्य मृत्युर्न जायते ॥9॥ अष्टकं शीतलादेव्या यो नरः प्रपठेत्सदा । विस्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥10॥ श्रोतव्यं पठितव्यं च श्रद्धाभक्तिसमन्वितैः। उपसर्गविनाशाय परं स्वस्त्ययनं महत् ॥11॥ शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता ।शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः ॥12॥ रासभो गर्दभश्चैव खरो वैशाखनंदनः । शीतलावाहनश्चैव दूर्वाकंदनिकृंतनः ॥13॥ एतानि खरनामानि शीतलाग्रे तु यः पठेत्। तस्य गेहे शिशूनां च शीतलारुङ्. न जायते ॥14॥ शीतलाष्टकमेवेदं न देयं यस्यकस्यचित् । दातव्यं च सदा तस्मै श्रद्धाभक्तियुताय वै ॥15॥ इति श्रीस्कंदपुराणे शीतलाष्टकस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

वाराहीनिग्रहाष्टकम्

श्रीगणेशाय नमः ॥ देवि क्रोडमुखि त्वदंघ्रिकमलद्वंद्वानुरक्तात्मने । मह्यं द्रुह्यति यो महेशि मनसा कायेन वाचा नरः। तस्याशु त्वदयोग्रनिष्ठुरहलाघातप्रभूतव्यथा । पर्यस्यन्मनसो भवंतु वपुषः प्राणाः प्रयाणोन्मुखाः ॥1॥ देवि त्वत्पदपद्म-भक्तिविभवप्रक्षीणदुष्कर्मणि । प्रादुर्भूतनृशंसभावमलिनां वृत्तिं विधत्ते मयि। यो देही भुवने तदीयहृदयान्निर्गत्वरैर्लोहितैः । सद्यः पूरयसे कराब्जचषकं वांछाफलैर्मामपि ॥2॥ चंडोत्तुंडविदीर्णदंष्ट्रहृदय-

प्रोद्भिन्नरक्तच्छटा । हालापानमदाट्टहासनिनदाटोपप्रतापोत्कटम्। मातर्मत्परिपंथिनामपहृतैः प्राणैस्त्व दंघ्रिद्वयं । ध्यानोद्दामर–वैर्भवोदयवशात्संतर्पयामि क्षणात् ॥3॥ श्यामां ताम रसाननांघ्रिनयनां सोमार्धचूडां जगत्त्राणव्यग्र हलायुधाग्रमुसलां संत्रासमुद्रावतीम् । ये त्वां रक्तकपालिनीं हरवरारोहे वराहाननां । भावैः संदधते कथं क्षणमपि प्राणन्ति तेषां द्विषः ॥4॥ विश्वाधीश्वरबल्लभे विजयसे या त्वं नियंत्र्यात्मिका। भूतांता पुरुषायुषावधिकरी पाकप्रदा कर्मणाम्। त्वां याचे भवतीं किमप्यवितथं यो मद्विरोधी तनः। तस्यायुर्मम वांछितावधि भवेन्मातस्तवैवाज्ञया ॥5॥ मातः सम्यगुपासितुं जडमतिस्त्वां नैव शक्नोम्यहं । यद्यप्यन्वितदैशिकाङ्घ्रि कमलानुक्रोशपात्रस्य मे। जंतुः कश्चन चिंतयत्यकुशलं यस्तस्य तद्वैशसं । भूयाद्देवि विरोधिनो मम च ते श्रेयःपदासंगिनः ॥6॥ वाराहि व्यथमानमानसगलत्सौख्यं तदाशाबलिं । सीदंतं यमपाकृताध्यवसितं प्राप्ताखिलोत्पादितम् । क्रंदद्बंधुजनैः कलंकितकुलं कंठव्रणोद्यत्कृमिं । पश्यामि प्रतिपक्षमाशु पतितं भ्रांतं लुठंतं मुहुः ॥7॥ वाराहि त्वमशेषजंतुषु पुनः प्राणात्मिका स्पंदसे। शक्तिव्याप्तचराचरा खलु यतस्त्वामेतदभ्यर्थये। त्वत्पादांबुज- संगिनो मम सकृत्पापं चिकीर्षंति ये । तेषां मा कुरु शंकर प्रियतमे देहांतरावस्थितिम् ॥8॥ इति श्रीवाराही निग्रहाष्टकं संपूर्णम् ॥

त्रिपुरसुन्दरीषोडशोपचारपूजास्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः ॥ कल्पलतादिसुरद्रुमवाटीकल्पित–रत्नगृहाधिनिवासाम्। कल्पशतार्जितपुण्यविशेषाच्चेतसि भावनयाहमुपासे ॥1॥ एणधराश्मकृतोन्नतधिष्ण्यं हेमविनिर्मितपादमनोज्ञम्। शोणशिलाफलकं च विशालं देवि सुखासनमद्य ददामि ॥2॥ ईशमनोहररूपविलासे शीतलचन्दनकुङ्कुममिश्रम् । हृद्यसुवर्णघटे परिपूर्णं पाद्यमिदं त्रिपुरेशि गृहाण ॥3॥ लब्धभवत्करुणोऽहमिदानीं रत्नसुभाक्षतयुक्तमनर्घम्। रुक्मविनिर्मितपात्र विशेषेष्वर्ध्यमिदं त्रिपुरेशि ददामि ॥4॥ ह्रींमिति मन्त्रजपेन सगम्ये

हेमलतोज्ज्वलदिव्यशरीरे। योगिमनःसमशीतजलेन ह्याचमनं त्रिपुरेऽद्य विधेहि ॥5॥ हस्तलसत्कटकादिसुभूषा आदरतोऽम्ब वरोप्यनिधाय । चन्दनवासितमन्त्रिततोयैः स्नानमयि त्रिपुरेशि विधेहि ॥6॥ सञ्चितमम्ब मया ह्यतिमूल्यं कुङ्कुमशोणमतीव मृदु त्वम् । शङ्करतुङ्गतराङ्कनिवासे वस्त्रयुगं त्रिपुरे परिधेहि ॥7॥ कन्दलदंशुकिरीटमनर्घं कङ्कण कुण्डलनूपुरहारम्। अङ्गदमङ्गुलिभूषणमम्ब स्वीकुरु देवि पुराधिनिवासे ॥8॥ हस्तलसच्चतुरायुधजाले शस्ततरं मृगनाभिसमेतम्। सद्धनसारसुकुङ्कुममिश्रं चन्दनपङ्कमिदं च गृहाण ॥9॥ लब्धविकासकदम्बकजातीचम्पकपङ्कजकेतकयुक्तैः। पुष्प-चयैर्मनसावचितैस्त्वामम्ब पुरेशि भवानि भजामि ॥10॥ ह्रींपदशोभिमहामनुरूपे धूरसिमन्त्रवरेण मनोज्ञम् । अष्टसुगन्धरजःकृतमाद्ये धूपमिदं त्रिपुरेशि ददामि ॥11॥ सन्तमसापहमुज्ज्वलपात्रे गव्यघृतैः परिवर्धितदेहम्। चम्पककुड्मलवृन्दसमानं दीपगणं त्रिपुरेऽद्य गृहाण ॥12॥ कल्पितमद्य धियाऽमृतकल्पं दुग्धसितायुतमन्नविशेषम् ॥13॥ लङ्घितकेतकवर्णविशेषैः शोधितकोमलनागदलैश्च। मौक्तिकचूर्णयुतैः क्रमुकाद्यैः पूर्णतराम्ब पुरस्तव पात्री ॥14॥ ह्रींत्रयपूरितमन्त्रविशेषं पञ्चदशीमपि षोडशरूपम् । संचितपापहरं च जपित्वा मन्त्रसुमाञ्जलिमम्ब ददामि ॥15॥ श्रींपदपूर्णमहामनुरूपे श्री शिवकाममहेश्वरजाये। श्रीगुहवन्दितपादपयोजे श्रीललितापरमेशि नमस्ते ॥16॥ इति श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरीषोडशोपचारपूजास्तोत्रं संपूर्णम् ॥

श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यपराधक्षमापनस्तवः

श्रीगणेशाय नमः। कञ्जमनोहरपादचलन्मणिनूपुर-हंसविराजिते । कञ्जभवादिसुरोघपरिष्टुतलोकविसृत्वरवैभवे। मञ्जुलवाङ्मयनिर्जितकीरकुलेऽचलराजसुकन्यके। पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥1॥ एणधरोज्ज्वल-फालतलोल्लसदैणमदाङ्कसमन्विते । शोणपरागविचित्रित-कन्दुकसुन्दरसुस्तनशोभिते। नीलपयोधर कालसुकुन्तल-निर्जितभृङ्गकदम्बके। पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके

॥2॥ ईतिविनाशिनि भीतिनिवारिणि दानवहन्त्रि दयापरे । शीतकराङ्कितरत्न विभूषितहेमकिरीटसमन्विते। दीप्ततरायुध-भण्डमहासुरगर्वनिहन्त्रि पुराम्बिके । पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥3॥ लब्धवरेण जगत्त्रयमोहन- दक्षलतान्त महेषुणा। लब्धमनोहर सालनिषण्णसुदेहभुवा परिपूजते । लङ्घितशासन दानवनाशनदक्षमहायुधराजिते । पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥4॥ ह्रींपदभूषित-पञ्चदशाक्षरषोडशवर्णसुदेवते । ह्रीमति हादिमहा मनुमन्दिररत्नविनिर्मितदीपिके। हस्तिवरानन दर्शितयुद्ध-समादरसाहसतोषिते । पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥5॥ हस्तलसन्नवपुष्पशरेक्षुशरासन-पाशमहाङ्कुशे । हर्यजशंभुमहेश्वरपादचतुष्टयमञ्चनिवासिनि। हंसपदार्थ महेश्वरि योगिसमूहसमादृतवैभवे । पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥6॥ सर्वजगत्करणावन नाशनकर्त्रि कपालमनोहरे। स्वच्छमृणालमरालतुषारसमान- सुहारविभूषिते। सज्जनचित्तविहारिणि शङ्करि दुर्जननाशनतत्परे । पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥7॥ कञ्जदलाक्षि निरञ्जनि कुञ्जरगामिनि मञ्जुलभाषिते। कुङ्कुमपङ्कविलेपनशोभितदेहलते त्रिपुरेश्वरि। दिव्यमतङ्गसुताधृतराज्यभरे करुणारसवारिधे। पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥8॥ हल्लकचम्पक पङ्कजकेतकपुष्प सुगन्धितकुन्तले । हाटकभूधरशृङ्गविनिर्मित सुन्दरमन्दिरवासिनि। हस्तिमुखाम्ब वराहमुखीधृतसैन्यवरे गिरिकन्यके। पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥9॥ लक्ष्मणसोदर- सादरपूजितपादयुगे वरदे शिवे । लोहमयादिबहून्नतसाल- निषण्णबुधेश्वरसंवृते। लोलमदाल सलोचननिर्जितनीलसरोजसुमालिके । पालय हे ललिता परमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥10॥ ह्रीमंतिमन्त्र महाजपसुस्थिर साधकमानसहंसिके। हर्षितशीतकराननशोभिनि हेमलतेव सुभाखरे। हार्दतमोगुणनाशनि पाशविमोचनि मोक्षसुखप्रदे । पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥11॥ सच्चिदभेद सुखामृतवर्षिणि तत्त्वमसीति सदादृते। सद्गुणशालिनि

साधुसमर्चितपादयुगे- परशाम्भवि। सर्वजगत्परिपालन दीक्षितबाहुलतायुगशोभिते । पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥12॥ कम्बुगले वरकुन्दरदे रसरञ्जितपादसरोरुहे। काममहेश्वरकामिनि कोकिलकोमलभाषिणि भैरवि । चिन्तितसर्व-मनोरथपूरणकल्पलते करुणार्णवे । पालय हे ललिता- परमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥13॥ हस्तकशोभि- करोज्ज्वल-कङ्कणकान्तिसुदीपितदिङ्मुखे। शस्ततरत्रिदशालयकार्यसमादृत-दिव्यतनूज्ज्वले । कश्चतुरो भुवि देवि पुरेशि भवानि तव स्तवने भवेत् । पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥14॥ ह्रींपदलाञ्छितमन्त्रपयोनिधि- मन्थनजातपरामृते । हव्यवहानिल-भूयजमानकखेन्दुदिवाकर- रूपिणि। हर्यजरुद्रमहेश्वरसंस्तुतवैभव-शालिनि सिद्धिदे । पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥15॥ श्रीपुरवासिनि हस्तलसद्वरचामरवाक्कमलानुते । श्रीगुहपूर्व भवार्जितपुण्यफले भवमत्तविलासिनि। श्रीवशिनीविमलादि-सदानतपादचलन्मणिनूपुरे । पालय हे ललितापरमेश्वरि मामपराधिनमम्बिके ॥16॥

इति श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यपराधक्षमापनस्तवः संपूर्णः॥

दुर्गापदुद्धारस्तवराजः ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे, नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे। नमस्ते जगद्वन्द्यपादारविन्दे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥1॥ नमस्ते जगच्चिन्त्यमान- स्वरूपे, नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे। नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे । नमस्ते० ॥2॥ अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य, भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः । त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री । नमस्ते० ॥3॥ अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्येऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे। त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका नमस्ते० ॥4॥ अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे, विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम्। त्वमेका गतिर्देवि निस्तार हेतुर्नमस्ते० ॥5॥ नमश्चण्डिके चण्डदुर्दण्डलीला, समुत्खण्डिताखण्डिताशेषशत्रो । त्वमेका, गतिर्देवि निस्तारबीजं । नमस्ते० ॥6॥ त्वमेवाघभावाधृतासत्यवादीर्न, जाताजितक्रोधनात्क्रोधनिष्ठा। इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्णा च नाडी ।

नमस्ते० ॥7॥ नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे, सरस्वत्यरुन्धत्यमोघस्वरूपे। विभूतिः शची कालरात्रिः सतिः त्वं । नमस्ते० ॥8॥ शरणमसि सुराणां सिद्ध विद्याधराणां मुनिमनुजपशूनां दस्युभिस्त्रासितानाम् । नृपति गृहगतानां व्याधिभिः पीडितानां त्वमसि शरणमेका देवि दुर्गे प्रसीद ॥9॥ इदं स्तोत्रं मया प्रोक्तमापदुद्धारहेतुकम्। त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा पाठनाद् घोरसङ्कटात् ॥10॥ मुच्यते नात्र सन्देहो भुवि स्वर्गे रसातले । सर्वं वा श्लोकमेकं वा यः पठेद्भक्तिमान् सदा ॥11॥ स सर्वं दुष्कृतं त्यक्त्वा प्राप्नोति परमं पदम्। पठनादस्य देवेशि किं न सिध्यति भूतले ॥12॥ स्तवराजमिमं देवि संक्षेपात्कथितं मया ॥13॥ इति श्रीसिद्धेश्वरीतन्त्रे उमामहेश्वरसंवादे श्रीदुर्गापदुद्धारस्तवराजः संपूर्णः ॥

वाग्वादिनीस्तोत्रम् ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ अस्य श्रीवाग्वादिनीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, देवीविजयागायत्री छंदः, वाग्वादिनी देवता, ॐ बीजम्, मौं शक्तिः ह्रीं कीलकम्, श्रीवाग्वादिनीदेवताप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। एतैर्न्यासं कृत्वा संविदपठनीयो मन्त्रं "ॐ वद वद ह्रीं वाग्वादिनीं मौं स्वाहा," इत्यनेन सप्तभिर्गृहीत्वा मंत्रं भक्षयेत्। अथवा 'ॐ जय जय विजय परब्रह्मस्वरूपिणि सर्वजनं मे वशमानय आनंदय जंभू स्वाहा' इत्यनेन वा जप्त्वा भक्षयेत् । अथवा स्वगृहीतमंत्रेण जपित्वा भक्षयेत् । अथानंतरतो देवीसमयास्तोत्रमुत्तमम्। यैः स्तुता सिद्धिदा मूली भक्षिता फलदा भवेत् ॥1॥ संबिदे ब्रह्मंसंभूते ब्रह्मपुत्रि सदानघे। भैरवानांचप्रीत्यर्थं पवित्रा भव सर्वदा ॥2॥ नमामि कामिनीं नाथलेखालंकृतकुण्डलाम् । भवानीं भवसंतापनिर्वापणसुधानिधिम् ॥3॥ सिद्धिमूलिप्रिये देवि हीनबोधप्रबोधिनि । राजप्रजावशंकरि कालकंठे त्रिशूलिनि ॥4॥ अज्ञानेऽनधीतेऽपि ज्ञानाग्निज्वालरूपिणि। आनंदाद्याहुतिः प्रीतिः सम्यग्ज्ञानं प्रयच्छ मे ॥5॥ दंडादिरूढपरिपूरितमोक्षभोगान् शुण्डक्रमेण मदनांचन- कामिनीं ताम्। आराधयामि बहुशत्रुपराजयंतीं विश्वेश्वरीं त्रिभुवनां विजयादिदेवीम् ॥6॥ आनंदनंदिनीनंदे सदा वंदे पदद्वयम्। उल्लासकदलीकंदे स्वच्छंदे

बोधरूपिणि ॥7॥ कवयः कवितालहरीं कृते तत्त्वार्थदर्शनात् । आसदूरितदुरितनिलयं किं न करोति सा ॥8॥ संविदासवयोर्मध्ये संविदेव गरीयसी । भक्षिता भवनाशाय निर्गंधबोधरूपिणी ॥9॥ सुसंविच्छूलिनी देवी विजया संविदेच्चुरी । वैष्णवी तुलसी तुंगा तेजोवल्ली रसेश्वरी ॥10॥ वीरसूर्देवरत्ना च वीरलक्ष्मीर्महेश्वरी। शमया मोहनं चैव सिद्धमूली महौषधी ॥11॥ मातुलानी ज्ञानरूपा सिद्धविद्या सरस्वती। यानि चैतानि नामानि सेवयेत्सिद्धमूलिकाम् ॥12॥ स प्राप्नोति परां विद्यां भुक्तिं मुक्तिं च वाञ्छितम् । पाण्डित्यं च कवित्वं च मंत्रसिद्धिं च विंदति ॥13॥ इति श्रीरुद्रयामलतंत्रे वाग्वादिनीस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

षोडशीस्तोत्र

कल्याणवृष्टिभिरिवामृतपूरिताभिर्लक्ष्मीस्वयंवरगमङ्गलदीपिकाभिः। सेवाभिरम्ब तव पादसरोज मूले नाकारि किं मनसि भक्तिमतां जनानाम् ॥1॥ एतावदेव जननि स्पृहणीयमास्ते त्वद्वन्दनेषु सलिलस्थसरोजनेत्रे। सान्निध्यमुद्यदरुणाम्बुजसोदरस्य त्वद्विग्रहस्य सुधया परयाऽऽप्लुतस्य॥2॥ ईषत्प्रभावकलुषाः कति नाम संति ब्रह्मादयः प्रतिदिनं प्रलयाभिभूताः। एकस्स एव जननि स्थिरसिद्धिरास्ते यः पादयोस्तव सकृत्प्रणतिं करोति ॥3॥ लब्ध्वा सकृत त्रिपुरसुन्दरि तावकीनं कारुण्यकन्दलितकंन्तिभरं कटाक्षम् कन्दलित। कन्दर्प्पभावसुभगास्त्वयि भक्तिभावः सम्मोहयन्ति तरुणीं भुवनत्रयेऽपि ॥4॥ ह्रींकारमेव तव नाम गृणन्ति ये वा मातस्त्रिकोणनिलये त्रिपुरे त्रिनेत्रे। त्वत्संस्मृतौ यमभटादिभयं विहाय दीव्यन्ति नन्दनवने सह लोकपालैः ॥5॥ हन्तुः पुरामधिगलं परिपूर्णमानः क्रूरः कथन्न भविता गरलस्य वेगः। नाश्वासनाय यदि मातरिदं तवार्द्धदेहस्य शश्वदमृताप्लुतशीतलस्य ॥6॥ सर्वज्ञतां सदसि वाक्पटुतां प्रसूते देवि त्वदंघ्रिसरसीरुहयोः प्रणामः। किञ्च स्फुरन्मुकुटमुज्ज्वल मातपत्रं द्वे चामरे च महतीं वसुधां ददाति ॥7॥ कल्पद्रुमैरभिमतप्रति पादनेषु। कारुण्यवारिधिभिरम्ब भवत्कटाक्षैः। आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मामनाथं। त्वय्यैव भक्तिभरितं त्वयि बद्धदृष्टिम् ॥8॥ हन्तेतरेष्वपि निधाय मनांसि चान्ये। भक्तिं वहंनि

किल सापरदैवतेषु। त्वामेव देवि मनसाहमनुस्मरामि। त्वामेव नौमि शरणं जननि त्वमेव॥9॥ लक्षेषु सत्स्वपि तवाक्षिविलोकनाना मालोकय त्रिपुरसुन्दरि मां कथंचित्। नूनं मया च सदृशं करुणैकपात्रं जातो जनिष्यति जनो न च जायते वा ॥10॥ ह्रींह्रींमिति प्रतिदिनं जपतां तवाख्यां किन्नाम दुर्लभमिह त्रिपुराभिधाने। मालाकिरीटमदवारणमाननीयां। स्तान्सेवते मधुमती स्वयमेव लक्ष्मीः ॥11॥ सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि साम्राज्यदानकुशलानि सरोरुहाणि। त्वद्वंदनानि दुरितोद्धरणोद्यतानि मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम् ॥12॥ कल्पोपसंहरणकल्पितताण्डवस्य देवस्य खण्डपरशोः परभैरवस्य। पाशांकुशैक्षवशरासनपुष्पबाणाः सा साक्षिणी विजयते तव मूर्तिरेका ॥13॥ लग्नं सदा भवतु मातरिदं त्वदीयं तेजः परं बहुलकुंकुमपङ्कशोणाम्। भास्वत्किरीटम-मृतंकुशलावतंसं। रूपं त्रिकोणमुदितं परमामृताक्तम् ॥14॥ ह्रींकारत्रयसम्पुटेन महता मंत्रेण संदीपितं स्तोत्रं यः प्रतिवासरं तव पुरो मातर्जपेन्मन्त्रवित्। तस्य क्षोणिभुजो भवन्ति वशगा लक्ष्मीश्चिरं स्थायिनी वाणी निर्मलसूक्तिभावभरिता जागर्ति दीर्घ वयः ॥15॥

इति ब्रह्मविरचितं षोडशीकल्याणीस्तोत्रं समाप्तम्।

श्री ज्ञानकालीकाष्टक

ध्यान

गलद्रक्तमुण्डावलीकण्ठमाला, महाघोररावा सुद्रष्ट्रा कराला।
विवस्त्रा श्मशानालया मुक्तकेशी, महाकालकामाकुला कालिकेयम् ॥1॥
भुजेवामयुग्मे शिरोसिं दधाना, वरं दक्षयुग्मेभयं वै तथैव। सुमध्यापि तुङ्गस्तना भारनम्रा, लसद्रक्तसृक्कद्वया सुस्मितास्या ॥2॥
शवद्वन्द्वकर्णावतंसा सुकेशी, लसत्प्रेतपाणिं प्रयुक्तैककांची।
शवाकारमञ्चाधिरूढा शिवाभिश्वतुर्दिक्षु शब्दायमानाभिरेजे ॥3॥

स्तुति

विरंच्यादिदेवास्त्रयस्ते गुणास्त्रीनू, समाराध्य कालीं प्रधाना बभूवुः।
अनादिं सुरादिं मखादिं भवादिं, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥1॥
जगन्मोहिनीयम् तु वाग्वादिनीयम्, सुहृद्पोषिणी शत्रुसहारणीयम्।
वचस्तम्भनीयम् किमुच्चाटनीयम्, स्वरूपं त्वदीपं न विन्दन्ति देवाः ॥2॥

इय स्वर्गदात्री पुनः कल्पवल्ली, मनोजाँस्तु कामान्यथाथ प्रकुर्यात्।
तथा ते कृतार्था भवन्तीति नित्यं, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥3॥
सुरापानमत्ता सुभक्तानुरक्ता, लसत्पूतचित्ते सदाविर्भवस्ते।
जपध्यानं पूजासुधाधौतपंका, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥4॥
चिदानन्दकन्दं हसन्मन्दमन्दं, शरच्चन्द्र कोटिप्रभापुञ्जबिम्बम्।
मुनीनां कवीनां हृदि द्योतयन्तं, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥5॥
महामेघकाली सुरक्तापिं शुभ्रा, कदाचिद्विचित्रा कृतिर्योगमाया।
न बाला न बृद्धा न कामातुरापि, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥6॥
क्षमास्वापराचं महागुप्तभावं, मयालोकमध्ये प्रकाशीकृतं यत्।
तव ध्यानपूतेन चापल्यभावात्, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥7॥
यदि ध्यान युक्तं पठेद्यो मनुष्य, स्तदा सर्वलोके विशालो भवेच्च।
गृहे चाष्टसिद्धिर्मृते चापि मुक्ति-स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥8॥
इति श्रीमच्छंकरा चार्य विरचितं कालिकाष्टम्।

भवानीस्तुतिः ।

श्री गणेशाय नमः ॥ आनन्दमंथरपुरंदरमुक्तमाल्यं, मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य। पादांबुजं भवतु वो विजयाय मंजु, मंजीरशिंजितमनोहरमंबिकायाः ॥1॥ ब्रह्मादयोऽपि यदपांगतरंगभंग्या सृष्टिस्थितिप्रलयकारणतां व्रजंति । लावण्यवारि निधिवीचिपरिप्लुतायै, तस्यै नमोऽस्तु सततं हरवल्लभायै ॥2॥ पौलस्त्यपीनभुजसंपदुदस्यमान, कैलास- संभ्रमविलोलदृशः प्रियायाः। श्रेयांसि वो दिशतु निहुतकोप चिह्नमालिंगनोत्पुल कमासितमिंदुमौलेः ॥3॥ दिश्यान्महासुर शिरः सरसीप्सितानि, प्रेखन्नखावलिमयूखमृणालनालम्। चंड्याश्चलचटुलनूपुरचंचरीक, झांकारहारि चरणांबुरुहद्वयं वः ॥4॥ इति श्रीभवानी स्तुतिः संपूर्णा ॥

देवीभुजङ्गप्रयातस्तोत्रम् ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ विरिञ्चयादिभिः पञ्चभिर्लोकपालैः समूहे महानन्दपीठे निषण्णम् । धनुर्बाणपाशाङ्कुशप्रोतहस्तं महस्त्रैपुरं शंकराद्वैतमव्यात् ॥1॥ यदन्नादिभिः पञ्चभिः कोशजालैः शिरःपक्षपुच्छात्मकैरन्तरन्तः । निगूढे महायोगपीठे निषण्णं

पुरारेरथान्तः पुरंयोमि नित्यम् ॥2॥ विरिञ्चयादिरूपैः प्रपञ्चे विहृत्य स्वतन्त्रा यदा आत्मविश्रान्तिरेषा। तदा मानमातृप्रमेयातिरिक्तं परानन्दमीडे भवानि प्रदीयम् ॥3॥ विनोदाय चैतन्यमेकं विभज्य, द्विधा देवि जीवः शिवश्चेति नाम्ना । शिवस्यापि जीवत्वमापादयन्ती पुनर्जीवमेनं शिवं च करोषि ॥4॥ समाकुञ्चय मूलं हृदि न्यस्य वायुं मनो भ्रूबिलं तपयित्वा निवृत्ताः। ततः सच्चिदानन्दरूपे पदे ते भवन्त्यम्ब जीवाः दिवत्वेन केचित् ॥5॥ शरीरेऽतिकष्टे रिपौ पुत्रवर्गे सदा भीतिमूले कलत्रे धने वा। न कश्चिद्विरज्यत्यहो देवि चित्रं कथं त्वत्कटाक्षं विना सत्वबोधः ॥6॥ शरीरे धनेऽपत्यवर्गे कलत्रे विरक्तस्य सद्देशिकादिप्रबुद्धेः । यदाकस्मिकं ज्योतिरानन्दरूपं समाधौ भवेत्तत्त्वमस्यम्ब सत्यम् ॥7॥ मृषान्यो मृषान्यः परो मिश्रमेनं परः प्राकृतं चापरो बुद्धिमात्रम् । प्रपंञ्चं मिमीते मुनीनां गणोऽयं तदेतत्त्वमेवेति न त्वां जहीमः ॥8॥ निवृत्तिः प्रतिष्ठा च विद्या च शान्तिस्तथा शान्त्यतीते च पञ्चीकृताभिः । कलाभिः परे पञ्च-विंशात्मिकाभिस्त्वमेकैव सेव्या सदाभिन्नरूपा ॥9॥ अगाधेऽत्र संसारपङ्के निमग्नं कलत्रादिभारेण खिन्नं नितान्तम्। महामोह-पाशौघबद्धं चिरान्मां समुद्धर्तुमम्ब त्वमेकैव शक्ता ॥10॥ समारभ्य मूलं गतो ब्रह्मचक्रं भवद्भाग्य चक्रेश्वरीधामभाजः। महासिद्धिसंघातकल्पद्रुमाभा नवाप्यम्ब नादानुपास्ते च योगी ॥11॥ गणेशैर्ग्रहैरम्ब नक्षत्रपङ्क्तया तथा रागिनीराशिपीठैरभिन्नम्। महाकालमात्मानमामृश्य लोकं विधत्से प्रतिं वा स्थितिं वा महेशि ॥12॥ लसत्तारहारामतिस्वच्छ चेलां वहन्तीं करे पुस्तकं चाक्षमालाम्। शरच्चन्द्रकोटिप्रभाभासुरां त्वां सकृद भावयन् भारतीवल्लभः स्यात् ॥13॥ समुद्यत्सहस्त्रार्कबिम्बाभ-वक्त्रां स्वभासैव सिन्दूरिताजाण्डकोटिम् । धनुर्बाणपाशाङ्कुशान् धारयन्तीं स्मरन्तः स्मरं वाऽपि संमोहयेयुः ॥14॥ मणिस्यूतताटङ्कशोणास्यबिम्बां हरित्पट्टवस्त्रां त्वगुल्लासि- भूषाम्। हृदा भावयंस्तप्तहेमप्रभां त्वां श्रियो नाशयत्यम्ब चाञ्चल्यभावम् ॥15॥ महामन्त्रराजान्तबीजं पराख्यं स्वतो न्यस्तबिन्दु स्वयं न्यस्तहार्दम्। भवद्वक्त्रवक्षोजगुह्याभिधानं स्वरूपं सकृद्भावयेत्स त्वमेव ॥16॥ तथान्ये विकल्पेषु निर्विण्णचित्तास्तदेकं समाधाय बिन्दुत्रयं ते। परानन्द- संधानसिन्धौ

निमग्नाः पुनर्गर्भरन्ध्रं न पश्यन्ति धीराः ॥17॥ त्वदुन्मेषलीलानुबन्धाधिकारान्विरिञ्च्यादि कांस्त्वद्गुणाम्भोधिबिन्दून्। भजन्तस्तितीर्षन्ति संसारसिन्धुं शिवे तावकीनां सुसंभावनेयम् ॥18॥ कदा वा भवत्पादपोतेन तूर्णं भवाम्भोधिमुत्तीर्य पूर्णांतरङ्गा। निमज्जन्तमेनं दुराशाविषाब्धौ समालोक्य लोकं कथं पर्युदास्से ॥19॥ कदा वा हृषीकाणि साम्यं भजेयुः कदा वा न शत्रुर्न मित्रं भवानि। कदा वा दुराशाविषूचीविलापः कदा वा मनो मे समूलं विनश्येत् ॥20॥ नमोवाकमाशास्महे देवि युष्मत्पदाम्भोजयुग्माय तिग्माय गौरि। विरिञ्च्यादिभास्वत्किरीटप्रतोलीप्रदीपायमान-प्रभाभास्वराय ॥21॥ कचे चन्द्ररेखं कुचे तारहारं करे स्वादुचापं शरे षट्पदौघम्। स्मरामि स्मरारेरभिप्रायमेकं मदाघूर्णनेत्रं मदीयं निधानम् ॥22॥ शरेष्वेव नासा धनुःष्वेव जिह्वा जपापाटले लोचने ते स्वरूपे। त्वगेषा भवच्चन्द्रखण्डे श्रवो मे गुणे ते मनोवृत्तिरम्ब त्वयि स्यात् ॥23॥ जगत्कर्म- धीरान्वचोधूतकीरान् कुचन्यस्तहारान्कृपासिन्धुपूरान् ॥24॥ सुधासिन्धुसारे चिदानन्दनीरे समुत्फुल्लनीपे सुरत्नान्तरीपे । मणिव्यूहसाले स्थिते हैमशाले मनोजारिवामे निषण्णं मनो मे ॥25॥ दृगन्ते विलोला सुगन्धीषुमाला प्रपञ्चेन्द्रजाला विपत्सिन्धुकूला। मुनिस्वान्तशाला नमल्लोकपाला हृदि प्रेमलोलाऽमृतस्वादुलीला ॥26॥ जगज्जालमेतत्त्वयैवाम्ब सृष्टं त्वमेवाद्य पासीन्द्रियैरर्थजालम्। त्वमेकैव कर्त्री त्वमेकैव भोक्त्री न मे पुण्यपापे न मे बन्धमोक्षौ ॥27॥ इति प्रेमभारेण किंचिन्मयोक्तं न बुद्ध्वैव तत्त्वं मदीयं त्वदीयम् । विनोदाय बालस्य मोर्ख्यं हि मातस्तदेतत्प्रलापस्तुतिं मे गृहाण ॥28॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभगवत्पूज्य-पादशिष्यस्य श्रीमच्छंकरभगवतः कृतौ देवीभुजङ्गस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

ताराष्टकम् ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ मातर्नीलसरस्वति प्रणमतां सौभाग्यसंपत्प्रदे । प्रत्यालीढपदस्थिते शिवहृदि स्मेराननांभोरुहे। फुल्लेंदीवरलोचनत्रययुते कर्त्री कपालोत्पले । खङ्गं चादधती त्वमेव शरणं त्वामीश्वरीमाश्रये ॥1॥ वाचामीश्वरि भक्तकल्पलतिके सर्वार्थसिद्धिप्रदे। गद्यप्राकृत पद्यजातरचना सर्वत्र सिद्धिप्रदे ।

नीलेंदीवरलोचनत्रययुते कारुण्यवारांनिधे। सौभाग्यामृतवर्षणेन कृपया सिंचत्वमस्मादृशम् ॥2॥ शर्वे गर्वसमूहपूरिततनो सर्पादिवेषोज्ज्वले। व्याघ्रत्वक्परिवीतसुंदरकटिव्याधूतघंटांकिते। सद्यः कृत्तगलद्रजः परिमिलन्मुंडद्वयीमूर्धज। ग्रंथिश्रेणिनृमुंडदामललिते भीमे भयं नाशय ॥3॥ मायानंगविकाररूपललनाबिंद्वर्ध चंद्रात्मिके हुंफट्कारमयि त्वमेव शरणं मंत्रात्मिके मादृशः। मूर्तिस्ते जननि त्रिधामघटिता स्थूलाऽतिसूक्ष्मा परा। वेदानां नहि गोचरा कथमपि प्राप्तां नुतामाश्रये ॥4॥ त्वत्पादांबुजसेवया सुकृतिनो गच्छंति सायुज्यतां । तस्य स्त्री परमेश्वरी त्रिनयनब्रह्मादिसाम्यात्मनः। संसारांबुधिमज्जने पटुतनून् देवेंद्रमुख्यान्सुरान् । मातस्त्वत्पदसेवने हि विमुखो यो मंदधीः सेवते ॥5॥ मातस्त्वत्पदपंकजद्वयरजो- मुद्रांककोटीरिणः ते देवा जयसंगरे विजयिनो निःशंकमंके गताः। देवोऽहं भुवने न मे सम इति स्पर्धां वहंतः परे। तत्तुल्यं नियतं यथाऽसुभिरमी नाशं व्रजंति स्वयम् ॥6॥ त्वन्नामस्मरणात्पलायनपरा द्रष्टुं च शक्ता न ते । भूतप्रेतपिशाचराक्षसगणाः यक्षाश्च नागाधिपाः । दैत्या दानवपुंगवाश्च खचरा व्याघ्रादिका जंतवो । डाकिन्यः कुपितांतकाश्च मनुजं मातः क्षणं भूतले ॥7॥ लक्ष्मीः सिद्धगणाश्च पादुकमुखाः सिद्धास्तथा चारणाः । स्तंभश्चापि रणांगणे गजघटास्तंभस्तथा मोहनम्। मातस्त्वत्पदसेवया खलु नृणां सिध्यंति ते ते गुणाः। कांतिः कांतमनोभवस्य भवति क्षुद्रोऽपि वाचस्पतिः ॥8॥ ताराष्टकमिदं रम्यं भक्तिमान्यः पठेन्नरः। प्रातर्मध्याह्नकाले च सायाह्ने नियतः शुचिः ॥9॥ लभते कवितां दिव्यां सर्वशास्त्रार्थविद्भवेत्। लक्ष्मीमनश्वरां प्राप्य भुक्त्वा भोगान्यथेप्सितान् ॥10॥ कीर्तिं कांतिं च नैरुज्यं सर्वेषां प्रियतां व्रजेत्। विख्यातिं चापि लोकेषु प्राप्यंते मोक्षमाप्नुयात् ॥11॥ इति नीलतंत्रे ताराष्टकं संपूर्णम् ॥

श्यामलादण्डकम्

श्रीगणेशाय नमः ॥ माणिक्यवीणामुपलालयन्तीं मदालसां मंजुलवाग्विलासाम् । माहेन्द्रनीलद्युतिकोमलाङ्गीं मातङ्गकन्यां सततं

स्मरामि ॥1॥ चतुर्भुजे चन्द्रकलावतंसे कुचोन्नते कुङ्कुमरागशोणे । पुण्ड्रेक्षुपाशाङ्कुशपुष्पबाणहस्ते नमस्ते जगदेकमातः ॥2॥ माता मरकतश्यामा मातङ्गी मदशालिनी। कटाक्षयतु कल्याणी कदम्बवन वासिनी ॥3॥ जय मातङ्गतनये जय नीलोत्पलद्युते । जय संगीत रसिके जय लीलाशुकप्रिये ॥4॥ जय जननि सुधासमुद्रांतह्यन्मणि–द्वीपसंरूढबिल्वाटवीमध्य कल्पद्रुमाकल्पकादम्ब कांतारवासप्रिये कृत्तिवासप्रिये सर्वलोकप्रिये। सादरारब्धसंगीत संभावना संभ्रमालोलनीपस्त्रगाबद्धचूलीसनाथत्रिके सानुमत्पुत्रिके। शेखरीभूत शीतांशुरेखामयूखावली बद्धसुस्निग्धनीलालकश्रेणि शृङ्गारिते लोक संभाविते। कामलीलाधनुःसंनिभभ्रूलता पुष्पसंदोह सन्देहकृल्लोचने वाक्सुधासेचने। चारुगोरोचनापङ्ककेली ललामाभिरामे सुरामे रमे। प्रोल्लसद्वालिकामौक्तिकश्रेणिकाचन्द्रिकामण्डलोद्भासि लावण्यगण्ड–स्थलन्यस्तकस्तूरिका पत्ररेखासमुद्भूत सौरभ्यसंभ्रांत भृङ्गाङ्गनागीत सांद्रीभवन्मंद तन्त्रीस्वरे सुस्वरे भास्वरे। वल्लकीवादन–प्रक्रियालोलतालीदलाबद्धताटङ्कभूषाविशेषान्विते सिद्धसंमानिते। दिव्यहालामदोद्वेल हेलालसच्चक्षुरांदोलनश्रीसमाक्षिप्त कर्णैकनीलोत्पले पूरिताशेष लोकाभिवाञ्छा फले श्रीफले। स्वेदबिंदूल्लसत्फाल लावण्यनिःष्यंदसंदोहसंदेहकृन्नासिका मौक्तिके सर्वविश्वात्मिके कालिके। मुग्धमंदस्मितोदार–वक्त्रस्फुरत्पूगताम्बूलकर्पूर– खण्डोत्करे ज्ञानमुद्राकरे सर्वसंपत्करे पद्मभास्वत्करे। कुंदपुष्पद्युतिस्निग्ध दंतावलीनिर्मलालोल कल्लोलसंमेलनस्मेरशोणाधरे चारुबीणाधरे पक्वबिम्बाधरे ॥1॥ सुललितनवयौवनारम्भचंद्रोदयोद्वेल लावण्यदुग्धार्णवाविर्भ वत्कम्बुबिम्वोकभृत्कंधरे सत्कलामन्दिरे मंथरे। दिव्यरत्न–प्रभाबंधुरच्छन्नहारादि भूषासमुद्योतमानानवद्यांशुशोभे शुभे। रत्नकेयूररश्मिच्छटा पल्लवप्रोल्लसद्दोर्लताराजिते योगिभिः पूजिते। विश्वदिङ्मण्डलव्यापिमाणिक्यतेजः स्फुरत्कङ्कणालंकृते विभ्रमालंकृते साधकैः सत्कृते। वासरारम्भवेलासमुज्जम्भ माणारविंदप्रतिद्वन्द्विपाणिद्वये संततोद्यद्दये अद्वये। दिव्यरत्नोर्मिका दीधितिस्तोमसंध्यायमानाङ्गुली पल्लवोद्यन्नखेन्दु प्रभामण्डले संनताखण्डले चित्प्रभामण्डले प्रोल्लसत्कुण्डले । तारकाराजिनी

काशहारावलिस्मेरचारु स्तनाभोगभारानमन्मध्य वल्लीवलिच्छे दवीचीसमुल्लास संदर्शिताकारसौन्दर्यरत्नाकरे वल्लकीभृत्करे किंकरश्रीकरे । हेमकुम्भोपमोत्तुङ्गवक्षोजभारावनम्रे त्रिलोकावनम्रे । लसद्वृत्तगम्भीरनाभीसरस्तीर शैवालशङ्काकर श्यामरोमावली भूषणे मञ्जुसंभाषणे। चारुशिञ्जत्कटीसूत्र निर्भर्त्सितानङ्गलीला धनु:शिञ्जिनीडम्बरे दिव्यरत्नाम्बरे। पद्मरागोल्लसन्मेखला भास्वरश्रोणिशोभाजितस्वर्णभूभृत्तले चन्द्रिकाशीतले ॥2॥ विकसितनवकिंशुकाताम्र दिव्यांशु कच्छन्नचारुशोभापराभूत सिंदूरशोणायमानेन्द्रमातङ्गहस्तार्गले वैभवानर्गलेश्यामले। कोमलस्निग्धनीलोत्पलोत्पादितानङ्गतूणीरशङ्काकरोदारजङ्घालते चारुलीलागते। नम्रदिक्पालसीमन्तिनी कुंतलस्निग्ध नीलप्रभापुञ्जसञ्जातदूर्वाङ्कुराशङ्कसारङ्ग संयोगरिङ्खन्नखेन्दूज्ज्वले प्रोज्ज्वले निर्मले। प्रह्वदेवेशलक्ष्मीशभूतेशतो येशवाणीशकीनाशदैत्येशयक्षेशवाय्यग्निकोटीरमाणिक्यसंघृष्टबाला तपोद्दामलाक्षारसारुण्यतारुण्यलक्ष्मीगृहीताङ्घ्रिपद्मे सुपद्मे उमे ॥3॥ सुरुचिरनवरत्नपीठस्थिते सुस्थिते । रत्नपद्मासने रत्नसिंहासने शङ्खपद्म द्वयोपाश्रिते। तत्र विघ्नेशदूर्वाबटुक्षेत्रपालैर्युते मत्तमातङ्गकन्या समूहान्विते मञ्जुलामेनकाद्यङ्गनामानिते भैरवैरष्टभिर्वेष्टिते । देवि वामादिभि: शक्तिभि: सेविते धात्रिलक्ष्म्यादिशक्त्यष्टकै: संयुते । मातृकामण्डलैर्मण्डिते यक्षगंधर्वसिद्धाङ्गनामण्डलैरर्चिते । पञ्चबाणात्मिके पञ्चबाणेन रत्या च संभाविते । प्रीतिभाजा बसंतेन चानन्दिते भक्तिभाजां परं श्रेयसे कल्पसे। योगिनां मानसे द्योतसे छंदसामोजसा भ्राजसे । गीतविद्या- विनोदातितृष्णेन कृष्णेन संपूज्यसे । भक्तिमच्चेतसा वेधसा स्तूयसे। विश्वहृद्येन वाद्येन विद्याधरैर्गीयसे ॥4॥ श्रवण- हरणदक्षिणक्वाणया वीणया किन्नरैर्गीयसे । यक्षगंधर्वसिद्धाङ्गनामण्डलैरर्च्यसे । सर्वसौभाग्यवाञ्छा- वतीभिर्वधूभि: सुराणां समाराध्यसे । सर्वविद्याविशेषात्मकं चाटुगाथासमुच्चाटनं कण्ठमूलोल्लसद्वर्णराजित्रयं कोमल- श्यामलोदारपक्षद्वयं तुण्डशोभातिदूरीभवत्किंशुकं तं शुकं लालयंती परिक्रीडसे । पाणिपद्मद्वयेनाक्षमालामपि स्फाटिकीं ज्ञानसारात्मकं पुस्तकं चाङ्कुशं पाशमाविभ्रती येन संचिंत्यसे तस्य

वक्त्रांतराद्गद्यपद्यात्मिका भारती निःसरेत् । येन वा यावकाभाकृतिर्भाव्यसे तस्य वश्या भवन्ति स्त्रियः पूरुषाः। येन वा शातकुम्भद्युतिर्भाव्यसे सोऽपि लक्ष्मीसहस्रैः परिक्रीडते। किं न सिध्येद्वपुः श्यामलं कोमलं चंद्रचूडान्वितं तावकं ध्यायतः। तस्य लीलासरोवारिधिस्तस्य केलीवनं नंदनं तस्य भद्रासनं भूतलं तस्य गीर्देवता किंकरी तस्य चाज्ञाकरी श्रीः स्वयम्। सर्वतीर्थात्मिके सर्वमंत्रात्मिके सर्वतंत्रात्मिके सर्वयंत्रात्मिके सर्वपीठात्मिके सर्वतत्त्वात्मिके सर्वशक्त्यात्मिके सर्वविद्यात्मिके सर्वयोगात्मिके सर्वनादात्मिके सर्वशब्दात्मिके सर्वविश्वात्मिके सर्वदीक्षात्मिके सर्वसर्वात्मिके सर्वगे पाहि मां पाहि मां पाहि मां देवि तुभ्यं नमो देवि तुभ्यं नमः मंगलं मगलम ॥5॥ इति श्यामलादण्डकस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

चन्द्रशेखराष्टकस्तोत्रम

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम् ।
चन्द्रशेखर चन्दशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्॥1॥
रत्नसानु - शरासनं रजताद्रि - शृङ्गनिकेतनं
सिञ्जिनीकृत - पन्नगेश्वरमच्युतानन –सायकम् ।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदिवालयैरभिवन्दितं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥2॥
पञ्चपादप - पुष्पगन्ध - पदाम्बुजद्वय- शोभितं
भाललोचन –जातपावक - दग्धमन्मथ–विग्रहम् ।
भस्मदिग्ध - कलेवरं भव –नाशनं भवमव्ययं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥3॥
मत्तवारण - मुख्यचर्मकृतोत्तरीय - मनोहरं
पङ्कजासन - पद्मलोचन –पूजिताङ्घ्रि - सरोरुहम् ।
देवसिन्धुतरङ्गसीकर - सिक्त - शुभ्रजटाधरं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥4॥
यक्षराज - सखं भगाक्षहरं भुजङ्ग - विभूषणं
शैल–राजसुता –परिष्कृत–चारुवाम –कलेवरम् ।
क्ष्वेडनीलगल गलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥5॥
कुण्डलीकृत- कुण्डलेश्वर –कुण्डलं वृषवाहनं
नारदादि- मुनीश्वर –स्तुत –वैभवं भुवनेश्वरम् ।
अन्धकान्धकमाश्रिताऽमरपादपं शमनान्तकं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥6॥
भेषजं भवरोगिणामखिलापदामपहारिणं
दक्षयज्ञविनाशनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम् ।

भुक्ति – मुक्तिफलप्रदं सकलाघसङ्घनिबर्हणं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥7॥
भक्तवत्सलमर्चितं निधिमक्षयं हरिदम्बरं
सर्वभूतपतिं परात्परमप्रमेयमनुत्तमम् ।
सोमवारिद – भूहुताशन – सोमपानिलखाकृतिं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥8॥
विश्वसृष्टि –विधायिनं पुनरेव पालनतत्परं
संहरन्तमपि प्रपञ्चमशेषलोक – निवासिनम् ।
क्रीडयन्तमहर्निशं गणनाथयूथ – समन्वितं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥9॥
मृत्युभीत– मृकण्डसूनुकृतस्तवं शिवसन्निधौ
यत्र कुत्र च यः पठेन्न हि तस्य मृत्युभयं भवेत् ।
पूर्णमायुरारोगितामखिलार्थसम्पदमादरं
चन्द्रशेखर एव तस्य ददाति मुक्तिमयत्नतः ॥10॥
इति श्रीचन्द्रशेखराष्टकं स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥92॥

श्रीकनकधारास्तोत्रम्

वन्दे वन्दारु - मन्दारम् - इन्दिरानन्द - कन्दलम् ।
अमन्दानन्द - सन्दोह - बन्धुरं सिन्धुराननम् ॥
अङ्ग हरेः पुलक-भूषणमाश्रयन्ती भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम् ।
अंङ्गीकृता-ऽखिल-विभूतिरपाङ्गलीला माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गलदेवताया ॥ 1 ॥
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः प्रेमत्रपा प्रणिहितानि गताऽऽगतानि ।
माला-दृशो-र्मधुकरीव महोत्पले या सा मे श्रियं दिशतु सागर-सम्भवायाः ॥ 2 ॥
विश्वामरेन्द्र-पदविभ्रम-दानदक्षमानन्द-हेतुरधिकं मुर-विद्विषोऽपि ।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्धमिन्दीवरोदर-सहोदर-मिन्दिरायाः ॥ 3 ॥
आमीलिताक्ष-मधिगम्यमुदा मुकुन्दमानन्द-कन्दमनिमेष-मनङ्ग-तन्त्रम् ।
आकेकर-स्थित-कनीनिक-पक्ष्मनेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजङ्ग-शयाङ्गनायाः ॥ 4 ॥
बाह्वन्तरे मुरजितः श्रितकौस्तुभे या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति ।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥ 5 ॥
कालाम्बुदालि-ललितोरसि कैटभारेर्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव ।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिर्भद्राणि में दिशतु भार्गव-नन्दनायाः ॥ 6 ॥
प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत् प्रभावात् माङ्गल्यंभाजि मधु-माथिनि-मन्मथेन ।
मय्यापतेत् तदिह मन्थर-मीक्षणार्धं मन्दाऽलसं च मकरालय-कन्यकायाः ॥ 7 ॥
दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारामस्मिन्न किञ्चन-विहङ्ग-शिशौ विषण्णे ।
दुष्कर्म--धर्ममपनीय चिराय दूरं नारायण-प्रणयिनी-नयनाम्बुवाहः ॥ 8 ॥
इष्टा-विशिष्ट-मतयोऽपि यया दयार्द्रदृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं भजन्ते ।
दृष्टिः प्रहृष्ट-कमलोदर-दीप्तिरिष्टां पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्कर-विष्टरायाः ॥ 9 ॥
गीर्देवतेति गरुडध्वज-सुन्दरीति शाकम्भरीति शशिशेखर-वल्लभेति ।
सृष्टि-स्थिति-प्रलय-केलिषु संस्थिता या तस्यै नमस्त्रिभुवनैक-गुरोस्तरुण्यै ॥ 10 ॥
श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्म-फलप्रसूत्यै रत्यै नमोऽस्तु रमणीय - गुणार्णवायै ।
शक्तयै नमोऽस्तु शतपत्र - निकेतनायै पुष्टयै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम-वल्लभायै ॥ 11 ॥
नमोऽस्तु नालीक-निभाननायै नमोऽस्तु दुग्धोदधि-जन्मभूम्यै ।
नमोऽस्तु सोमामृत-सोदरायै नमोऽस्तु नारायण-वल्लभायै ॥ 12 ॥

नमोऽस्तु हेमाम्बुज-पीठिकायै नमोऽस्तु भूमण्डलनायिकायै ।
नमोऽस्तु देवादि-दयापरायै नमोऽस्तु शार्ङ्गायुध-वल्लभायै ॥ 13 ॥
नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै नमोऽस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै ।
नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै नमोऽस्तु दामोदरवल्लभायै ॥ 14 ॥
नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै नमोऽस्तु भूत्यै भुवनप्रसूत्यै ।
नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै नमोऽस्तु नन्दात्मज-वल्लभायै ॥ 15 ॥
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रिय-नन्दनानि साम्राज्य-दान-निरतानि सरोरुहाक्षि ।
त्वद्-वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये ॥ 16 ॥
यत्कटाक्ष-समुपासनाविधिः सेवकस्य सकलार्थसम्पदः ।
सन्तनोति वचनाङ्गमानसैस्त्वां मुरारि-हृदयेश्वरीं भजे ॥ 17 ॥
सरसिजनयने ! सरोजहस्ते ! धवलतमांशुक-गन्ध-माल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे ! मनोज्ञे ! त्रिभुवन-भूतिकरि ! प्रसीद मह्यम् ॥ 18 ॥
दिग्धहस्तिभिः कनक-कुम्भ-मुखावसृष्टस्ववर्वाहिनी--विमल-चारुजल-प्लुताङ्गीम् ।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेषलोकाधिनाथ-गृहिणीममृताब्धि-पुत्रीम् ॥ 19 ॥
कमले ! कमलाक्षवल्लभे ! तं करुणापूर-तरङ्गितैरपाङ्गैः ।
अवलोकय मामकिञ्चनानां प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ॥ 20 ॥
स्तुवन्ति ये स्तुभिरमूभिरन्वहं त्रयीमयीं त्रिभुवन-मातरं रमाम् ।
गुणाधिका गुरुतर-भाग्य-भाजिनो भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः ॥ 21 ॥
सुवर्णधारा - स्तोत्रं यच्छङ्कराचार्य - निर्मितम् ।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स कुबेरसमो भवेत् ॥ 22 ॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचितम् कनकधारा स्तोत्रम् समाप्तम् ॥

बन्दीमोचनस्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीबन्दीमोचनमन्त्रस्य कण्वऋषिः, त्रिष्टुप्-छन्दः,
ह्रीं बीजम्, ह्रूं कीलकम्, मम बन्दीमोचनार्थे जपे विनियोगः ।

ॐ ह्रीं ह्रूं बन्दीदेव्यै नमः । इति मन्त्रम् अष्टोत्तरशतं जपः। ।
बन्दीं देवीं नमस्कृत्य वरदाभयशोभिताम् ।
तदग्रयां शरणं गच्छे शीघ्रं मोक्षं ददातु मे ॥ 1 ॥
बन्दी कमलपत्राक्षी लोहशृङ्खलभञ्जिनी ।
प्रसादं कुरु मे देवि शीघ्रं मोक्षं ददातु मे ॥ 2 ॥
त्वं बन्दी त्वं महामाया तवं दुर्गा त्वं सरस्वती ।
त्वं देवी रजनी चैव शीघ्रं मोक्षं ददातु मे ॥ 3 ॥
संसारतारिणी बन्दी सर्वकामप्रदायिनी ।
सर्वलोकेश्वरी देवी शीघ्रं मोक्षं ददातु मे ॥ 4 ॥
त्वं ह्रीस्त्वमीश्वरी देवी ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ।
त्वं वै कल्पक्षयं कर्त्री शीघ्रं मोक्षं ददातु मे ॥ 5 ॥
देवी धात्री धरित्री च धर्मशास्त्रार्थभाषिणी ।
दुःश्वाम्बरागिणी देवी शीघ्रं मोक्षं ददातु मे ॥ 6 ॥
नमोऽस्तु ते महालक्ष्मि रत्नकुण्डलभूषिते ।
शिवस्यार्धाङ्गिनी चैव शीघ्रं मोक्षं ददातु मे ॥ 7 ॥
नमस्कृत्य महादुर्गां भयादुत्तारिणीं शिवाम् ।
महादुःखहरां चैव शीघ्रं मोक्षं ददातु मे ॥ 8 ॥
इदं स्तोत्रं महापुण्यं यः पठेन्नित्यमेव च ।
सर्वबन्धविनिर्मुक्तो मोक्षं च लभते क्षणात् ॥ 9 ॥

इति रुद्रयामले बन्दीमोचनस्तोत्रं समाप्तम्

अन्नपूर्णास्तोत्रम्

सिन्दूरा – ऽरुण – विग्रहां त्रिनयनां माणिक्य – मौलिस्फुरत्
तारानायक – शेखरां स्मितमुखीमापीन – वक्षोरुहाम् ।
पाणिभ्यामलिपूर्ण – रत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं

सौम्यां रत्नघटस्थ - रक्तचरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम् ॥
नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिल - घोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी ।
प्रालेयाचल - वंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ 1 ॥
नानारत्न - विचित्र - भूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
मुक्ताहार - विलम्बमान - विलसद्वक्षोज - कुम्भान्तरी ।
काश्मीरा - ऽगुरुवासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ 2 ॥
योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मार्थनिष्ठाकरी
चन्द्रार्कानल - भासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी ।
सर्वैश्वर्य - समस्त - वाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ 3 ॥
कैलासाचल - कन्दरालयकरी गौरी उमा शङ्करी
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओङ्कारबीजाक्षरी ।
मोक्षद्वार - कपाट - पाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ 4 ॥
दृश्याऽदृश्य - प्रभूतवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
लीलानाटक - सूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपाङ्कुरी ।
श्रीविश्वेशमनः प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ 5 ॥
उर्वी सर्वजनेश्वरी भगवती माताऽन्नपूर्णेश्वरी
वेणीनील - समान - कुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी ।
सर्वानन्दकरी दृशां शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ 6 ॥
आदिक्षान्त - समस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
काश्मीरा - त्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्कुरा शर्वरी ।
कामाकांक्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ 7 ॥
देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी
वामस्वादु - पयोधर - प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।

भक्ताऽभीष्टकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ 8 ॥
चन्द्रार्कानल – कोटिकोटिसदृशा चन्द्रांशुबिम्बाधरी
चन्द्रार्काग्नि – समान – कुन्तलहरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।
माला – पुस्तक – पाश – साङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ 9 ॥
क्षत्रत्राणकरी महाऽभयकरी माता कृपासागरी
साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी ।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ 10 ॥
अन्नपूर्णे सदा पूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे ! ।
ज्ञान – वैराग्य – सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥ 11 ॥
माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः ।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥ 12 ॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितम् अन्नपूर्णास्तोत्रं सम्पूर्णम्

अन्नपूर्णाकवचम्

द्वात्रिंशद्वर्णमन्त्रोऽयं शङ्करप्रतिभाषितः ।
अन्नपूर्णा महाविद्या सर्वमन्त्रोत्तमोत्तमा ॥ 1 ॥
पूर्वमुत्तरमुच्चार्य सम्पुटीकरणमुत्तमम् ।
स्तोत्रमन्त्रस्य ऋषिर्ब्रह्मा छन्दो त्रिष्टुबुदाहृतः ॥ 2 ॥
देवता अन्नपूर्णा च ह्रीं बीजमम्बिका स्मृता ।
स्वाहा शक्तिरिति ज्ञेयं भगवति कीलकं मतम् ॥ 3 ॥
धर्माऽर्थ – काम – मोक्षेषु विनियोग उदाहृतः ।
ॐ ह्रीं भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णायै स्वाहा ॥ 4 ॥
सप्तार्णवमनुष्याणां जपमन्त्रः समाहितः ।
अन्नपूर्णे इमं मन्त्रं मनुसप्तदशाक्षरम् ॥ 5 ॥
सर्वसम्पत्प्रदो नित्यं सर्वविश्वकरी तथा ।
भुवनेश्वरीति विख्याता सर्वाऽभीष्टं प्रयच्छति ॥ 6 ॥
हल्लेखेयमिति ज्ञेयमोङ्काराक्षररूपिणी ।

कान्ति - पुष्टि - धनाऽऽरोग्यं यशांसि लभते श्रियम् ।
अस्मिन् मन्त्रे रतो नित्यं वशयेदखिलं जगत् ॥ 7 ॥

अङ्गन्यास – ॐ अस्यै श्रीअन्नपूर्णामालामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषये नमः, शिरसि। ॐ अन्नपूर्णादेवतायै नमः, हृदये। ह्रीं बीजाय नमः, नाभौ । ॐ स्वाहा शक्तये नमः। पादयोः ॐ धर्माऽर्थ–काम–मोक्षेषु विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः – ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यास :– ॐ ह्रां हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ ह्रूं शिखायै वषट् । ॐ ह्रैं कवचाय हुम् । ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्

रक्तां विचित्रवसनां नवचन्द्रचूडाम्
अन्नप्रदान – निरतां स्तनभारनम्राम् ।
नृत्यन्तमिन्दु – सकलाभरणं विलोक्य
हृष्टां भजे भगवतीं भव – दुःख – हन्त्रीम् ॥

मालामन्त्रः – ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे! ममाऽभिलषितमंत्रं देहि स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं मन्दार–कल्प–हरिचन्दन–पारिजात–मध्ये शशाङ्क– मणिमण्डित–वेदिसंस्थे। अर्धेन्दु – मौलि – सुललाट – षडर्धनेत्रे भिक्षां प्रदेहि गिरिजे ! क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥1॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं केयूर – हार – कनकाङ्गदकर्णपूरे काञ्चीकलाप– मणिकान्ति–लसद् दुकूले । दुग्धाऽन्नपात्र – वर – काञ्चन –दर्विहस्ते भिक्षां प्रदेहि गिरिजे ! क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ऐं ॐ ॥2॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीम् आली–कदम्ब– परिसेवित–पार्श्वभागे–शक्रादिभिर्मुकुलिताञ्जलिभिः पुरस्तात् । देवि ! त्वदीय – चरणौ शरणं प्रपद्ये भिक्षां प्रदेहि गिरिजे ! क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥3॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं गन्धर्व–देव–ऋषि–नारद–

कौशिकाऽत्रि–व्यासाऽम्ब– रीक्ष–कलशोद्भव–कश्यपाद्याः । भक्त्या स्तुवन्ति निगमा – ऽऽगम– सूक्त– मन्त्रैर्भिक्षां प्रदेहि गिरिजे ! क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥4॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं लीलावचांसि तव देवि ! ऋगादिवेदाः सृष्ट्यादिकर्मरचना भवदीयचेष्टा। त्वत्तेजसा जगदिदं प्रतिभाति नित्यं भिक्षां प्रदेहि गिरिजे ! क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥5॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं शब्दात्मिके शशिकलाभरणार्धदेहे शम्भो–रुरस्थल–निकेतननित्यवासे। दारिद्र्य–दुःख–भयहारिणि का त्वदन्या भिक्षां प्रदेहि गिरिजे ! क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥6॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सन्ध्यात्रये सकलभूसुरसेव्यमाने स्वाहा स्वधासि पितृदेवगणार्तिहन्त्री। जायाः सुताः परिजनातिथयोऽन्नकामाः भिक्षां प्रदेहि गिरिजे! क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥7॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सद्भक्तकल्पलतिके भुवनैकवन्द्ये भूतेशहृत्कमल– मग्न–कुचाग्रभृङ्गे ! कारुण्यपूर्णनयने किमुपेक्षसे मां भिक्षां प्रदेहि गिरिजे ! क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥8॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीम् अम्ब ! त्वदीय–चरणाम्बुज–संश्रयेण ब्रह्मादयो–ऽप्यविकलां श्रियमाश्रयन्ते । तस्मादहं तव नतोऽस्मि पदारविन्दे भिक्षां प्रदेहि गिरिजे ! क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥9॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं एकाग्रमूलनिलयस्य महेश्वरस्य प्राणेश्वरि ! प्रणत–भक्तजनाय शीघ्रम्। कामाक्षि – रक्षित – जगत् त्रितयेऽन्नपूर्णे भिक्षां प्रदेहि गिरिजे ! क्षुधिताय मह्यम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥10॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं भक्त्या पठन्ति गिरिजादशकं प्रभाते मोक्षार्थिनो बहुजनाः प्रथितान्नकामाः। प्रीता महेशवनिता हिमशैलकन्या। तेषां ददाति सुतरां मनसेप्सितानि । क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥11॥

इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितमन्नपूर्णाकवचं समाप्तम् ।

ज्ञान–कलिका–स्तोत्रम्

(त्रिपुरारहस्य में वर्णित इस स्तोत्र के माहात्म्य में कहा गया है– माँ! तेरी आराधना के अनेक और विचित्र मार्ग है, जिनमें किसी से भी तुम्हारी आराधना की जा सकती है, जैसे समस्त नदियों का जल सागर स्वीकार करता है, वैसे तुम भी समस्त प्रकार से की गई अपनी आराधना स्वीकार करती हो। अतः माँ मेरा षट्पद मन सदा तुम्हारे चरणों में लगा रहे)

शिवे देवि संवित्सुधासागराऽऽत्म
स्वरूपाऽसि सर्वान्तराऽऽत्मैकरूपा।
न किञ्चिद् विना त्वत्कलामस्ति लोके
ततः सत्स्वरूपाऽसि सत्येऽप्यसत्ये ॥1॥

असत्यं पुनः सत्यमन्ये द्विरूपं
द्वयातीतमेके जगुः सर्वमेतत् ।
न ते तां विदुर्मायया मोहितास्ते
चिदानन्दरूपा त्वमेवाऽसि सर्वम् ॥2॥

क्षणानां क्रमैर्भिन्नरूपां धराद्यैः
मितामाहुरेके तमोमात्ररूपाम्।
तमोदीप्तिसंभिन्नरूपाञ्च शान्त–
स्वरूपां महेशीं विदुस्त्वां न तेऽज्ञाः ॥3॥

शिवादि–क्षिति–प्रान्त–तत्त्वावलि–र्या
विचित्रा यदीये शरीरे विभाति।
पटे चित्रकल्पा जले सेन्दुतारा
नभोवत्परा सा त्वमेवाऽसि सर्वा ॥4॥

अभिन्नं विभिन्नं बहिर्वाऽन्ततरे वा
विभाति प्रकाशस्तमो वाऽपि सर्वम् ।
ऋते त्वां चितिं येन नो भाति किञ्चित्
ततस्त्वं समस्तं न किञ्चित्त्वदन्यत् ॥5॥

निरुध्याऽन्तरङ्ग विलाप्याऽक्ष्यसङ्घं
परित्यज्य सर्वत्र कामादिभावम् ।
स्थितानां महायोगिनां चित्तभूमौ
चिदानन्दरूपा त्वमेका विभासि ॥6॥

तथाऽन्ये मनः सेन्द्रियं सञ्चरच्चा-
ऽप्यसंयम्य तन्मार्गके जागरूकाः ।
स्वसंवित्सुधाऽऽदर्शदेहे स्फुरन्तं
महायोगिनाथाः प्रपश्यन्ति सर्वम् ॥7॥

निरुक्ते महासारमार्गेऽतिसूक्ष्मे
गतिं ये न विन्दन्ति मूढस्वभावाः ।
जनान् तान् समुद्धर्तुमक्षावगम्यं
बहिः स्थूलरूपं विभिन्नं विभर्षि ॥8॥

तदाराधनेऽनैकमार्गान् विचित्रान्
विधायाऽथमार्गेण केनापि यातम्।
नदीवारि सिन्धुर्यथा स्वीकरोति
प्रदाय स्वभावं नु स्वात्मीकरोषि ॥9॥

तथा तासु मूर्तिष्वनेकासु मुख्या
धनु–र्बाण–पाशाङ्कुशाढ्यैव मूर्तिः।
शरीरेषु मूर्धेव ये तां भजेयु-
र्जनास्त्रैपुरीं मूर्तिमत्युत्तमास्ते ॥10॥

जनान् दु:खसिन्धोः समुद्धर्तुकामा
पथस्ताननेकान् प्रदिश्य प्रकृष्टान् ।
दयार्द्रस्वभावेति विख्यातकीर्ति–
स्त्वमेकैव पूज्या पराशक्तिरूपा ॥11॥

सदा ते पदाब्जे मनः षट्पदो मे
पिबन् तद्रसं निर्वतः संस्थितोऽस्तु।
इति प्रार्थनां मे निशम्याऽऽशुमात–
र्विधेहि स्वदृष्टि दयार्द्रामपीषत् ॥12॥

इति संस्तुत्य सा गौरी त्रिपुरां परमेश्वरीम्।
स्तोत्रेण ज्ञानकलिकाख्येन ध्यानं योग समास्थितः ॥13॥

॥इति ज्ञानकलिका स्तोत्रम् ॥

भवान्यष्टकम्

(श्रीमदादि शंकर भगवत्पाद विरचित भवान्यष्टक अत्यन्त प्रसिद्ध है। जिसमें वे कहते हैं- न तो मुझमें विद्या है, न ज्ञान। कोई भी सांसारिक सम्बन्ध भी मेरे अपने नहीं हैं, मैं अगन्तुक हूँ। माँ, केवल आप ही मेरी गति हैं, कृपया मेरी रक्षा करें। यही इस स्रोत्र का मूलभाव है। इसके नित्यपाठ का योगक्षेम पराम्बा ललिता महाभट्टारिका करती हैं ।)

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥1॥

भवाब्धावपारेमहा–दु:ख–भीरु:
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः ।
कु–संसार–पाश–प्रबद्धः सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥2॥

नं जानामि दानं न च ध्यान योगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्र मन्त्रम्
न जानामि पूजां न च न्यास योगं,
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥3॥

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वाऽपि मात–
र्गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥4॥

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः ।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥5॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चाऽन्यत् सदाऽहं शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥6॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चाऽनले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥7॥

अनाथो दरिद्रो जरा-रोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः ।
विपत्तौ प्रविष्ठः प्रणष्टः सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥8॥

॥ इति भवान्यष्टकम् ॥

नाभि विद्या

श्री विद्यारहस्य एक अनूठा प्रयोग है। गुरु मुख से ही इस गोपनीय 36 तत्वात्मक साधना का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है।

ॐ गुरुभ्यो नमः
ह्रीं परदेवतायै नमः

अनेक पुण्यैः संप्राप्य श्री विद्या षोडशाक्षरीं।
यदुच्चारण मात्रेण पाप संघः प्रलीयते ॥

अगस्त्य उवाच

हयग्रीव दया सिन्धो ! सर्व शास्त्र विशारद ।
केन प्राप्तोऽसि नियतमात्म ज्ञानमचञ्चलम् ॥
केन संप्राप्नुयान्मोक्ष माननम् रस संभृतम् ।
तन्मे ब्रूहि पराशक्ति विषये शास्त्र गोचरे ॥

हयग्रीव उवाच

अगस्त्य मुनि शार्दूल श्रृणु वक्ष्यामि सादरम् ।
शिवाशिव रहस्यं तद् गोपनीयं महामुने ॥
रहस्यमपि तद्वक्ष्येयद्वै साक्षाच्छिवोदितम् ।
एकान्ते रहसि-प्राप्तं कैलाश शिरवरे शुभे ॥
नाना रत्नमये दिव्ये मण्डपे नित्य मङ्गले ।
श्वेत पद्मासनासीनं देव देवं सनातनम् ॥
सच्चिदानन्दमद्वैतमुमा प्रोवाच सादरम् ।
नत्वा स्तुत्वा निजैकाग्रे दृष्ट्या तुष्ट्या विलोक्य च ॥
मानसैरुपचारैस्तु पूजयित्वा यथा विधि ।
निज स्वरूपं विज्ञातुमिच्छा कुलित मानसः ॥

देव्युवाच

देव देव महादेव सच्चिदानन्द विग्रह ।
यद्गोप्यं तव सर्वस्वं कथयस्व मम प्रभो ॥

शिव उचाव

श्रृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि रहस्यं यद्वचोऽधुना।
गोपनीयं प्रयत्नेन पूर्णाहन्ता मयं परम् ॥
परापर मयं भेदमंत्र त्रैलोक्य दुर्लभम् ।
नाभि विद्यात्मकं दिव्यं षट्त्रिंशत्तत्व संख्यकृम् ॥

मातृकानाथ बालिभिर्युवत्या परयासह ।
चत्वारिंशत्संख्यकाभिराख्याताभिरितीरिता ॥

षडङ्ग–न्यास– ॐ अस्य श्री नाभि विद्या षोडशाक्षरी त्रिपुर सुन्दरी ब्रह्मविद्या मन्त्रस्य आनन्द भैरव ऋषये नमः शिरसि; अमृत विराट छन्दसे नमः मुखे; श्री राज राजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी देवतायै नमो हृदि; ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ऐं क ए ई ल क ए ई ल ह्रीं श्रीं श्रीं सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ बीजाय नमो नाभौ; ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ क्लीं सौः क्लीं क्लीं हसकहल हसकहल ह्रीं श्रीं श्रीं सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ शक्त्ये नमो गुह्ये; ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सौ; स क ल स क ल ह्रीं श्रीं श्रीं सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ कीलकाय नमः पादयोः; मम नाभि विद्या राज राजेश्वरी प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः सर्वाङ्गे। श्री सौभाग्य विद्याकर हृदयादिन्यासः ॥

ध्यानम्

पिक रुरु बल युग्मं कम्बुका त्र्यम्बकाभा,
बल पिक रु रु युग्मं राज विद्यास्तनाभा।
नृपति युग वतंसा मातृका नाथ बाला,
पर युवति समेता पातु माम् नाभि विद्या ।
मानसैरुपचारैः सम्पूज्य नव मुद्रा प्रदर्शयेत

अथ मनुः कादिष्वनुलोमा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः, ऐं ऐं क ए ई ल ह्रीं क्लीं क्लीं, ह स क ह ल, ह स क ह ल ह्रीं सौः सौः, स क ल सकल ह्रीं, श्रीं श्रीं, सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥1॥

हृल्लेखाद्वयम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौं ऐं ऐं कएईल कएईल ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं हसकहल हसकहल ह्रीं ह्रीं सौः सौः सकल सकल ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥2॥

कहाद्यनुलोमा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ऐं कएईल हसकल ह्रीं क्लीं क्लीं हसकहल हसकहल ह्रीं सौः ह्रीं सौः सकल सकल ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥3॥

हृल्लेखाद्वयम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ऐं कएईल हसकल ह्रीं ह्रीं कएईल हसकहल ह्रीं ह्रीं हसकहल हसकहल ह्रीं ह्रीं सौः सौः सकल सकल ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥4॥

हादिष्वनुलोमा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ऐं हसकल हसकल ह्रीं क्लीं ह्रीं क्लीं हसकहल हसकहल ह्रीं सौः ह्रीं सौः सकल सकल ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥5॥

हृल्लेखाद्वयम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ऐं हसकल हसकल ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं हसकहल हसकहल ह्रीं ह्रीं सौः सौः सकल सकल ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ॐ सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥6॥

कहाद्यनुलोमा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ऐं हसकल कएईल ह्रीं क्लीं हसकल कएईल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह स क ह ल ह्रीं सौः ह्रीं सौः सकल सकल ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ॐ सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥7॥

हल्लेखाद्वयम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ऐं हसकल कएईल ह्रीं हसकल कएईल ह्रीं, क्लीं क्लीं हसकहल हसकहल ह्रीं ह्रीं सौः सौः सकल सकल ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ॐ सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥8॥

काद्यनुलोमा विलोमा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः, ऐं सौः कएईल सकल ह्रीं क्लीं ऐं सौः कएईल सकल ह्रीं क्लीं हसकहल हसकहल ह्रीं सौः, ऐं सकल कएईल ह्रीं श्रीं ह्रीं सौः ऐं सकल कएईल ह्रीं श्रीं ॐ सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥9॥

हल्लेखाद्वयम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं सौः कएईल सकल ह्रीं ऐं सौः कएईल सकल ह्रीं, क्लीं क्लीं हसकहल हसकहल ह्रीं ह्रीं सौः, ऐं सकल कएईल ह्रीं सौः ऐं सकल कएईल ह्रीं श्रीं श्रीं ॐ सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥10॥

कहाद्यनुलोमा विलोमा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं सौः कएईल सकल ह्रीं क्लीं, ऐं सौः कएईल सकल ह्रीं क्लीं हसकहल हसकहल ह्रीं सौः, ऐं सकल हसकल ह्रीं श्रीं ऐं सकल हसकल ह्रीं श्रीं ॐ सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥11॥

हल्लेखाद्वयम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः, ऐं सौः कएईल सकल ह्रीं ऐं सौः कएईल सकल ह्रीं, क्लीं क्लीं हसकहल हसकहल ह्रीं ह्रीं सौं ऐं सकल हसकल ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥12॥

हाद्यनुलोम विलोमा

ॐ ऐं ह्रीं श्री ऐं क्लीं सौः, ऐं सौः हसकल सकल ह्रीं क्लीं, ऐं सौः हसकल सकल ह्रीं क्लीं, हसकहल हसकहल, ह्रीं सौः ऐं सकल हसकहल ह्रीं श्रीं ह्रीं सौः ऐं सकल हसकल ह्रीं श्रीं, सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥13॥

हल्लेखाद्वयम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौं:, ऐं सौः हसकल सकल ह्रीं, ऐं सौः हसकल सकल ह्रीं, क्लीं क्लीं हसकहल हसकहल, ह्रीं ह्रीं, सौः ऐं सकल हसकल ह्रीं, सौः ऐं सकल हसकल ह्रीं, सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥14॥

हकाद्यनुलोम विलोमा

ॐ ऐं ह्रीं श्री ऐं क्लीं सौः, ऐं सौः हसकहल, ऐं सौः हसकहल, ह्रीं सौः ऐं सकल कएईल ह्रीं श्रीं, ह्रीं सौः ऐं सकल कएईल ह्रीं श्रीं, सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥15॥

हल्लेखाद्वयम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौं:, ऐं सौः हसकल सकल ह्रीं, ऐं सौः हसकल सकल ह्रीं, क्लीं क्लीं हसकहल हसकहल, ह्रीं ह्रीं, सौः ऐं सकल कएईल ह्रीं, सौः ऐं सकल कएईल ह्रीं, श्रीं श्रीं, सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ॥16॥

कादिषु विलोमा

ॐ ऐं ह्रीं श्री ऐं क्लीं सौः, सौः सौः सकल सकल, ह्रीं क्लीं, ह्रीं क्लीं, हसकहल हसकहल, ह्रीं ऐं, ह्रीं ऐं, कएईल, कएईल, ह्रीं श्रीं, ह्रीं श्रीं, सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥17॥

हल्लेखाद्वयम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौं:, सौः सौः सकल सकल ह्रीं ह्रीं,

क्लीं क्लीं, हसकहल हसकहल, ह्रीं ह्रीं, ऐं ऐं कएईल कएईल, ह्रीं ह्रीं, श्रीं श्रीं, सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ॥18॥

कहादिविलोमा

ॐ ऐं ह्रीं श्री ऐं क्लीं सौः, सौः सौः सकल सकल, ह्रीं ह्रीं क्लीं, हसकहल हसकहल, ह्रीं ऐं कएईल हसकल ह्रीं श्रीं, कएईल, हसकल ह्रीं श्रीं, सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ॥19॥

हल्लेखाद्वयम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौंः, सौः सौः सकल सकल ह्रीं ह्रीं, क्लीं क्लीं, हसकहल हसकहल, ह्रीं ह्रीं ऐं ऐं, कएईल हसकल ह्रीं, कएईल हसकल ह्रीं, श्रीं श्रीं, सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ॥20॥

हादिसु विलोमा

ॐ ऐं ह्रीं श्री ऐं क्लीं सौः, सौः सौः सकल सकल, ह्रीं क्लीं, हसकहल ह्रीं क्लीं हसकहल, ह्रीं ऐं ह्रीं ऐं, हसकल हसकल, ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं, सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ॥21॥

हल्लेखाद्वयम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौंः, सौः सौः सकल सकल ह्रीं ह्रीं, क्लीं क्लीं, हसकहल हसकहल, ह्रीं ह्रीं, ऐं ऐं हसकल हसकल, ह्रीं ह्रीं, श्रीं श्रीं, सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ॥22॥

हकादिविलोमा

ॐ ऐं ह्रीं श्री ऐं क्लीं सौः, सौः सौः सकल सकल, ह्रीं क्लीं ह्रीं क्लीं, हसकहल हसकहल, ह्रीं ऐं ह्रीं ऐं, हसकल कएईल ह्रीं श्रीं, सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ॥23॥

हल्लेखाद्वयम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौंः, सौः सौः सकल सकल ह्रीं ह्रीं,

क्लीं क्लीं, हसकहल हसकहल, ह्रीं ह्रीं, ऐं ऐं हसकल कएईल ह्रीं, हसकल कएईल ह्रीं, श्रीं श्रीं, सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ॥24॥

अथ राजविद्या कादिषोडषी

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं ऐं कएईल ह्रीं क्लीं हसकहल ह्रीं सौः सकल ह्रीं श्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ ॥25॥

हृल्लेखाद्वयम्

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं ऐं कएईल ह्रीं ह्रीं क्लीं, हसकहल ह्रीं, हसकहल ह्रीं सौः सकल ह्रीं, सौः सकल ह्रीं, सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ॥26॥

राज राजपरा षोडषी

ॐ श्रीं सौः क्लीं ऐं ह्रीं ॐ श्रीं, ॐ श्रीं सौः क्लीं ऐं ह्रीं ॐ श्रीं, सौः सकल ह्रीं क्लीं हसकहल ह्रीं ऐं कएईल ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ॐ ॥27॥

हृल्लेखाद्वयम्

ॐ श्रीं सौः क्लीं ऐं ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं सौः क्लीं ऐं ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं, सौः सकल ह्रीं, सौः सकल ह्रीं, क्लीं हसकहल ह्रीं, क्लीं हसकहल ह्रीं, ऐं कएईल ह्रीं, ऐं कएईल ह्रीं, श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ॐ ॥28॥

हादिषोडषी

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः, ॐ ह्रीं श्रीं ऐं, हसकल ह्रीं क्लीं हसकहल ह्रीं सौः सकल ह्रीं श्रीं सौः, ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ ॥29॥

हृल्लेखाद्वयम्

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः, ॐ ह्रीं श्रीं ऐं हसकल ह्रीं, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः, ॐ ह्रीं श्रीं ऐं हसकहल ह्रीं, क्लीं हसकहल ह्रीं,

क्लीं हसकहल ह्रीं, सौः सकल ह्रीं, सौः सकल ह्रीं, श्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ ॥30॥

हादिपराषोडषी

ॐ श्रीं सौः क्लीं ऐं ह्रीं, ॐ ह्रीं श्रीं, ॐ श्रीं सौः क्लीं ऐं ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं, सौः सकल ह्रीं क्लीं हसकहल ऐं हसकल ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ॐ ॥31॥

हृल्लेखाद्वयम्

ॐ श्रीं सौः क्लीं ऐं ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं, ॐ श्रीं सौः क्लीं ऐं ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं, सौः सकल ह्रीं, सौः सकल ह्रीं, क्लीं हसकहल ह्रीं क्लीं हसकहल ह्रीं, ऐं हसकल ह्रीं, ऐं हसकल ह्रीं, श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ॐ ॥32॥

कहादिषोऽशी

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः, ॐ ह्रीं श्रीं ऐं सौः कएईल सकल ह्रीं क्लीं, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं ऐं सौः कएईल सकल ह्रीं क्लीं, हसकहल हसकहल, ह्रीं सौः ऐं सकल हसकल ह्रीं श्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ ॥33॥

हृल्लेखाद्वयम्

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः, ॐ ह्रीं श्रीं ऐं सौः, कएईल सकल ह्रीं, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं ऐं सौः, कएईल सकल ह्रीं, क्लीं क्लीं, हसकहल हसकहल, ह्रीं ह्रीं, सौः ऐं सकल हसकल ह्रीं, सौः, ऐं सकल हसकल ह्रीं श्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ ॥34॥

हकादि पराषोडशी

ॐ श्रीं सौः क्लीं ऐं ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं, ॐ श्रीं सौः क्लीं ऐं ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं, ऐं सौः हसकल सकल ह्रीं क्लीं, ऐं सौः हसकल

सकल ह्रीं क्लीं, हसकहल हसकहल ह्रीं सौः, सकल कएईल ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ॐ ॥35॥

हृल्लेखाद्वयम्

ॐ श्रीं सौः क्लीं ऐं ह्रीं ॐ श्रीं, ॐ श्रीं सौः क्लीं ऐं ह्रीं ॐ श्रीं, ऐं सौः हसकल सकल ह्रीं, ऐं सौः हसकल सकल ह्रीं, क्लीं क्लीं हसकहल, हसकहल, ह्रीं ह्रीं सौः ऐं सकल कएईल ह्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ॐ ॥36॥

मात्रिका विद्या

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्री अं + + 48 + + क्षं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ ॥37॥

गुरुनाथ विद्या

ॐ श्रीं सौः क्लीं ऐं ह्रीं ॐ श्रीं ह्रीं श्री हसौः स्हौः हसक्षमल वरयूं सौः क्लीं ऐं सहक्षमल वरयीं हंसः सोहं सोहं हंसः श्री गुरुदेवताभ्यो नमो नमः स्वाहा ॥38॥

अथ बाला विद्या

ऐं ऐं ऐं, क्लीं क्लीं क्लीं सौः सौः सौः ऐं ॥39॥

पराविद्या

ॐ श्रीं सौः श्रीं ॐ ॥40॥

कादि विद्या

कंएइल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकहल ह्रीं श्रीं ॥41॥

यथाशक्ति जपित्वा पुनः ऋष्यादि ध्यानान्तं विधाय श्रीमत्पञ्चदशाक्षर्या लक्षावृत्या तु यत्फलम् । नाभि विद्यां सकृज्जप्वा तत्फलं लभते भृशम् ॥

श्री गुरु देवतार्पणमस्तु ॥ श्रीमद्विमलानन्दनाथ चरण कमल मिलिन्दायमान मानसेन ब्रह्मानन्देन लिखितम् ॥

स्वयम्वरा पूजन-जप-विधि

अथोच्यते विवाहाप्त्यै स्वयम्बरकलाशिवा ॥51॥
तारो माया योगिनीतिद्वयं योगेश्वरिद्वयम् ।
योगनिद्राभयङ्करिस्यात्सकलस्थावरेति च ॥52॥
जङ्गमस्यमुखं प्रोच्यहृदर्यममर्सपठेत् ।
वशमाकर्षयाकर्षयपवनोवह्नि सुन्दरी ॥53॥

स्वयंवर कला मन्त्र : अब विवाह हेतु स्वयंवर कला विद्या को बतलाते हैं– तार (ॐ) माया (ह्रीं) 2 बार योगिनि (योगिनि-योगिनि) 2 बार योगेश्वरि (योगेश्वरि योगेश्वरि) फिर 'योग' निद्रा (भ) तथा 'यकरि' फिर 'सकलास्थावर' 'जगमस्य मुख' कहकर 'हृदये' 'मम' तथा 'वशमाकर्षयाकर्ष पवन (य) एवं बह्नि सुन्दरी (स्वाहा) लगाने से 50 अक्षर वाला यह मन्त्र बनता है।

टिप्पणी : ॐ योगिनि योगिनी योगेश्वरि योगेश्वरि योगभयंकरि सकल स्थावरजंगमस्य मुखं हृदयं मम वशमाकर्षयाकर्षय स्वाहा।

पञ्चाशद्वर्णविद्याया मुनिरस्याः पितामहाः ।
छन्दोतिजगती देवीगिरिपुत्रीस्वयम्बरा ॥54॥
जगत्त्रयेतिहृदयं त्रैलोक्येतिशिरोमतम् ।
उरगेतिशिखा सर्वराजेतिकवचं तथा ॥55॥
सर्वस्त्रीपुरुषेत्यक्षि सर्वेत्यस्त्रंसमीरितम् ।
तारामायादिकावश्यमोहिन्यैपदपश्चिमाः ॥56॥
षडङ्गमन्त्राउद्दष्टिा मूलेन व्यापकं चरेत् ।
ध्यायेद्देवीं महादेवं वरीतुं समुपागताम् ॥57॥

विनियोग एंव षडङ्गन्यासः पचास अक्षर वाली इस विद्या के ऋषि ब्रह्मा हैं, छन्द जगती हैं तथा देवता गिरीपुत्री स्वयंवरा देवी हैं। तार(ॐ) एवं माया (ह्रीं) को प्रारम्भ में लगाकर तथा 'वश्यमोहिन्यै' अन्त में लगाकर 'जगत्त्रय' से हृदय 'त्रैलोक्य' से

शिर, 'उरङ्ग' से शिखा ।

स्वरूपमन्यत् यथा–ॐ ह्रीं योगिनी 2 योगेश्वरि योगेश्वरि योगभयंक रिसकलस्थावरजङ्गमस्य मुखंहृदयंममवशमाकर्षयाकर्षय स्वाहेति ॥52–54॥ पङ्गमाह । जगत्त्रयेतीति ॥55॥ तारामायादिका:। वश्य-मोहिन्यैपदं पश्चिममन्तर्वर्तियेषामीदृशा: । षडंगमन्त्राइत्युक्तत्वात्। ॐ ह्रीजगन्नयवश्यमोहिन्यैहृदयाय नम:–ॐ ह्रीं त्रैलोक्य-वश्यमोहिन्यैशिरसे स्वाहा 0–ॐ ह्रींउरगवश्यमोहिन्यैशिखेत्यादि-बोध्यम् । मायात्रदीर्घषट् कयुताकार्य्या ॥56–57॥
सर्वराज, से कवच, 'सर्व स्त्रीपुरुष' से नेत्र तथा 'सर्व' से अस्त्र पर न्यास करना बताया गया है। (इस प्रकार) षडङ्गन्यास के मन्त्र बताये गये हैं। मूलमन्त्र से व्यापक न्यास करना चाहिए।

फिर महादेव का वर करने के लिए समुद्यत देवी का ध्यान करना चाहिए।
टिप्पणी विनियोग: ॐ अस्य श्री स्वयंवरकलामन्त्रस्य ब्रह्माऋषि: जगती छन्द:, देवीगिरिपुत्रीस्वयंवरा देवता ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोग:।

षडङ्गन्यास: ॐ ह्रीं जगत्त्रयवश्यमोहिन्यै हृदयाय नम:।
" ह्रीं त्रैलोक्यवश्यमोहिन्यै शिरसे स्वाहा ।
" ह्रीं उरगवश्यमोहिन्यै शिखायै षषट्।
" ह्रीं सर्वराजवश्यमोहिन्यै कवचाय हुम् ।
" ह्रीं सर्वस्त्रीपुरुषवश्यमोहिन्यै नेत्रत्रयाय वौषट्।
" ह्रीं सर्ववश्यमोहिन्यै अस्त्राय फट् ।

शम्भुं जगन्मोहनरूपपूर्णं विलोक्यलज्जाकुलितांस्मिताढ्याम्।
मधूकमालां स्वसखीकराभ्यां संविभ्रतीमद्रिसुतां भजेयम् ॥58॥

ध्यान: जगत् को मोहित करने वाले भगवान शम्भु के रूप को एक टक देखकर लजाती एवं मन्द–मन्द मुस्कराती हुई, तथा अपनी सखियों के साथ मधूक पुष्पों की माला (वर माला) लिए

हुए गिरिसुता का ध्यान करना चाहिए।

एवं ध्यात्वा जपेल्लक्ष चतुष्कं तद्दशांशतः ।
पायसान्नेन जुहुयात्पीठे पूर्वोदिते यजेत् ॥59॥

जपसंख्या एवं हवनः इस प्रकार ध्यान कर 4 लाख मन्त्रों का जप करना चाहिए। तथा पायस (खीर) से दशांश होम करना चाहिए। पूर्वोक्त पीठपर देवी का पूजन करना चाहिए ।

त्रिकोणचतुरस्राङ्गकोणाष्टदलदिग्दलम् ।
दिक्कलादन्तपत्राणि चतुष्षष्टिदलं पुनः ॥60॥
वृत्तत्रयं चतुर्द्वारयुक्तं धरणिकेतनम् ।
पूजायन्त्रं प्रकुर्वीत तत्र सम्पूजयेदिमाम् ॥61॥

पूजन यन्त्रः त्रिकोण, चतुरस्र, षटकोण, अष्टदल, दशदल पुनः दशदल, षोडशदल, बत्तीसदल, चौसठदल उसके बाद 3 वृत्त तथा 4 द्वार वाला भूपुर सहित पूजा यन्त्र बनाकर उसपर देवी का पूजन करना चाहिए।

टिप्पणीः स्वयंवर कला देवी का पूजन करने के लिए निम्नलिखित आकृति जैसा यन्त्र बना लेना चाहिए।

त्रिकोणे पार्वतीमिष्ट्वा चतुरस्रेर्चये दिमाः ।
मेधां विद्यां पुनर्लक्ष्मीं महालक्ष्मीं चतुर्थिकाम् ॥621
षट्कोणेषु षडङ्गानि स्वरानष्टदलेर्चयेत् ।
दिग्दलद्वितीये देवानिन्द्रादीनायुधानि च ॥63॥
ताराद्येन नमोन्तेन श्रीबीजेन रमां यजेत् ।
कलापत्रे द्विरामारे पाशमांयांकुशैःशिवा ॥64॥
वेदाङ्गपत्रे त्रिपुटां श्रीमायामदनैर्यजेत् ।
वृत्तत्रये महालक्ष्मीं भवानीं पुष्पसायकाम् ॥65॥
चतुरस्रं चतुर्द्वाषु विघ्नेशक्षेत्रेशभैरवान् ।
योगिनीः पूजयेदित्यं नवावरणमर्चनम् ॥661
एवं योभजते देवीं वश्यास्तस्याखिलाजनाः ।

लाजैस्त्रिमधुरो पेतैर्जुहुयादयुतं तु यः ॥67॥
लभते वांछितां कन्यां धनमानसमन्विताम् ।
एवं स्वयंवराप्रोक्ता प्रोच्यते मधुमत्यथ ॥68॥

आवरण पूजाः त्रिकोण में पार्वती का पूजन चतुरस्त्र में मेधा, विद्या, लक्ष्मी एवं महालक्ष्मी– इन चारों का पूजन करना चाहिए। षट्कोण में षडङ्गपूजा तथा अष्टदल में स्वरों का पूजन करना चाहिए। दोनों दशदलों में क्रमशः इन्द्र आदि दिक्पालों तथ वज्र आदि आयुधों का पूजन करना चाहिए। षोडशदल में 'ॐ श्रीं रमायै नमः' मन्त्र से रमा का पूजन करना चाहिए। बत्तीस दल में 'श्रीं ह्री क्रों शिवायै नमः'– मन्त्र से शिवा का पूजन करना चाहिए। चौसठ दल में 'श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिपुरायै नमः' से त्रिपुरा का पूजन करना चाहिए। तीनों वृत्तों में क्रमशः महालक्ष्मी, भवानी, एवं कामेश्वरी का पूजन करना चाहिए। भूपुर के चारों द्वारों पर गणेश, क्षेत्रपाल, भैरव एवं योगिनियों का पूजन करना चाहिए। इस प्रकार नौ आवरणों की पूजा करनी चाहिए।

इस रीति से जो व्यक्तिदेवी की आराधना करता है, सभी लोग उसके वश में हो जाते हैं। जो व्यक्ति त्रिमधु के साथ लाजाओं से होम करता है वह धन एवं मान सहित इच्छित कन्या को प्राप्त करता है। इस प्रकार स्वयम्बरा विद्या बतलायी गयी। अब मधुमती को बतलाते हैं।

पूजन विधि : श्लोक 58 के अनुसार देवी का ध्यान कर मानसोपचार से पूजन कर, विधिवत् अर्ध्य स्थापन कर श्लोक 8 की टिप्पणी में बतलायी गयी रीति से पीठ पूजा कर उस पीठ पर मूलमंत्रसे आवाहन आदि उपचारों से देवी का पूजन करना चाहिए। फिर देवी की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करनी चाहिये।

प्रथम आवरण में त्रिकोण में 'ह्रीं पार्वत्यै नमः' मन्त्र से पार्वती का पूजन करना चाहिये। द्वितीय आवरण में चतुरत्न में निम्नलिखित मन्त्रों से मेधा, विद्या, लक्ष्मी एवं महालक्ष्मी का पूजन करना चाहिये यथा–

ॐ मेधायै नमः ।

ॐ विद्यायै नमः ।
ॐ लक्ष्म्यै नमः ।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।

तृतीय आवरण में षट्कोण में न्यास मन्त्रों से षडङ्ग पूजा करनी चाहिये, यथा–

ॐ ह्रीं जगत्त्रय वश्य मोहिन्यै हृदयाय नमः ।
ॐ ह्रीं त्रैलोक्य वश्य मोहिन्यै शिरसे स्वाहा ।
ॐ ह्रीं उरग वश्य मोहिन्यै शिखायै वषट् ।
ॐ ह्रीं सर्वराज वश्य मोहिन्यै कवचाय हुम् ।
ॐ ह्रीं सर्वस्त्रीपुरुष वश्य मोहिन्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ ह्रीं सर्वराज वश्य मोहिन्यै अस्त्राय फट् ।

चतुर्थ आवरण में अष्टदल कमल में 'ॐ स्वरेभ्यो नमः' मन्त्र से स्वरों का पूजन करना चाहिये।

पञ्चम आवरण में दश दल में पूर्व आदि दिशाओं के नाम मन्त्रों से इन्द्र आदि दिक्पालों का पूजन करना चाहिए, यथा–

ॐ इन्द्राय नमः – पूर्वे ।
ॐ अग्नये नमः – आग्नेये ।
ॐ यमाय नमः – दक्षिणे ।
ॐ निर्ऋतये नमः – नैऋत्ये ।
ॐ वरुणाय नमः – पश्चिमे ।
ॐ वायवे नमः – वायव्ये ।
ॐ सोमाय नमः – उत्तरे ।
ॐ ईशानाय नमः – ईशान्ये ।
ॐ ब्रह्मणे नमः –पूर्वेशानयोर्मध्ये ।
ॐ अनन्ताय नमः – निऋति पश्चिमयोर्मध्ये ।

षष्ठ आवरण में दशदल में पूर्व आदि दिशाओं में वज्र आदि आयुधों का पूजन करना चाहिये, यथा–

ॐ वज्राय नमः	ॐ पाशाय नमः ।
ॐ पद्माय नमः	ॐ शक्तये नमः ।
ॐ अंकुशाय नः	ॐ चक्राय नमः ।
ॐ दण्डाय नमः	ॐ गदायै नमः ।

ॐ खड्गाय नमः ॐ शूलाय नमः ।

सप्तम आवरण में षोडश दल में 'ॐ श्रीं रमायै नमः' मन्त्र से रमा का पूजन करना चाहिये।

अष्टम आवरण में बत्तीस दल में 'आं ह्रीं क्रों शिवायै नमः' मन्त्र से शिवा का पूजन करना चाहिये।

नवम आवरण में चौसठ दलों में 'श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिपुरायै नमः' मन्त्र से त्रिपुरा का पूजन कर 3 वृत्तों में निम्नलिखित मन्त्रों से क्रमशः महालक्ष्मी, भवानी एवं कामेश्वरी का पूजन करना चाहिये, यथा–

श्री महालक्ष्मयै नमः । ह्रीं भवान्यै नमः ।
क्लीं कामेश्वर्यै नमः ।

और अन्त में भूपुर के चारों द्वारों पर यथाक्रमेण गणपति, क्षेत्रपाल, भैरव एवं योगिनियों का पूजन करना चाहिये, यथा–

ॐ ह्रीं गं गणेशाय नमः – पूर्व द्वारे।
ॐ ह्रीं बं बटुकाय नमः – दक्षिण द्वारे।
ॐ ह्रीं क्षं क्षेत्रपालाय नमः – पश्चिम द्वारे।
ॐ ह्रीं यं योगिनीभ्यो नमः – उत्तर द्वारे।

इस प्रकार आवरण पूजा करने के बाद पुनः पञ्चोपचार से देवी का पूजन कर पुष्पाञ्जलि समर्पित कर विधिवत् जप करना चाहिये।

नारायणोविन्दुयुतो ह्ल्लेखंकुशमन्मथा।
दीर्घवर्मध्रुवो वह्निप्रेयसी वसुवर्णवान् ॥69॥

मंत्र–पुष्पाञ्जलिः

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।

चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति। य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।

अग्निर्वा अपामायतनम्। आ0 । योऽग्नेरायतनं वेद। आ0 आपो वा अग्नेरायतनम्। आ0 । य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद । आ0 ।

वायुर्वा अपामायतनम् । आ0। यो वायोरायतनं वेद। आ0 आपो वै वायोरायतनम् । आ0 । य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद । आ0 ।

असौ वै तपन्नपामायतनम्। आ0। योऽमुष्य तपत आयतनं वेद। आ0। आपो वाअमुष्य तपत आयतनम्। आ0। य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आ0 ।

चन्द्रमा वा अपामायतनम् । आ0 । यश्चन्द्रमस आयतनं वेद। आ0। आपो वै चन्द्रमस आयतनम् । आ0। य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद । आ0।

नक्षत्राणि वा अपामायतनम्। आ0। यो नक्षत्राणामायतनं वेद। आ0। आपो वै नक्षत्राणामायतनम्। आ0। य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद । आ0 ।

पर्यन्यो वा अपामायतनम् । आ0। यः पर्जन्यस्यायतनं वेद। आ0 । आपो वै पर्जन्यस्यायतनम्। आ0। य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद । आ0 ।

संवत्सरो वा अपामायतनम् । आ0 । यस्संवत्सरस्यायतनं वेद। आ0 । आपो वै संवत्सरस्यायनतम् । आ0 । य एवं वेद।

योऽप्सु नावं प्रतिष्ठितां वेद। प्रत्येव तिष्ठति ॥

॥इति वैदिक पुष्पाञ्जलिः ॥

श्रीबगलामुखी - पूजापद्धतिः

पूजनसङ्कल्पः

साधक। हस्तेजला-ऽक्षत-द्रव्याण्यादाय, 'ॐ तत्सदित्यादि-मास पक्षादीन्' उल्लिख्य, मम समस्त-सदभीष्टसिद्ध्यर्थं न्यायालयेऽस्मत्पक्ष विजयार्थं च श्रीभगवत्याः पीताम्बरायाः श्री बगलामुखीदेव्याः यथा-लब्धोपचारेण पूजनमहं करिष्ये।

साधक को चाहिए कि, वह सर्वप्रथम दाहिने हाथ में जल, पुष्प, अक्षत और द्रव्य लेकर 'ॐ तत्सदित्यादि' से 'पूजनमहं करिष्ये' तक पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दें।

ध्यान

पीतपुष्पं गृहीत्वा, ध्यानं कुर्यात्-

मध्ये सुधाब्धि-मणिमण्डप-रत्नवेद्यां
सिंहासनोपरि-गतां परिपीतवर्णाम्
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषिताङ्गीं
देवीं स्मरामि धृत-मुद्गर-वैरिजिह्वाम् ॥
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं
वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन
पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ॥

इति श्रीबगलामुख्यै नमः, ध्यानं समर्पयामि।

हाथ में पीला फूल लेकर 'मध्ये सुधाब्धि0' से 'द्विभुजां नमामि' तक पढ़कर भगवती बगला का ध्यान करे।

आवाहन

ॐ हिरण्यर्वणां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जात वेदो मऽआवह ॥
आगच्छेह महादेवि ! सर्वसम्पत्प्रदायिनि ! ।

यावद् पूजां समाप्येत तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥

इति श्री बगलामुख्यै देव्यै नमः आवाहनं समर्पयामि।

'ॐ हरिण्यवर्णां0' या 'आगच्छेह' श्लोक पढ़कर देवी का आवाहन करें।

आसन

तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥
प्रसीद जगतां मातः संसारार्णवतारिणि।
मया निवेदितं भक्त्या आसनं सफलं कुरु ॥

इति श्री बगलामुख्यै देव्यै नमः आसनं समर्पयामि।

इससे बगलामुखी देवी के लिये आसन देवे।

पाद्य

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥
गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्श पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

इति पाद्यं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः ।

इससे जल चढ़ावे।

अर्घ्य

कां सोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
निधीनां सर्वदेवानां तवमनर्घ्यगुणा ह्यसि।
सिंहोपरिस्थिते देवि ! गृहाणाऽर्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥

इत्यर्घ्यं समर्पयामि श्री बगलामुख्यै नमः ।

इससे अर्घ्य समर्पण करें।

आचमन

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरण महं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥
कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभिस्वादु शीतलम् ।
तोयमाचमनीयार्थं देवीदं प्रतिगृह्यताम् ॥

इत्याचमनीयं समर्पयामि, बगलामुख्यै नमः ।

इससे आचमन के लिए जल दें।

स्नान

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्याऽलक्ष्मीः॥
मन्दाकिन्याः समानीतैः हेमाम्भोरुहवासितम्।
स्नानं कुरुष्व देवेशि ! सलिलैश्च सुगन्धिभिः ॥

इति स्नानं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः ।

इससे देवी को स्नान करावे।

पञ्चामृतस्नान

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥
पयोदधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

इति पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः ।

इससे भगवती बगला को पञ्चामृत से स्नान करावे।

उद्वर्तन (उबटन) स्नान

ॐ अठ.शुना ते अठ.शुःऽपृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः ॥
नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

इति उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः। तदन्ते शुद्धोदकस्नानम् आचमनीयं च समर्पयामि ।

इससे भगवती बगला को उद्वर्तन स्नान, तत्पश्चात् शुद्धोदक स्नान तथा आचमन करावे।

वस्त्र तथा उपवस्त्र

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥
पट्टकूलयुगं देवि ! कञ्चुकेन समन्वितम्।
परिधेहि कृपां कृत्वा मातः श्रीबगला मुखी
इससे वस्त्रादि चढ़ावें।

गन्धं

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
श्रीखण्डंचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं च देवेशि ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥
इति गन्धं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः
इससे चन्दन चढ़ावें [1]।

सौभाग्यसूत्र

सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणिसंयुतम्
कण्ठे बध्नामि देवेशि ! सौभाग्यं देहि मे सदा ॥
इति सौभाग्यसूत्रं समर्पयामि महामाया बगलायै नमः।
इससे सौभाग्य सूत्र चढ़ावें।

---

1. इसके बाद किसी पुस्तक में यज्ञोपवीत चढ़ाने का भी पाठ मिलता है, यथा–
   स्वर्णसूत्रमयं दिव्यं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा।
   उपवीतं मया दत्तं गृहाण बगलामुखि! ॥

अक्षत

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥
अक्षतान् निर्मलान् शुद्धान् मुक्ताफलसमन्वितान्।
गृहाणेमान् महादेवि ! देहि में निर्मलां धियम् ॥

इति अक्षतान् समर्पयामि ।

इससे महामाया को अक्षत चढ़ावे।

हरिद्रा

हरिद्रारञ्जिता देवि! सुखसौभाग्यदायिनि ! ।
तस्मात्त्वं पूजयाम्यत्र ! सुखशान्तिं प्रयच्छमे ॥

इति हरिद्रां समर्पयामि बगलामुख्यै नमः।

इससे हरिद्रा चढ़ावें।

कुड्कुम

कुड्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम्।
कुड्कुमेनाऽर्चितो देवि! प्रसीद बगलामुखि! ॥

इति कुड्कुमं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः।

इससे कुंकुम (रोली) चढ़ावे।

सिन्दूर

सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम्।
पूजिताऽसि मया देवि! प्रसीद बगलामुखि!।

इति सिन्दूरं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः।

इससे बगलामुखी देवी के लिए सिन्दूर चढ़ावे।

कज्जल

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे! शान्तिकारके ! ।
कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण बगलामुखि ! ॥

इति कज्जलं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः।

इससे देवी को कज्जल (काजल) अर्पण करे।

पुष्प

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥
मन्दार–पारिजातादि–पाटलं–केतकानि च।
जाती–चम्पक–पुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने !॥

इति पुष्पं समर्पयामि।
इससे फूल चढ़ावे।

पुष्पमाला

कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम !।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥
पद्मशंखजपुष्पादि - शतपत्रैर्विचित्राम् ।
पुष्पमालां प्रयच्छामि ते श्रीपीताम्बरे ! शिवे ॥

इति पुष्पमालां समर्पयामि।
इससे फूल की माला चढ़ावे।

धूप

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥
वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

इति धूपमाघ्रापयामि बगलामुख्यै नमः ।
इससे धूप चढ़ावे।

दीप

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥
आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेशि! त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥

इति दीपं दर्शयामि।
इससे दीप दिखलावे।

नैवेद्य तथा फल

आंर्द्रां पुष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥
अन्नं चतुर्विधं स्वादुरसैः षड्भिः समन्वितम् ।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि ! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु ॥

इति नैवेद्यं फलं च निवेदयामि बगलामुख्यै नमः

इससे नैवेद्य तथा फल निवेदन करे।

ताम्बूल

तां म ऽआवह जातदेवो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥
एला–लवङ्ग–कस्तूरी–कर्पूरैः पुष्पवासिताम् ।
वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि ! ॥

इति मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः।

इससे भगवती बगला के लिए ताम्बूल की बीड़ा अर्पण करें।

दक्षिणा

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपते् ॥
पूजाफलसमृद्धयर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि! ।
स्थापितं ते च प्रीत्यर्थं पूर्णान् कुरु मनोरथान् ॥

इति द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि बगलायै नमः

इससे द्रव्य चढ़ावे।

पुष्पाञ्जलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमांन्यासन्
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥
नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण बगलामुखि ! ॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु! कुबेराय

वैश्रवणाय महाराजाय नमः । ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायै स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषां तदा परार्धात् पृथिव्यैसमुद्रपर्यन्ताया ऽएकराडिति। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्याऽवसन्गृहे ॥ आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति। ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्चतो मुखो विश्चतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत् त्रैर्द्यावा भूर्मिं जनयन् देव एकः ।

इति बगलायै नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

इससे भगवती बगलामुखी के लिए मन्त्रपुष्पाञ्जलि अर्पण करें।

प्रदक्षिणा

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे।

इति प्रदक्षिणां समर्पयामि बगुलामुख्यै नमः।

इससे बगलामुखी की प्रदक्षिणा करे।

प्रार्थना

आराध्ये जगदम्ब ! दिव्यकविभिः सामाजिकैः स्तोतृभिः।
माल्यैश्चन्दन-कुङ्कुमैः परिमलैरभ्यर्चिते सादरात् ॥
सम्यङ्न्यासि-समस्तभूतिनिवहे सौभाग्यशोभाप्रदे !।
श्रीमुग्धे! बगले! प्रसीद विमले! दुःखापहे! पाहि माम् ॥
अनया पूजया महामाया बगलामुखी प्रीयतां न मम।

'आराध्ये-' इस श्लोक को पढ़कर महामाया बगलामुखी की प्रार्थना करे। पश्चात् 'मेरी की गयी पूजा से भगवती बगलामुखी प्रसन्न हों' ऐसा कहे और प्रणाम कर स्तोत्र-पाठ एवं जप आदि आरम्भ करे।

इति आचार्य पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्रिकृता बगलामुखी पूजा पद्धतिः समाप्ताः

श्री बगला-स्तुतिः

भज बगलाम्बां स्मर बगलाम्बां
नम बगलाम्बां मन्दमते।
यमगृह-शासन-भूरि-विलोडन-
रक्षणकरणे कोऽपि न ते ॥1॥
भज बगलाम्बां0

गृहिणी-भगिनी-तनया-सोदर-
मित्र-कुलादिक-द्रव्यकृते।
तव नहि कोऽपि त्रिनयन-रमणिः
चरण-सरोरुह-ध्यानरते ॥2॥
भज बगलाम्बां0

जन्म गृहीत्वा यदि ह्यविधेयं
त्वद्गणमित्वा किं नु कृतम् ?
दुरित-कुलाचल-पक्ष-वियोजन-
पुण्य-महायुध-पुन्यमृतम् ॥3॥
भज बगलाम्बां0

द्रविणं कस्य व्रीडन-हेतु-
र्निखिलो लोको नहि यत्तृप्तः।
साक्षाद् दयिता संक्षय हेतु
पृष्ठे कस्मात् व्रजसि तयोस्त्वम् ॥4॥
भज बगलाम्बां0

भूरि विचार्य त्वमलं शास्त्रं
लब्धः किं तेऽप्यर्धकपर्दः ।
श्रमयसि धिषणां मूढ़ ! किमर्थं ?
भज बगलाम्बां त्यज भव-भोगम् ॥5॥
भज बगलाम्बां0

काश्यामम्बर-परिवृतवेशो
दण्डी-मुण्डी-लुञ्चितकेशः ।
प्रवदसि तत्त्वं हृदि-कृतमहिलो
व्रतिनः केयं तव दुर्लीला ॥6॥
भज बगलाम्बां0

दृश्यो द्रष्टा दृष्टः साधन-
मेतत् त्रितयं यस्य तु विषयः ।
ज्ञेयं साक्षी तत्त्रयरहितो
द्रष्टदृष्टे नहि परिलोपः ॥7॥

भज बगलाम्बां0

संसारानल-भरजित-देहः
कथमहि शान्तिं नहि चेत् व्रजसि।
अतिशय-शीतल-पुण्य-हिमाचल-
सम्भव-बल्लीमय-प्रिय-देवीम् ॥8॥

भज बगलाम्बां0

तव नहि किञ्चित् त्वं नहि कस्या-
त्यमल-सनातनरूपं त्वं च।
धिषणासङ्गाध्यर्थं पश्यसि
अभिनवरूपं मूढ ! किमर्थम् ॥9॥

भज बगलाम्बां0

निभृता गङ्गा तटशमयित्री
रथ्या वस्त्रैर्नहि कृतकन्थै-
श्छदनैर्द्रूणां क्षुधममलं स्यात्
किमिति धनाढ्यं भजसि मदान्धम्? ॥10॥

भज बगलाम्बां0

अन्तर्यामी तव सुखकारी
नो चेदन्यः कः सुखकारी।
सर्वत्राऽयं पद्मे नियमः
सोऽयं कस्मान्न हिते रहितः ॥11॥

भज बगलाम्बां0

कृतमपि सुकृतं किं फलदं स्यात्।
यदि न त्रात्री मुद्गरधातृ ।
कृतमप्यकृतं नहि फलदं स्यात्
यदि सा गोप्त्री त्रिभुवनधात्री ॥12॥

भज बगलाम्बां0

कुरु निजकर्म त्यज दुर्व्यसनं
व्यसनी भव रे परमेश्वर्याम्।
भव हि जनेऽस्मिन् त्वं शुभवक्ता
भव त्वमधिकः शुभकरवादी ॥13॥
भज बगलाम्बां0

सकलो गुप्तस्तिष्ठतु तावत्
किं ते गुह्यमगुह्यसमानम् ।
गुह्यं सत्यं यत्तु तदेव
धृतहररमणी चरणसरोजम् ॥14॥
भज बगलाम्बां0

कोऽयं लोकः कस्त्वं भूतः ?
केयं लीला विषयविलीना ।
जन्मनि जन्मनि तस्यां लीनः
स्मरसि कथं नहि भुवनाधीशाम् ॥15॥
भज बगलाम्बां0

पूर्वं जन्मनि कस्त्वं जातो-
ऽप्यग्रे जन्मनि कस्त्वं भविता ।
सम्प्रति जन्मनि नश्वरदेहे
किमिति कुगर्वं कुरुषे मूढः ! ॥16॥
भज बगलाम्बां0

वृद्धो जातो जरया ग्रस्तः
कफयुत-लाला-घर-घर-कण्ठः ।
पश्यसि किं त्वं कस्य कुटुम्बं
भज शरणागत-मुद्गर-धात्रीम् ॥17॥
भज बगलाम्बां0

इति श्री बगला-स्तुतिः समाप्ता ।

श्री बाला त्रिपुरसुन्दरी जप विधि

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः। ॐ श्रीमहागणपतये नमः।

विनियोग–अस्य श्रीबाला–त्रिपुर–मन्त्रस्य श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषिः। पंक्तिश्छन्दः। श्री बाला–त्रिपुर–सुन्दरी देवता। ऐं बीजं। सौः शक्तिः। क्लीं कीलकं। श्री बाला–त्रिपुर सुन्दरी–प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि–न्यास : श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि। पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे। श्री बाला–त्रिपुर–सुन्दरी देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। सौः शक्तये नमः नाभौ। क्लीं कीलकाय नमः पादयोः। श्री बाला–त्रिपुर–सुन्दरी–प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कराङ्–न्यास : ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। सौः मध्यमाभ्यां नमः। ऐं अनामिकाभ्यां नमः। क्लीं कनिष्ठकाभ्यां नमः। सौः करतल–करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग–न्यास : ऐं हृदयाय नमः। क्लीं शिरसे स्वाहा। सौः शिखायै वषट्। ऐं कवचाय हुं। क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। सौः अस्त्राय फट्।

ध्यान्

अरुण–किरण–जालैरञ्जिता साऽवकाशा,
विधृत–जप–वटीका पुस्तकाभीति–हस्ता।
इतर–कर–वराढ्या फुल्ल–कल्हार–संस्था,
निवसतु–हृदि–बाला–नित्य–कल्याण–शीला॥

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ।

श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी मानस–पूजास्तोत्रम्

भगवान् श्रीमदादिशङ्कराचार्य–कृत मानसपूजा–स्तोत्र में भगवती राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी की कन्या बाला–त्रिपुरसुन्दरी की आराधनापरक स्तुति है। प्रत्येक श्लोक से भगवती बाला–त्रिपुरसुन्दरी की सपर्या सम्पादित की जा सकती है। प्रस्तुत स्तोत्र का पाठ करने से बिना श्रीयन्त्र–पूजन के भी साधक को यन्त्रराज के अर्चन का फल प्राप्त होता है।

उषसि मागध–मङ्गल–गायनै
झटिति जागृहि जागृहि जागृहि।
अतिकृपार्द–कटाक्ष–निरीक्षणै–
र्जगदिदं जगदम्ब सुखीकुरु ॥ 1 ॥

कनकमय–वितर्दि शोभमानं,
दिशि–दिशि पूर्ण–सुवर्ण–कुम्भयुक्तम्।
मणिमय–मण्डप–मध्यमेहि मात–
र्मयि कृपया हि समर्चनं गृहीतुम् ॥ 2 ॥

कनक–कलश–शोभमानशीर्षं,
जलधर–चुम्बित–समुल्लसत्–पताकम्।
भगवति तव सन्निवास–हेतो–
र्मणिमय–मन्दिर–मेतदर्पयमि ॥ 3 ॥

तपनीयमयी सतूलिका कमनीया मृदुलोत्तरच्छदा ।
नवरत्न–विभूषिता मया शिविकेयं जगदम्ब तेऽर्पिता ॥ 4 ॥

कनकमय–वितर्दि–स्थापिते तूलिकाढ्ये,
विविध–कुसुम–कीर्णे कोटि–बालार्क–वर्णे।

भगवति रमणीये रत्न–सिंहासनेऽस्मिन् ,
उपविश पदयुग्मं हेमपीठे निधेहि ॥ 5 ॥

मणिमय–मौक्तिक–निर्मितं महान्तं ,
कनक–स्तम्भ–चतुष्टयेन युक्तम् ।
कमनीयतमं–भवानि–तुभ्यं–
नव–मुल्लोचमहं समर्पयामि ॥ 6 ॥

दूर्वया सरसिजान्वित–विष्णुक्रान्तया च सहितं कुसुमाढ्यम्।
पद्मयुग्म–सदृशे–पदयुग्मे पाद्यमेतदुररीकुरु मातः ! ॥ 7 ॥

गन्ध–पुष्प–यव–सर्षप–दूर्वा–
सम्मितं तिल–कुशाक्षतमिश्रम् ।
हेम–पात्र–निहितं सह रत्नै–
रर्घ्यमेत–दुररीकुरु मातः । ॥ 8 ॥

जलज–द्युतिना–करेण जातीफल–
कङ्कोल–लवङ्ग–गन्धयुक्तैः ।
अमृतै–रमृतै–रिवाहृतै –
र्भगवत्याचमनं विधीयताम् ॥ 9 ॥

निहितः कनकस्य सम्पुटे पिहितो रत्नपिधानकेन सह ।
तदयं भवती–करेऽर्पितो मधुपर्को भवति प्रगृह्यताम् ॥ 10 ॥

एतच्चम्पक–तैल–मम्ब विविधैः पुष्पै–र्मुहु–र्वासितं ,
न्यस्तं रत्नमये सुवर्ण–चषके भृङ्गै–र्भ्रमद्‌भिर्वृतम् ।
सानन्दं सुर–सुन्दरीभि–रभितो हस्तैर्धृतं यन्मया ,
केशेषु भ्रमर–प्रभेषु सकलेष्वङ्गेशु चालिप्यताम् ॥ 11 ॥

मातः कुङ्कुम–पङ्क–निर्मितमिदं देहे तवोद्वर्तनं ,
भक्त्याऽहङ्कलयामि हेमरजसा सम्मिश्रितं केसरम् ।
केशाना–मलकै–र्विशोध्य विशदान् कस्तूरिकाद्यन्वितं,
स्नानं ते नवरत्न–कुम्भ–सहितैः संवासितोष्णोदकैः ॥ 12 ॥

दधि–दुग्ध–घृतैः समाक्षिकैः,
सितया शर्करया च समन्वितैः ।
स्नपयामि तवाहमादृतो ,
जननि! त्वां पुनरुष्ण–वारिभिः ॥ 13 ॥

एलो–शीर–सुवासितैः सुकुसुमै–र्गङ्गादि–तीर्थोदकै–
र्माणिक्या–मल–मौक्तिकामृत–युतैः स्वच्छैः सुवर्णोदकैः ।
मन्त्रान् वैदिक–तान्त्रिकान् परिपठन् सानन्द–मत्यादरात्
स्नानं ते परिकल्पयामि जननि स्नेहात्त्वमङ्गीकुरु ॥ 14 ॥

बालार्क–द्युति–दाडिमीय–कुसुम–प्रस्पर्धि–सर्वोत्तमं,
मातस्त्वं परिधेहि दिव्य–वसनं भक्त्या मया कल्पितम् ।
मुक्ताभि–ग्रर्थितं संकञ्चुकमिदं स्वीकृत पीतप्रभं ,
तप्तस्वर्ण–समान–वर्णबहुलं प्रावण्यमङ्गीकुरु ॥ 15 ॥

नवरत्नयुते मयार्पिते कमनीये तपनीय–पादुके ।
सविलासमिदं पदद्वयं कृपया देवि! तयोर्निधीयताम् ॥ 16 ॥

बहुभिरगरुधूपैः सादरं धूपयित्वा,
भवगति ! तव केशान् कङ्कतैर्मार्जयित्वा।
सुरभि–ररविन्दै–श्चम्पकै–श्चार्चयित्वा ,
झटिति कनकसूत्रै–र्जूटमावेष्टयामि ॥ 17 ॥

सौवीराञ्जनमिदमम्ब ! चक्षुषोस्ते,
विन्यस्तं कनक–शलाकया मया यत्।

तन्नूनं मलिन–मपि त्वदक्षि–सङ्गाद्,
ब्रह्मेन्द्राद्यभिलषणीयता–मियाय ॥ 18 ॥

मञ्जीरे पदयो–र्निधाय रुचिरं विन्यस्य काञ्चीं कटौ,
मुक्ताहार–मुरोजयो–रनुपमां–नक्षत्र–मालां गले ।
केयूराणि भुजेषु रत्नवलय–श्रेणीः करेषु क्रमात् ,
ताटङ्के तव कर्णयो–र्विनिदधे शीर्षे च चूडामणिम् ॥ 19 ॥

धम्मिल्ले तव देवि हेम–कुसुमान्याधाय भालस्थले,
मुक्ताराजि–विराजि–हेमतिलकं नासापुटे मौक्तिकम्।
मात–र्मौक्तिकजालिकाञ्च कुचयोः सर्वाङ्गुलीषूर्मिकाः,
कट्यां काञ्चन–किङ्किणी–र्विनिदधे रत्नावतंसं श्रुतौ ॥ 20 ॥

मात–र्भालतले तवाति–विमले काश्मीर–कस्तूरिका,
कर्पूरा–गरुभिःकरोमि तिलकं देहेऽङ्गरागं ततः ।
वक्षो–जादिषु यक्ष–कर्दम–रसैः सित्कांच–पुष्पद्रवैः,
पादौ–कुङ्कुम–लेपनादिभि–रहं सम्पूजयामि क्रमात् ॥ 21 ॥

रत्नाक्षतैस्त्वां परिपूजयामि,
मुक्ताफलै–श्चारुरुचै–र्विचित्रैः ।
अखण्डितै–र्देवि! यवादिभि–र्वा,
काश्मीर–पङ्काङ्कित–तण्डुलैर्वा ॥ 22 ॥

जननि चम्पक–तैलमिदं पुरो मृगमदोऽयमयं पटवासकः ।
सुरभि–गन्धमिदं च चतुःसमं सपदि सर्वमिदं प्रतिगृह्यताम् ॥23॥

सीमन्ते ते भगवति मया सादरं न्यस्तमेतत् ,
सिन्दूरं मे हृदय–कमले देवि हर्षं तनोतु ।
बालादित्य–द्युतिरिव सदा लोहिता यस्य कान्ति–
रन्तर्ध्वान्तं हरतु सकलं चेतसा चिन्तयामि ॥ 24 ॥

मन्दार–कुन्द–करवीर–लवङ्ग–पुष्पै–
स्त्वं देवि सन्ततमहं परिपूजयामि ।
जाती–जपा–बकुल–चम्पक–केतकादि–
नानाविधानि कुसुमानि च तेऽर्पयामि ॥ 25 ॥

मालती–बकुल–हेमपुष्पिका–काञ्चनार–करवीर–चम्पकैः ।
कर्णिकार–गिरिकर्णिकादिभिः पूजयामि जगदम्ब ते वपुः ॥ 26 ॥

पारिजात–शतपत्र–पाटलै–र्मल्लिका–बकुल–चम्पकादिभिः।
अम्बुजैश्च कुसुमैश्च सादरं पूजयामि जगदम्ब! ते वपुः ॥ 27 ॥

लाक्षा–सम्मिलितैः शिला–रसयुतैः श्रीवाम–सम्मिश्रितेः,
कर्पूराकलितैः सिता–मधुद्युतै–र्गोसर्पिषालोडितैः ।
श्रीखण्डागरु–गुग्गुल–प्रभृतिभि–र्नानाविधै–र्वस्तुभिः,
धूपं ते परिकल्पयामि जननि! त्वं धूपमङ्गीकुरु ॥ 28 ॥

रत्नालङ्कृत–हेमपात्र–निहितै–र्गोसर्पिषोद्दीपितैः,
दीपै–र्दीर्घतरान्धकार–विधुरै–र्बालार्क–कोटिप्रभैः।
आताम्रज्वल–दुज्वल–ज्वलनवद्रत्नप्रदीपैः सदा,
मात–स्त्वामह–मादरा–दनुदिनं नीराजयाम्युच्चकैः ॥ 29 ॥

महति कनकपात्रे स्थापयित्वा विशालान्,
डमरु–सदृशरूपान् पक्व–गोधूम–दीपान् ।
बहुघृतमथ तेषु न्यस्य दीपैरकम्पै–
र्भुवन–जननि कुर्वे नित्य–मारार्त्रिकन्ते ॥ 30 ॥

सविनयमथ दत्त्वा जानुयुग्मं धरायां ,
सपदि शिरसि धृत्वा पात्रमारार्तिकस्य ।
मुख–कमल–समीपे तेऽम्ब सार्धत्रिवारं,
भ्रमयति मयि भूयात् ते कृपार्द्रः कटाक्षः ॥ 31 ॥

मातस्त्वां–दधि–दुग्ध–पायस–महा–शाल्यन्न–सन्तानकान्,
सूपापूप–सिताघृतैः सवटकैः सक्षौद्र–रम्भाफलैः ।
एला–जीरक–हिंगु–नागर–निशा–कौस्तुम्बरीसंयुतैः,
शाकैः साकमहं सुधाधिकरसैः सन्तर्पयाम्यर्पयन् ॥32॥

सापूप–सूप–दधि–दुग्ध–सिता–घृतानि,
सुस्वादु–भक्ष्य–परमान्नपुरःसराणि ।
साकोल्लसन्मरिच–जीरक–वल्लिकानि,
भक्ष्याणि भुङ्क्ष्व जगदम्ब मयार्पितानि ॥33॥

क्षीर–मेतदिदमुत्तमोत्तमं प्राज्यमाज्य–मिदमुज्वलं मधु ।
मातरेतदमृतोपमं त्वया संभ्रमेण परिपीयतां मुहुः ॥34॥

उष्णोदकैः पाणियुगं मुखञ्च प्रक्षाल्य मातः कलधौतपात्रम् ।
कर्पूरमिश्रेण सकुंकुमेन हस्तौ समुद्वर्तय चन्दनेन ॥35॥

अतिशीरमुशीरवासितं तव पाणौ च मया निवेदितम् ।
पटपूतमिदं जितामृतं शुचि गङ्गामृतमम्ब पीयताम् ॥36॥

आताम्र–रम्भाफल–संयुतानि द्राक्षाफलाक्षोट–समन्वितानि।
सनारिकेलानि सदाडिमानि फलानि ते देवि! समर्पयामि ॥37॥

कलिङ्ग–कोशातक–संयुतानि जम्बीर–नारङ्ग–समन्वितानि।
सबीजपूराणि सदाडिमानि फलानि ते देवि समर्पयामि ॥38॥

कपूरिण युतैर्लवङ्ग–सहितैः कङ्कोल–चूर्णान्वितैः,
सुस्वादुक्रमुकैः सगौर–खदिरैःसुस्निग्ध–जातीफलैः।
मातः! केतकि–पत्र–पाण्डुरुचिरैस्ताम्बूल–वल्लीदलैः,
सानन्दं मुख–मण्डनार्थमतुलं ताम्बूल–मङ्गीकुरु ॥39॥

एला–लवङ्गादि–समन्वितानि कङ्कोल–कर्पूर–विमिश्रितानि।
ताम्बूल–वल्लीदल–संयुतानि फलानि ते देवि समर्पितानि ॥40॥

ताम्बूल–वल्लीदल–निर्जित–हेमवर्ण–
स्वर्णाक्त–पूगफल–मौक्तिक–चूर्णयुक्तम्।
रत्नस्थली–स्थितमिदं खदिरेण सार्धं,
ताम्बूलमम्ब वदनाम्बुरुहे! गृहाण ॥41॥

अथ–बहुमणि–मिश्रैर्मौक्तिकैस्त्वां विकीर्य
त्रिभुवनकमनीयैः पूजयित्वा च वस्त्रैः।
मिलित–विविधमुक्तां दिव्यमाणिक्य–युक्तां
जननि कनकवृष्टिं दक्षिणां तेऽर्पयामि ॥42॥

मातः काञ्चन–दण्ड–मण्डितमिदं पूर्णेन्दुबिम्बप्रभं,
नानारत्न–विशोभि–हेमकलशं–लोकत्रयाह्लादकम् ।
भास्वन्मौक्तिक–जालिकापरिवृतं प्रीत्यात्म–हस्ते धृतं,
छत्रन्ते परिकल्पयामि शिरसि त्वष्ट्रा स्वयं निर्मितम् ॥43॥

शरदिन्दु–मरीचि–गौरवर्णै–
र्मणियुक्तै–र्विलसत्सुवर्णदण्डैः ।
जगदम्ब विचित्र–चामरैस्त्वा–
महमानन्द–भरेण बीजयामि ॥44॥

मार्त्तण्ड–मण्डल–निभो जगदम्ब ! योऽयं
भक्त्या मया मणिमयो मुकुरोऽर्पितस्ते ।
पूर्णेन्दु–बिम्ब–रुचिरं वदनं स्वकीय–
मस्मिन् विलोकय विलोल–विलोचने त्वम् ॥45॥

इन्द्रादयो नतिनतै–र्मुकुट–प्रदीपै–
र्नीराजयन्ति सततं तव पादपीठम् ।

तस्मादहं तव शरीर–मशेषमेतन्–
नीराजयामि जगदम्ब सहस्रदीपैः ॥46॥

प्रियगति–रतितुङ्गो रत्न–पल्लाण–युक्तः,
कनक–मय–विभूषः–स्निग्ध–गम्भीर–घोषः।
भगवति कलितोऽयं वाहनार्थं मया ते,
तुरग–शत–समेतो वायुवेगस्तुरङ्गः ॥47॥

मधुकर–वृतकुम्भो न्यस्त–सिन्दूर–रेणुः,
कनक–कलितघण्टः किङ्कणी–शोभिकण्ठः।
श्रवण–युगल–चञ्चच्चामरो मेघतुल्यो,
जननि तव मुदे स्यान्मत्त–मातङ्ग एषः ॥48॥

द्रुततर–तुरगैर्विराजमानं मणिमय–चक्रचतुष्टयेन युक्तम्।
कनकमयमहं वितानवन्तं भगवति ते हि रथं समर्पयामि ॥49॥

हय–गज–रथपत्तिशोभमानं दिशि दिशि दुन्दुभि–मेघनादयुक्तम्।
अभिनव–चतुरङ्गसैन्यमेतद् भगवति भक्तिभरेण तेऽर्पयामि ॥50॥

परिखीकृत–सप्तसागरं बहु–सम्पत्सहितं मयाऽम्ब ते।
विपुलं धरणी–तलाभिधं प्रबलं दुर्गमिदं समर्पितम् ॥51॥

शतपत्रयुतैः स्वभाव–शीतैरतिसौरभ्ययुतैः परापगीतैः।
भ्रमरी–मुखरी–कृतैरनेकै–र्व्यजनैस्त्वां जगदम्ब बीजयामि ॥52॥

भ्रम–विलुलित–लोल–कुन्तलालि–
र्विगलित–माल्य–विकीर्ण–रङ्गभूमिः।
इयमति–चतुरा नटी नटन्ती ,
तव हृदये मुदमातनोतु मातः! ॥53॥

मुखचलन–विलास–लोलवेणी–
विलसित–निर्णित–लोलभृङ्गमाला: ।
युवजन–सुखकारि–चारुलीला,
भगवति! ते पुरतो नटन्ति बाला: ॥54॥

रुचिर–कुच–तटीनां नाट्यकाले नटीनां,
प्रतिगृहमथ तत्र प्रत्यहं–प्रादुरासीत् ।
धिमिकिति धिमि धिद्धी धिद्धि धिद्धेति धिद्धि–
धिमिति धिमिति तत्ता–थेयि–थेयीति शब्द: ॥55॥

भ्रमदलिकुल–तुल्या लोल–धम्मिल्लभारा,
स्मित–मुखकमलोद्यद्–दिव्य–लावण्य–पूरा।
अभिनव–नववेषा वारयोषा नटन्ती
परभृत–कलकण्ठी देवि मोदन्तनोतु ॥56॥

डमरु–डिण्डिम–झर्झर–झल्लरी मृदुरवार्द्र–घटार्द्रघटादय: ।
झटिति–झङ्कृतिभि–र्जगदम्बिके बहुदयं हृदयं सुखयन्तु ते ॥57॥

विपञ्चीषु सप्तस्वरान् वादयन्त्य–
स्तव द्वारि गायन्ति गन्धर्वकन्या:।
क्षणं सावधानेन चित्तेन मात:
समाकर्णय त्वं मया प्रार्थिताऽसि ॥58॥

अतिशय–कमनीयै–र्नर्त्तनै–र्नर्त्तकीनां,
झटिति च रमयित्त्वा चेत एवं त्वदीयम् ।
स्वयमहमपि चित्रै–र्नृत्य–वादित्र–गीतै–
र्भगवति भवदीयं मानसं रञ्जयामि ॥59॥

तव देवि गुणानुवर्णने चतुरा नो चतुराननादय:।
तदिहैकमुखेषु जन्तुषु स्तवनं कस्तव कर्त्तुमीश्वर: ॥60॥

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादि–फलन्ददाति।
तां सर्वपापक्षय–हेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि ॥61॥

रक्तोत्पला–रक्ततला–प्रभाभ्यां ध्वजोर्ध्वरेखा–कुलिशाङ्किताभ्याम्।
अशेषवृन्दारक–वन्दिताभ्यां नमो भवानीपदपङ्कजाभ्याम् ॥62॥
चरणनलिनयुग्मं पङ्कजैः पूजयित्वा
कनककमलमालां कण्ठदेशेऽर्पयित्वा।
शिरसि विनिहितोऽयं रत्नपुष्पाञ्जलिस्ते
हृदय–कमल–मध्ये देवि हर्षन्तनोतु ॥63॥

अथ मणिमय–मञ्चकाभिरामे द्युतिमति पुष्प–वितान–राजमाने।
प्रसरदगरु–धूपैर्धूपितेऽस्मिन् भगवति वासगृहेऽस्तु ते निवासः ॥64॥

एतस्मिन् मणिखचिते सुवर्णपीठे त्रैलोक्याभयवरदौ निधाय पादौ।
विस्तीर्णे मृदुलतरच्छदेऽस्मिन् पर्यङ्केकनकमये निषीद मातः ॥65॥

तव देबि सरोज–चिह्नयोः पदयोर्निर्जित–पद्मरागयोः ।
अतिरक्त–तरैरलक्तकैः पुनरुक्तां रचयामि रक्तताम् ॥66॥

अथ मातरुशीरवासितं निजताम्बूलरसेन राजितम्।
तपनीयमये हि पात्रके मुखगण्डूषजलं विधीयताम् ॥67॥

क्षणमथ जगदम्ब मञ्चकेऽस्मिन् ,
मृदुतर–तूलिकया विराजमाने।
अतिमहति मुदा निजेच्छया,
त्वं सुख–शयनं कुरु मां हृदि स्मरन्ती ॥68॥

मुक्ता–कुन्देन्दु–गौरां मणिमय–मुकुटां रत्नताटङ्कयुक्ता–
मक्षस्रक्–पुष्प–हस्तामभयवरकरां चन्द्रचूडां त्रिनेत्राम्।

नानालङ्कार–युक्तां सुर–मुकुट–लसद्–द्योतित–स्वर्णपीठां,
सानन्दां सुप्रसन्नां त्रिभुवन–जननीं चेतसा चिन्तयामि ॥69॥

एषा भक्त्या तव विरचिता या मया देवि पूजा,
स्वीकृत्यैनां सपदि सकलान् मेऽपराधान् क्षमस्व।
न्यूनं यत् तत् तव करुणया पूर्णतामेतु सद्यः
सानन्दम्मे हृदयकमले तेऽस्तु नित्यं निवासः ॥70॥

पूजामिमां पठेत् प्राज्ञः पूजाकर्तुमनीश्वरः ।
पूजा–फलमवाप्नोति वाञ्छितार्थांश्च विन्दति ॥71॥

प्रत्यहं भक्तियुक्तो यो देवीपूजामिमां पठेत् ।
वाग्वादिन्याः प्रसादाद्धि वत्सरेण कविर्भवेत् ॥72॥

॥ इति श्रीबालामानसपूजा स्तोत्रम् ॥

श्रीबाला–त्रिपुरसुन्दरी

कवचम्

रुद्रयामल तन्त्र के भैरव–भैरवी संवाद से समुद्भूत यह कवच भगवती बाला त्रिपुरसुन्दरी की कृपा का प्रसाद है। इसका समाश्रय साधक का आपदाओं और अभिचारादि बाधाओं से बचाने में सर्वथा समर्थ है।

श्रीभैरवी उवाच

देवदेव ! महादेव ! भक्तानां प्रीति–वर्द्धन !
सूचितं यत् त्वया देव्या कवचं कथयस्व मे ॥1॥

श्रीभैरव उवाच

शृणु देव ! प्रवक्ष्यामि कवचं देव–दुर्लभम्।
अप्रकाश्यं परं गुह्यं साधकाभीष्ट–सिद्धिदम् ॥2॥

विनियोगः

अस्य श्रीबाला–त्रिपुरसुन्दरी–कवचस्य श्रीदक्षिणामूर्तिः ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीबाला–त्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, चतुर्वर्गसाधने पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः

श्रीदक्षिणामूर्ति–ऋषये नमः शिरसि।
पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे।
श्रीबाला–त्रिपुरसुन्दरी–देवतायै नमो हृदि।
ऐं बीजाय नमो गुह्ये ।
सौः शक्तये नमो नाभौ।
क्लीं बीजाय नमः पादयोः।
चतुर्वर्ग–साधने पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यासः	अङ्ग-न्यासः
ऐं	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्लीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सौः	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ऐं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
क्लीं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय-वौषट्
सौः	करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यानम्

मुक्ता-शेखर-कुण्डलाङ्गद-मणि-ग्रैवेय-हारोर्मिका,
विद्योतद्-वलयादि-कङ्कण-कटि-सूत्रां स्फुरन्-नूपुराम्।
माणिक्योदर-बन्ध-कम्बु-कबरीमिन्दोः कलां बिभ्रतीं,
पाशं चाङ्कुश-पुस्तकाक्ष-वलयं दक्षोर्ध्व-बाह्वादितः ॥

मानसोपचारैः सम्पूज्य कवचं पठेत् -

कवचम्

ऐं वाग्भवं पातु शीर्षं क्लीं कामस्तु तथा हृदि।
सौः शक्ति-बीजं पातु नाभौ गुह्यौ च पादयोः ॥1॥

ऐं क्लीं सौः वदने पातु बाला मां सर्व-सिद्धये ।
हसकलह्रीं सौः पातु भैरवी कण्ठ-देशतः ॥2॥

सुन्दरी नाभि-देशेऽस्याच्छीर्षिका सकला सदा।
भ्रू-नासयोरन्तराले महा-त्रिपुर-सुन्दरी ॥3॥

ललाटे सुभगा पातु भगा मां कण्ठ-देशतः।
भगादेवी तु हृदये उदरे भग-सर्पिणी ॥4॥

भग-माला नाभि-देशे लिङ्गे पातु मनोभवा।
गुह्ये पातु महा-देवी राज-राजेश्वरी शिवा ॥5॥

चैतन्य-रूपिणी पातु पादयोर्जगदम्बिका।
नारायणी सर्व-गात्रे सर्व-कार्ये शुभङ्करी ॥6॥

ब्रह्माणी पातु मां पूर्वे दक्षिणे वैष्णवी तथा।
पश्चिमे पातु वाराही उत्तरे तु महेश्वरी ॥7॥

आग्नेय्यां पातु कौमारी महा-लक्ष्मीश्च नैर्ऋते।
वायव्यां पातु चामुण्डा इन्द्राणी पातु चेशके ॥8॥

जले पातु महा-माया पृथिव्यां सर्व-मङ्गला।
आकाशं पातु वरदा सर्वतो भुवनेश्वरी ॥9॥

इदं तु कवचं नाम देवानामपि दुर्लभम्।
पठेत् प्रातः समुत्थाय शुचिः प्रयत-मानसः ॥10॥

नाधयो व्याधयस्तस्य न भयं च क्वचिद् भवेत्।
न च मारी-भयं तस्य पातकानां भयं तथा ॥11॥

न दारिद्र्य-वशं गच्छेत् तिष्ठेन्मृत्यु-वशे न च।
गच्छेच्छिव-पुरे देवि! सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥12॥

इदं कवचमज्ञात्वा श्रीविद्यां यो जपेच्छिवे !
स वाप्नोति फलं तस्य प्राप्नुयाच्छस्त्र-घातनम् ॥13॥

॥ इति श्रीबालात्रिपुर-सुन्दरी कवचम् ॥

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी-कवचम्

परम रहस्यमय यह त्रिपुरसुन्दरी कवच साधकों के लिए उनकी रक्षार्थ भगवती द्वारा दिया गया वरदान है। जो इस कवच का नियम पूर्वक पाठ करता है वह समस्त आपदाओं से रक्षित होकर समस्त सिद्धियों को प्राप्त करता है।

श्रीईश्वर उवाच

शृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि कवचं सुन्दरी-प्रियम् ।
रहस्याति-रहस्यं च मन्त्र-रूपमिदं प्रिये ॥

श्रीपार्वत्युवाच

भगवन् ! सर्व-लोकेश! सर्व-लोकैक-वन्दित ।
गुह्याद्-गुह्य-तमं तत्त्वं श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी कवच-स्तोत्र-मन्त्रस्य श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। ऐं क-5 बीजं। क्लीं ह-6 कीलकं। सौःस-4 शक्तिः। सर्वा भीष्ट-सिद्धयर्थं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी कवच-स्तोत्र पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासं कृत्वा मूल-मन्त्रेण षडङ्ग-न्यासं कुर्यात्।

ध्यानम्

स-कुंकुम-विलेपनामलिक-चुम्बि-कस्तूरिकाम्,
स-मन्द-हसितेक्षणां स-शर-चाप-पाशांकुशाम्।
अशेष-जन-मोहिनीमरुण-माल्य-भूषाम्बरां,
जपा-कुसुम-भासुरां जप-विधौ स्मरेदम्बिकाम् ॥1॥

चतुर्भुजे! चन्द्र-कलावतंसे !
कुचोन्नते! कुंकुम-राग-शोणे !
पुण्ड्रेक्षु-पाशांकुश-पुष्प-बाण-
हस्ते ! नमस्ते जगदेक-मातः ॥2॥

मानसोपचारेण भगवतीं सम्पूज्य विधिना कवचं पठेत्-

कवचम्

ककारः पातु शीर्षं मे एकारः पातु फालके।
ईकारः पातु वक्त्रं मे लकारः कूर्प-युग्मके ॥1॥

ह्रींकारः पातु हृदयं वाग्भवश्च सदाऽवतु ।
हकारः पातु जठरं सकारो नाभि-देशके ॥2॥

ककारः पार्श्व-भागे च हकारः पातु पृष्ठके।
लकारश्च नितम्बे मे ह्रींकारः पातु मूलके ॥3॥

काम-राजः सदा पातु जठरादि-प्रदेश के।
सकारः पातु कट्यां में ककारः पातु लिङ्गके ॥4॥

लकारो जानुनी पातु ह्रीङ्कारो जङ्घ-युग्मके।
शक्ति-बीजं सदा पातु मूल-विद्या सदाऽवतु ॥5॥

त्रिपुरा मां सदा पातु त्रिपुरेशी च सर्वदा।
त्रिपुरा सुन्दरी पातु वसु-पत्रस्य देवता ॥6॥

त्रिपुरा-वासिनी पातु त्रिपुरा-श्रीः सदाऽवतु।
त्रिपुरा मालिनी पातु त्रिपुरा सिद्धिदाऽवतु ॥7॥

त्रिपुरा श्री तथा पातु पातु त्रिपुरा-भैरवी ।
अणिमाद्यास्तथा पांतु ब्राह्म्याद्याः पांतु मां सदा ॥8॥

नव-मुद्रास्तथा पान्तु कामाकर्षणि-पूर्विकाः ।
पान्तु मां षोडशारे तु अनङ्ग-कुसुमादिकाः ॥9॥

पान्तु मामष्ट-पत्रेषु सर्व-संक्षोभणादिकाः ।
पान्तु मां चक्र-कोणेषु सर्व-सिद्धि-प्रदायिका ॥10॥

पान्तु मां बाह्य-कोणेषु मध्यादि-कोणके तथा।
सर्वज्ञाद्यास्तथा पान्तु सर्वाभीष्ट-प्रपूरिकाः ॥11॥

वशिन्याद्यास्तथा पान्तु वसु-पत्रस्य देवताः ।
त्रिकोणस्यान्तरालेषु पान्तु मामायुधानि च ॥12॥

कामेश्वर्यादिकाः पान्तु त्रिकोणे कोण-संस्थिताः।
बिन्दु-चक्रे तथा पातु श्रीमत्-त्रिपुरसुन्दरी ॥13॥

इदं श्रीकवचं नित्यं त्रि-सन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
सर्व-सिद्धिमवाप्नोति सर्वाभीष्ट-फल-प्रदम् ॥14॥

॥ इति श्रीत्रिपुर-सुन्दरी कवचम् ॥

श्रीबाला-स्तोत्रम्

भगवती बाला के इस अत्यन्त गुह्य और श्रेष्ठ स्तोत्र का सायंकाल अथवा रात्रि में जो पाठ करता है वह पृथ्वी पर सार्वभौम नेता बनता हैं और परलोक में इन्द्रतुल्य पदवी प्राप्त करता है। इसकी गोपनीयता की रक्षा परम आवश्यक है।

श्रीभैरव उवाच

अधुना देव! बालाया स्तोत्रं वक्ष्यामि पार्वति।
पञ्चमांङ्गं रहस्यं मे श्रुत्वा गोप्यं प्रयत्नत: ॥

विनियोग:

अस्य श्रीबाला-त्रिपुरसुन्दरी-स्तोत्र-मन्त्रस्य श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषि:, पंक्तिश्छन्द:, श्रीबाला-त्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं बीजं, सौ: शक्ति:, क्लीं कीलकं, श्रीबाला-प्रीतये पाठे विनियोग:।

ऋष्यादिन्यास:

श्रीदक्षिणामूर्ति-ऋषये नम: शिरसि, पंक्तिश्छन्दसे नम: मुखे, श्रीबाला-त्रिपुरसन्दरी-देवतायै नमो हृदि, ऐं बीजाय नमो गुह्ये, सौ: शक्तये नमो नाभौ, क्लीं कीलकाय नम: पादयो:, श्रीबाला-प्रीतये पाठे विनियोगाय नम: सर्वाङ्गेषु।

ध्यानम्

अरुण-किरण-जालै रञ्जिताशावकाशा।
विधृत-जप-वटीका पुस्तकाभीति-हस्ता।
इतर-कर-वराढ्या फुल्ल-कह्लार-संस्था।
निवसतु हृदि बाला नित्य-कल्याण-शीला ॥

स्तोत्रम्

वाणीं जपेद् यस्त्रिपुरे ! भवान्या
बीजं निशीथे जड़-भाव-लीनः।
भवेत् स गीर्वाण-गुरोर्गरीयान्
गिरीश-पत्नि ! प्रभुतादि तस्य ॥1॥

कामेश्वरी ! त्र्यक्षरी काम-राजं
जपेद् दिनान्ते तव मन्त्र-राजम् ।
रम्भाऽपि जृम्भारि-सभां विहाय
भूमौ भजेत् तं कुल-दीक्षितं च ॥2॥

तार्तीयकं बीजमिदं जपेद् य-
स्त्रैलोक्य-मातस्त्रिपुरे ! पुरस्तात् ।
विधाय लीलां भुवने तथान्ते
निरामयं ब्रह्म-पदं प्रयाति ॥3॥

धरा-सद्म-त्रिवृत्ताष्ट-पत्र-षट्कोण-नागरे !
विन्दु-पीठेऽर्चयेद् बालां योऽसौ प्रान्ते शिवो भवेत् ॥4॥

इति मन्त्र-मयं स्तवं पठेत् य-
स्त्रिपुराया निशि वा निशावसाने
स भवेद् भुविसार्वभौम-
मौलिस्त्रिदिवे शक्र-समान-शौर्य-लक्ष्मी ॥5॥

इतीदं देवि ! बालाया स्तोत्रं मन्त्र-मयं परम् ।
अदातव्यमभक्तेभ्यो गोपनीयं स्व-योनि-वत् ॥6॥

॥इति श्रीबाला-त्रिपुरसुन्दरी-स्तोत्रम्॥

श्रीत्रिपुर–सुन्दरी वेद–सार–स्तवः

आदि शंकराचार्य भगवत्पाद रचित वेदपाद स्तव के अनन्तर यह वेदसारस्तव उपन्यस्त है। इसे श्रीविद्या स्तव मंजरी से संकलित किया गया है। भगवती स्वयं वेदों की सारभूता हैं, अतः उनका स्तवन वेदसारस्तवन ही कहा जाएगा।

मूलमन्त्रगर्भित इस स्तोत्र का पाठ करने वाले में भगवती का आवेश प्राप्त होता है और वह ईश्वरी का साक्षात् स्वरूप प्राप्त कर लेता है।

'क' स्तूरी–पङ्क–भास्वद्–गल–चलदमल–स्थूल–मुक्तावलीका,
ज्योत्स्ना शुद्धावदाता शशि–शिशु–मकुटालंकृता–ब्रह्म–पत्नी।
साहित्याम्भोज–भृङ्गी कवि–कुल–विनुता सात्विकीं वाग्–विभूतिं,
देयान्मे शुभ्र–वस्त्रा कर–चल–वलया वल्लकीं वादयन्ती ॥1॥

'ए' कान्ते योगि–वृन्दैः प्रशमित–करणैः क्षुत्–पिपासा–विमुक्तैः,
सानन्दं ध्यान–योगाद् विस–गुण–सदृशी दृश्यते चित्त–मध्ये।
या देवी हंस–रूपा भव–भय–हरणं साधकानां विधत्ते,
सा नित्यं नाद–रूपा त्रिभुवन–जननी मोदमाविष्करोतु ॥2॥

'ई' क्षित्री सृष्टि–काले त्रिभुवनमथ या तत्क्षणेऽनु–प्रविश्य,
स्थेमानं प्रापयन्ती निज–गुण–विभवैः सर्वथा व्याप्य विश्वम्।
संहर्त्री सर्व–भासां विलयन–समये स्वात्मनि स्व–प्रकाशा,
सा देवी कर्म–बन्धं मम भव–करणं नाशयत्यादि–शक्तिः ॥3॥

'ल'क्ष्या या चक्र–राजे नव–पुर–लसिते योगिनी–वृन्द–गुप्ते,
सौवर्णे शैल–शृङ्गे सुर–गण–रचिते तत्त्व–सोपान–युक्ते।
मन्त्रिण्या मेचकाङ्ग्या कुच–भर–नतया कोल–मुख्या च सार्धं,
साम्राज्ञी सा मदीया मद–गज–गमना दीर्घमायुस्तनोतु ॥4॥

'ह्रीं' काराम्भोज–भृङ्गी हय–मुख–विनुता हानि–वृद्ध्यादि–हीना,
हंसोऽहं मन्त्र–राज्ञी हरि–हय–वरदा हादि मन्त्रार्थ–रूपा।
हस्ते चिन्मुद्रिकाढ्या हत–बहु–दनुजा हस्ति–कृत्ति–प्रिया मे,
हार्दं शोकातिरेकं शमयतु ललिताधीश्वरी पाश–हस्ता ॥5॥

'ह' स्तेपङ्करुहाभे सरस–सरसिजं विभ्रती लोक–माता,
श्रीरोदन्वत्–सु–कन्या करि–वर–विनुता नित्य–पुष्टाब्ज–गेहा।
पद्माक्षी हेम–वर्णा मुर–रिपु–दयिता शेवधिः सम्पदां या,
सा मे दारिद्र्य–दोषं दमयतु करुणा–दृष्टि–पातैरजस्रम् ॥6॥

'स'च्चिद्–ब्रह्म–स्वरूपां सकल–गुण–युतां निर्गुणां निर्विकारां,
राग–द्वेषादि–हन्त्रीं रवि–शशि–नयनां राज्य–दान–प्रवीणाम्।
चत्वारिंशत्–त्रिकोणे चतुरधिक–समे चक्र–राजे लसन्तीं,
कामाक्षीं कामितानां वितरण–चतुरां चेतसा भावयामि ॥7॥

'क'न्दर्पे शान्त–दर्पे त्रिनयन–नयन–ज्योतिषा देव–वृन्दैः,
साशङ्कं साश्रु–पातं स–विनय–करुणां याचिता काम–पत्न्या।
या देवी दृष्टि–पातैः पुनरपि मदनं जीवयामास सद्यः,
सा नित्यं रोग–शान्त्यै प्रभवतु ललिताधीश्वरी चित्–प्रकाशा॥8॥

'ह'व्यैः कव्यैश्च सर्वैः श्रुति–चय विहितैः कर्मभिः कर्म–शीला,
ध्यानाद्यैरष्टभिश्च प्रशमित–कलुषा योगिनः पर्ण–भक्षाः।
यामेवानेक–रूपां प्रति–दिनमवनौ संश्रयन्ते विधिज्ञाः,
सा मे मोहान्धकारं बहु–भव–जनितं नाशयत्वादि–माता ॥9॥

'ल'क्ष्या मूल–त्रिकोणे गुरु–वर–करुणा–लेशतः काम–पीठे,
यस्या विश्वं समस्तं बहु–तर–विततं जायते कुण्डलिन्याः।
यस्याश्शक्ति–प्ररोहादविरलममृतं विन्दते योगि–वृन्दं,
तां वन्दे नाद–रूपां प्रणव–पद–मयीं प्राणिनां प्राण–दात्रीं ॥10॥

'ह्रीं'काराम्भोधि-लक्ष्मीं हिम-गिरि-तनयामीश्वरीमीश्वराणां,
ह्रीं-मन्त्राराध्य देवीं श्रुतिशतशिखरैः मृग्यमानां मृगाक्षीं।
ह्रीं मन्त्रान्तैस्त्रि-कूटैः स्थिर-तर-मतिभिर्धार्यमाणां ज्वलन्तीं,
ह्रीं ह्रीं ह्रींमित्यजस्त्रं हृदय-सरसिजे भावयेऽहं भवानीम् ॥11॥

'स'र्वेषां ध्यान-मात्रात् सवितुरुदरगा चोदयन्ती मनीषां,
सावित्री तत्-पदार्था शशि-युत-मुकुटा पञ्च-शीर्षा त्रि-नेत्रा।
हस्ताग्रैः शङ्ख-चक्राद्यखिल-जन-परित्राण-दक्षायुधानां,
विभ्राणा वृन्दमम्बा विशदयतु मतिं मामकीनां महेशी ॥12॥

'क'र्त्री लोकस्य लीला-विलसित-विधिना कारयित्री क्रियाणां,
भर्त्री स्वानु-प्रवेशाद् वियदनिल-मुखैः पञ्च-भूतैः स्व-सृष्टैः।
हर्त्री स्वेनैव धाम्ना पुनरपि विलये काल-रूपं दधाना,
हन्यादामूलमस्मत् -कलुष-भरमुमा भुक्ति-मुक्ति-प्रदात्री ॥13॥

'ल'क्ष्या या पुण्य-जालैर्गुरु-वर-चरणांभोज-सेवा-विशेषात्,
दृश्या स्वान्ते सुधीभिर्दर-दलित-महा-पद्म-कोशेन तुल्ये।
लक्षं जप्त्वाऽपि यस्या मनु-वरमणिमा-सिद्धिमन्तो महान्तः ,
सा नित्यं मामकीने हृदय-सरसिजे वासमङ्गी-करोतु ॥14॥

'ह्रीं' श्रीमें-मन्त्र-रूपा हरि-हर-विनुताऽगस्त्य-पत्नी-प्रदिष्टा,
हादिः काद्यर्ण-तत्त्वा सुर-पति-वरदा काल-राज-प्रदुष्टा।
दुष्टानां दानवानां मद-भर-हरणा दुःख-हन्त्री बुधानां,
साम्राज्ञी चक्र-राज्ञी प्रदिशतु कुशलं मह्यमोङ्काररूपा॥15॥

श्रीं-मन्त्रार्थ-स्वरूपाश्रित-जन-दुरित-ध्वान्त-हन्त्री शरण्या,
श्रौत-स्मार्त-क्रियाणामविकल फलदा काल-नेत्रस्य दाराः ।
श्रीचक्रान्तर्निषण्णा गुह-वर-जननी दुष्ट-हन्त्री वरेण्या,
श्रीमत्-सिंहासनेशीं प्रदिशतु विपुलां कीर्तिमानन्द-रूपा ॥16॥

॥ इति श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी वेद-सार-स्तवः ॥

श्री त्रिपुरामेधासूक्तम्

(जीवन में मेधा अर्थात् बुद्धि ही आवश्यक होती है। भगवती ललिता महात्रिपुरसुन्दरी बुद्धि की देवी हैं। यह मेधासूक्त वैदिक है। इसके नित्यपाठ से मेधाका विकास होता है।)

मेधा देवी जुषमाणा न आगाद्विश्वाची भद्रा सुमनस्य माना।
त्वया जुष्टानुदमाना दुरुक्तान् बृहद्वदेमविदथे सुधीराः ।

त्वया जुष्ट ऋषिर्भवति देवि त्वया ब्रह्मागतश्रीरुतत्वया ।
त्वया जुष्टश्चित्रं विन्दते वसुसानो जुषस्व द्रविणो न मेधे।

मेधां म इन्द्रो दधातु मेधां देवी सरस्वती । मेधां मे
अश्विनावुभावाधत्तां पुष्करस्रजा। अप्सरासु च या मेधा
गन्धर्वेषु च यन्मनः । दैवीं मेधा सरस्वती सा मां मेधा
सुरभिर्जुषतां (गुं) स्वाहा।

आमां मेधा सुरभिर्विश्वरूपा हिरण्यवर्णा जगती जगम्या।
ऊर्जस्वती पयसा पिन्वमाना सामां मेधा सुप्रतीका जुषन्ताम् ।

मयि मेधां मयि प्रजां मय्यग्निस्तेजो दधातु मयि मेधां मयि
प्रजां मयीन्द्र इन्द्रियं दधातु मयि मेधां मयि प्रजां मयि सूर्यो
भ्राजो दधातु।

॥इति श्रीत्रिपुरामेधासूक्तम्॥

परदेवी–सूक्तम्

(अत्यन्त गोपनीय एवं गुरुगम्य परदेवी सूक्तका नित्यपाठ करने वाला सर्वसिद्धियों का स्वामी, सर्वत्र विजयी तथा सर्वलोकवशंकर हो जाता है। तीन वर्षों तक जो इस सूक्त का पाठ करता है, वह भगवती का साक्षात् दर्शन प्राप्त करता है। सर्वत्र विजय के हेतु इस सूक्त को सद्गुरुदेव की शरण में जाकर प्रयत्नपूर्वक प्रणिपात व सेवा से प्राप्त करना चाहिए।)

विनियोग:

ॐ अस्य श्रीपरदेवतासूक्तमालामन्त्रस्य मार्कण्डेयसुमेधादिऋषय: गायत्र्यादिनानाविधानिच्छन्दांसि, त्रिशक्तिरुपिणी चण्डिकादेवता, ऐं बीजं सौ: शक्ति: क्लीं कीलकं चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धये जपे विनियोग:।

ध्यानम्

योगाढ्यामरकायनिर्गतमहत्तेज: समुत्पत्तिनी,
भास्वतपूर्णशशांकचारुवदना नीलोल्लसद्भ्रूलता ॥
गौरोत्तुंगकुचद्वया तदुपरिस्फूर्जप्रभामण्डला
बन्धूकारुणकायकान्तिरवताच्छ्री चण्डिका सर्वत: ॥

सूक्तम

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें ह्सौ: स्हौ: जय जय महालक्ष्मि जगदाद्यबीजे सुरासुरत्रिभुवननिधाने दयाङ्कुरे सर्वदेवतेजोरूपिणि महामहामहिमे महामहारूपिणि महामहामाये महामायास्वरूपिणि विरिञ्चिसंस्तुते विधिवरदे चिदानन्दे (विद्यानन्दे) विष्णुदेहावृते महामोहमोहिनि

मधुकैटभजिंघासिनि नित्यवरदानतत्परे महासुधाब्धिवासिनि
महामहत्तेजोधारिणि सर्वाधारे सर्वकारणकारणे
अचिन्त्यरूपे इन्द्रादिनिखिलनिर्जरसेविते सामगानगायिनि
पूर्णोदयकारिणि विजये जयन्ति अपराजिते सर्वसुन्दरि
रक्तांशुके सूर्यकोटिसंकाशे चन्द्रकोटिसुशीतले
अग्निकोटिदहनशीले यमकोटिक्रूरे वायुकोटिवहनसुशीले
ओङ्कारनादचिद्रूपे निगमागममार्गदायिनी महिषासुरनिर्दलिनि
धूम्रलोचनवधपरायणे चण्डमुण्डादिशिरश्छेदिनि
रक्तबीजादिरुधिरशोषिणि रक्तपानप्रिये
महायोगिनिभूतवेताल भैरवादितुष्टिविधायिनि
शुम्भनिशुम्भशिरश्छेदिनि निखिलासुरबलखादिनि
त्रिदशराज्यदायिनि सर्वस्त्रीरत्नरूपिणी दिव्यदेहे निर्गुणे
सदसद्रूपधारिणि स्कन्दवरदे (सुरवरदे) भक्तत्राणतत्परे
वरवरदे सहस्रारे दशशताक्षरे अयुताक्षरे
सप्तकोटिचामुण्डारूपिणि नवकोटिकात्यायनिरूपिणि
अनेकशक्तया लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपे इन्द्राणि ब्रह्माणि रुद्राणि
कौमारि वैष्णवि वाराहि शिवदूति ईशानि भीमे भ्रामरि
नारसिंहि त्रयस्त्रिंशत्कोटिदैवते अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायिके
चतुरशीति–लक्षमुनिजनसंस्तुते सप्तकोटिमन्त्रस्वरूपे
महाकालरात्रिप्रकाशे कलाकाष्ठादिरूपिणि
चतुर्दशभुवनाविभावकारिणि गरुडगामिनि ओङ्कार–क्रौङ्कार–
ह्रौङ्कार–ह्रीङ्कार–श्रीङ्कार–छ्रौङ्कार–जूङ्कार–सौङ्कार–ऐङ्कार–
क्लीङ्कार–ह्रींकारक्लीङ्कार–ह्रींकारक्लौङ्कार–हौङ्कार–नानाबीज–
मन्त्रराजविराजितसकल–सुन्दरीगणसेवितचरणारविन्दे श्री–
महारात्रिपुरसुन्दरिकामेशदयिते करुणारसकल्लोलिनि
कल्पवृक्षाधः स्थिते चिन्तामणिद्वीपावस्थित
मणिमन्दिरनिवासे चापिनि खड्गिनि चक्रिणि गदिनि

शङ्खिनि पद्मिनि निखिलभैरवाधिपते
समस्तयोगिनीचक्रपरिवृते कालि कंकालि तारे तोतुले सुतारे
ज्वालामुखि छिन्नमस्तके भुवनेश्वरि त्रिपुरे त्रिलोकिजननि
विष्णुवक्षःस्थलालङ्कार–कारिणि अजिते अमिते अपराजिते
अनुपमचरिते गर्भवासादि–दुःखापहारिणि
मुक्तिक्षेत्राधिष्ठायिनि शिवे शान्ति कुमारि देवि
देवीसूक्तसंस्तुते महाकालि महालक्ष्मि महासरस्वति
त्रयीविग्रहे प्रसीद प्रसीद सर्वमनोरथान् पूरय पूरय
सर्वारिष्टविघ्नांश्छेदय छेदय सर्वग्रहपीडाज्वरोग्रभयं
विध्वंसय विध्वंसय सद्यस्त्रिभुवनजीवजातं वशमानय
वशमानय मोक्षमार्गं दर्शय दर्शय ज्ञानमार्गं प्रकाशय
प्रकाशय अज्ञानतमो निरसय निरसय धनधान्याभिवृद्धिं
कुरु कुरु सर्वकल्याणानि कल्पय कल्पय मां रक्ष रक्ष मम
वज्रशरीरं साधय साधय ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे
स्वाहा नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा।

परं देव्या इदं सूक्तं यः पठेत्प्रयतो नरः ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत् ॥1॥

संग्रामेषु जयेच्छत्रून् मतङ्गानिव केसरी।
वशयेन्निखिलान्लोकान् विशेषेण महीपतीन् ॥2॥

त्रिकालं च पठेन्नित्यं देव्याः सूक्तमिदं परम् ।
तस्य विघ्नाः प्रलीयन्ते ग्रहपीडाश्च दारुणाः ॥3॥

ज्वरादिरोगशमनं परकृत्यानिवारणाम्।
पराभिचारशमनं तीव्रदारिद्र्यनाशनम् ॥4॥

परकल्याणनिलयं देव्यां सन्तोषकारकम् ।
सहस्त्रावृत्तितो देवि मनोरथे च सिद्धिदम् ॥5॥

द्विसहस्त्रावृत्तिपाठाल्पसर्वसंकष्टनाशनम्।
त्रिसहस्त्रावृत्तितस्तु वशकृद्राजयोषिताम् ॥6॥

शतत्रयं पठेद्यतु वर्षत्रयमतन्द्रितः ।
स पश्येच्चण्डिकां साक्षाद् वरदानकृतोद्यमाम् ॥7॥

इदं रहस्यं परमं गोपनीयं प्रयत्नतः ।
न वाच्यं कस्यचिद्देवि निधानमिव सुन्दरि ॥8॥

॥ इति सिद्धिडामर तन्त्रे परदेवी–सूक्तम् सम्पूर्णम् ॥

श्रीसूक्तम्

'श्रीसूक्तम्' में श्रीयन्त्रका अभिषेक किया जाता है। अन्य भी अनेकों पुरश्चरणात्मक अनुष्ठान किए जाते हैं। 'हिरण्यवर्णाम्' आदि पन्द्रह ऋचाओं को त्रिपुराप्रीतिकारक बतलाया गया है। इसकी ऋचाओं को वाग्बीज से सम्पुटित करके पाठ करने से वाक्पतित्व, श्रीबीजसम्पुटित से देवतात्मा तथा कामबीज के सम्पुटीकरण से जगद्वशीकरण होता है। पूजा करने से अशक्त होने पर इसके तीन पाठ कर लेने से पूजा का फल मिलता है। किसी भी त्रिपुरोपासक को इसका नित्यपाठ करना चाहिए, इससे अधिक पुण्यप्रद और कोई पाठ नहीं है। इसके जान लेने से समस्त पाप वैसे ही नष्ट हो जाते हैं जैसे कच्ची मिट्टी के घड़े पर पानी डालने से घड़ा नष्ट हो जाता है। षोडश सहस्त्र घृत से छिन्नधारा पाठ विशेष फलदायक है।

ॐ हिरण्य-वर्णां हरिणीं सुवर्ण-रजत-स्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥1॥

तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनप-गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥2॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्ति-नाद-प्रबोधिनीम ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीजुषताम् ॥3॥

कां सोस्मितां हिरण्य-प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥4॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनीमीं शरणमहं प्रपद्ये ऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥5॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु याअन्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥6॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥7॥

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥8॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥9॥

मनसाः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥10॥

कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥11॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत बस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥12॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥13॥

आर्द्रां यःकरिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥14॥

तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनप-गामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥15॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
श्रियः पञ्चदर्शर्चञ्च श्रीकामः सततं जपेत् ॥16॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥17॥

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमश्विनौ ॥18॥

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥19॥

न क्रोधे न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत् ॥20॥

पद्मानने पद्म उरु पद्मानि पद्मसम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥21॥

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
विष्णुप्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युत-वल्लभाम् ॥2॥

महालक्ष्मीं च विद्महे विष्णुपत्नीं च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥23॥

पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ॥24॥

आनन्दः कर्दमः श्रीदः चिक्लीत इति विश्रुताः ।
ऋषयः श्रियपुत्राश्च मयि श्रीर्देवि देवता ॥25॥

ऋण–रोगादि–दारिद्र्यं पाप–क्षुद्रापमृत्यवः ।
भय–शोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥26॥

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते ।
धान्यंधनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥27॥

॥ इति श्रीसूक्तम् ॥

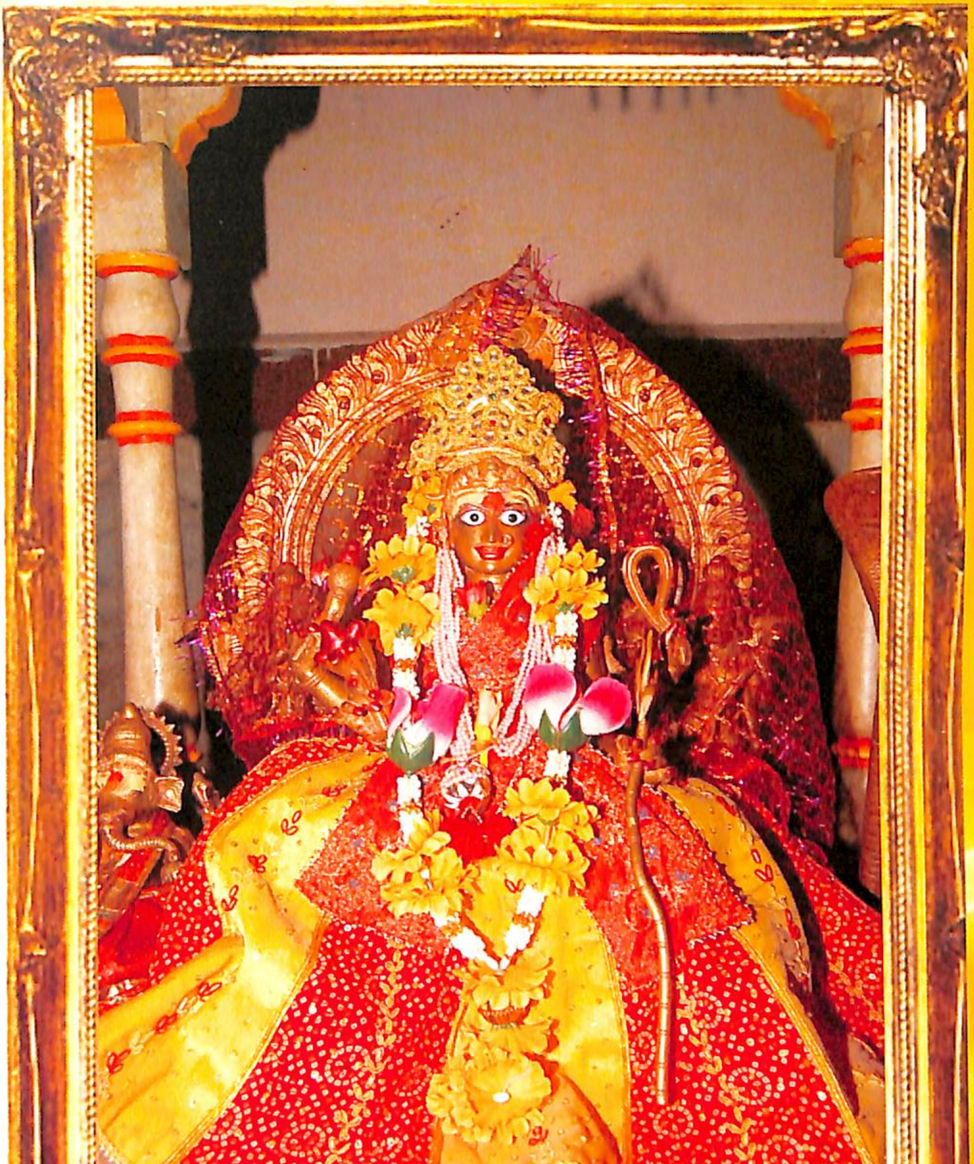

श्री ललिताम्बा महात्रिपुरसुन्दरी

मां के श्री चरणों में सादर समर्पित

डा० एम० पी० अग्रवाल, पवन अग्रवाल
आलोक अग्रवाल, विकास अग्रवाल

श्री लक्ष्मी कॉट्सन लिमिटेड

19-एक्स-1, कृष्णापुरम्, जी०टी० रोड, कानपुर -07 उत्तर प्रदेश, भारत
फोन : 0512-2401492,2402733 फैक्स : 91-512-2402339
ईमेल : shree@slcl.in वेबसाइट : www.slcl.in

SVB
S.No.
Subje
Sub.